हिंदी

बालभारती

छठी कक्षा

नि:शुल्क वितरण के लिए

Tele MANAS
National Tele Mental Health Programme
14416

टेली मानस हेल्पलाइन

Tele MANAS (Tele Mental Health Assistance and Networking Across States)

(१४४१६/१८००-८९-१४४१६)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना 'टेली मानस' महाराष्ट्र राज्य में अक्तूबर २०२२ से कार्यान्वित की गई है। 'टेली मानस' कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्पलाइन नंबर १४४१६ द्वारा निःशुल्क एकात्मिक और सर्वसमावेशक मानसिक स्वास्थ्य सेवा २४x७ प्रदान की जाती है। इसमें विविध मानसिक समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा उपचार और समुपदेशन किया जाता है। 'टेली मानस' हेल्पलाइन पर आपके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णतः गोपनीय रखा जाता है। इस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याएँ हेल्प लाइन नंबर पर कॉल करके निःसंकोच बताएँ तथा मन में उत्पन्न किसी भी शंका के संबंध में पूछकर उसके निराकरण और अपनी समस्या से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करें और अन्य लोगों को भी इस सुविधा का लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करें।

मनोदर्पण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत जुलाई २०२० से मनोदर्पण (८४४८४४०६३२) हेल्पलाइन की निःशुल्क दूरध्वनि सेवा आरंभ की गई है। यह सुविधा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से संध्या ८ बजे की कालावधि में उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक हेल्पलाइन पर संपर्क करके मार्गदर्शन एवं समुपदेशन प्राप्त कर सकते हैं।

प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद, महाराष्ट्र, पुणे निर्मित पाठ्‌यचर्या एवं पाठ्‌यक्रम के अनुसार तैयार करके उनके द्‌वारा पाठ्‌यपुस्तक की जाँच की गई है। शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.०४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. १९.०५.२०२६ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्‌यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

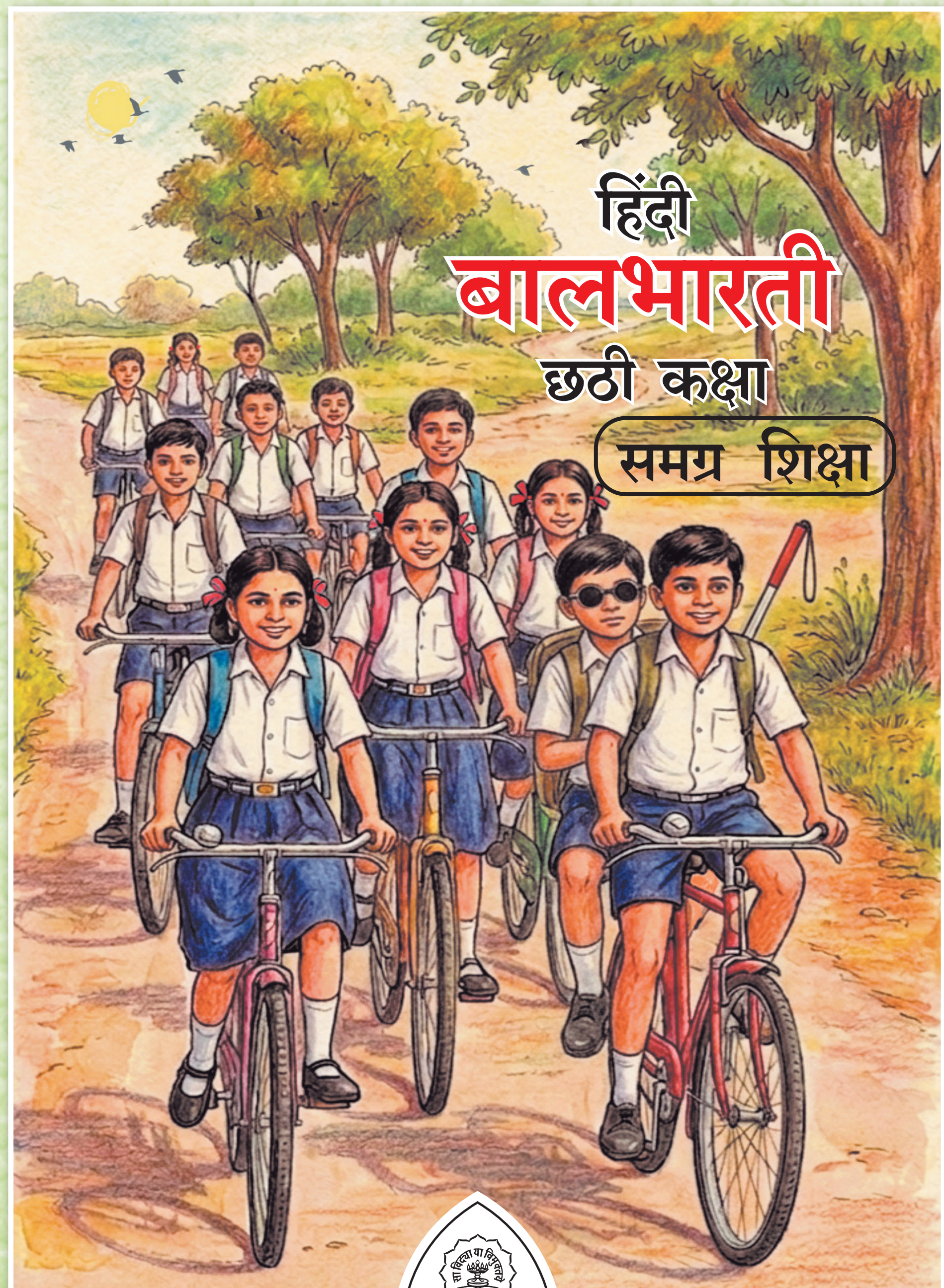

महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-४११००४

चौखट में दिए गए Q.R.Code को स्मार्ट फोन द्‌वारा स्कैन करने पर तुम्हें डिजिटल पाठ्‌यपुस्तक एवं पाठ्‌यपुस्तक में दिए घटकों से संबंधित दृक, श्राव्य एवं दृकश्राव्य रूप में अध्ययन-अध्यापन सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति : २०२६

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११ ००४.

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

✻ हिंदी समिति सदस्य ✻

श्री रामहित यादव, अध्यक्ष

डॉ. प्रमोद शुक्ल (निमंत्रित सदस्य)	प्रा. अनुया दळवी (निमंत्रित सदस्य)
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय (सदस्य)	श्रीमती अंजू बतुल (सदस्य)
सौ. सुवर्णा कऱ्हाडकर (सदस्य)	प्रा. डॉ. विद्युलता पांढरे (सदस्य)
श्री नितीन कोलते (सदस्य)	डॉ. गिरीशसिंह पटेल (सदस्य)
श्री संचित कांबळे (सदस्य)	सौ. प्राची तोडणकर (सदस्य)
डॉ. भास्कर राठोड (सदस्य)	श्रीमती ज्योति शर्मा (सदस्य)
डॉ. रमेश यादव (सदस्य)	श्रीमती मंगला जोशी (सदस्य)
प्रा. सुशील भोंग (सदस्य)	श्री गोरख जाधव (सदस्य)
डॉ. भारती श्रीवास्तव (सदस्य)	श्री सागर कपूर (सदस्य)
प्रा. मैनोद्दीन मुल्ला (निमंत्रित सदस्य)	श्री ता.का. सूर्यवंशी (निमंत्रित सदस्य)

डॉ. संदिप मुळे, अभ्यासक्रम समन्वयक

डॉ. अलका पोतदार, सदस्य सचिव

✻ संयोजक ✻

डॉ. अलका पोतदार

विशेषाधिकारी हिंदी भाषा (वि.का.)

पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : श्री भट्‌टु बागले

चित्रकार : सौ. शिल्पा दीक्षित,
श्री लक्ष्मीकांत वि. काळे

अक्षरांकन : मुद्रा विभाग,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज : ७० जी.एस.एम. क्रिमवोव्ह

मुदणादेश :

मुद्रक :

✻ गुणवत्ता समीक्षक ✻

श्री संजय भारद्वाज	(गुणवत्ता परीक्षक)
प्रा. शशि निघोजकर	(गुणवत्ता परीक्षक)
श्रीमती दिव्या वर्मा नायर	(CWSN तज्ञ)
एड. संदीप कुऱ्हाडे	(विधि तज्ञ)

✻ निर्मिति ✻

श्रीमती मिताली शितप

प्र. मुख्य निर्मिति अधिकारी

श्री राजेंद्र पांडलोसकर

निर्मिति अधिकारी

✻ प्रकाशक ✻

श्री हेमंत बाबर

प्र. नियंत्रक

पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई-२५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

भारत का संविधान

भाग ४ क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ५१ क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें;
(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें;
(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें;
(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें;
(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर अधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;
(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझें और उसका परिरक्षण करें;
(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखें;
(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;
(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें;
(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू लें;
(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति , बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

राष्ट्रगान

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय बाल मित्रो!

नये शैक्षणिक वर्ष का आरंभ हो गया है। छठी कक्षा हिंदी बालभारती की यह पाठ्‌यपुस्तक अपने हाथों में प्राप्त करके तुम्हें निश्चित ही आनंद हो रहा होगा। पाठ्‌यपुस्तक की सभी कविताओं को बोलना और उनका गायन करना अवश्य अच्छा लगेगा। विविध पाठ एवं जानकारीपूर्ण लेख पढ़कर तुम्हारे पूर्वानुभव स्मरण हो आएँगे। पाठ्‌यपुस्तक के पाठ और कविताएँ समझते हुए तुम्हारी कल्पनाशक्ति को गति प्राप्त होगी। प्रत्येक पाठ एवं कविताओं में दिए गए रंगीन, आकर्षक एवं प्रसंगानुरुप चित्रों के माध्यम से पाठ समझने में दिए गए चित्र तुम्हें निश्चित ही पसंद आएँगे। यह पाठ्‌यपुस्तक अध्ययन-अभ्यास के लिए होने के साथ-ही-साथ इससे तुम्हारी विचारशक्ति एवं कृति करने की क्षमता भी अधिक-से-अधिक विकसित होगी।

हिंदी बालभारती छठी कक्षा की इस पुस्तक में चित्र वर्णन, चित्र संयोजन, कविता, गीत, दोहे, गजल, पहेलियाँ, लघुकथा, कहानी, निबंध, पत्र, एकांकी, साक्षात्कार, विज्ञापन आदि विविध प्रकार की कृतियों को तुम्हें नये ढंग से सीखना है। पाठ्‌यपुस्तक के आशय के अनुरूप दिए गए विविध चित्रों का निरीक्षण करके अपने मित्रों/सहेलियों से चर्चा/बातचीत करनी है। यहाँ दिए गए पाठ के स्वाध्यायों में भी विविधता है। ये स्वाध्याय केवल आशयों या पाठों पर आधारित न होकर पाठ के आगे की भी बात करते हैं। इस तरह की कृतियों द्‌वारा हिंदी भाषा की तुम्हारी पढ़ाई अधिक आनंददायी एवं मनोरंजक होने वाली है।

पाठ्‌यपुस्तक के विविधतापूर्ण पाठों द्‌वारा तुम्हें नई-नई पाठ्‌यसामग्री का आकलन करना है। 'यह भी जानो' के माध्यम से व्याकरण की भी जानकारी प्राप्त होगी। पाठों में आए विविध विषय तुम्हारे भाषाई ज्ञान में अधिकाधिक वृद्‌धि करने के साथ भरपूर आनंद भी देने वाले हैं।

कविताएँ और विभिन्न पाठों में दिए गए स्वाध्याय भी तुम्हारी विचारशक्ति को गति देने वाले हैं। शब्द संपत्ति पर आधारित शब्द सौरभ, विविध पहेलियों, प्रश्नावलियों एवं कृतियों के माध्यम से तुम अनेक नये शब्द सीख सकोगे। इससे तुम्हारी शब्दसंपत्ति और भाषाई कौशलों में निश्चित ही वृद्‌धि होगी।

इन सभी कृतियों को करने से तुम शुद्‌ध, निर्दोष और प्रभावी हिंदी भाषा बोलना, पढ़ना और लिखना सीखोगे। घर, विद्‌यालय, खेल में अथवा मित्रों से संवाद करते हुए गर्व के साथ हिंदी भाषा का प्रयोग करोगे। बालमित्रो, इस पाठ्‌यपुस्तक के साथ मित्रता करो। मन लगाकर पढ़ो, समझो, बोलो, लिखो और आनंद से सीखो। तुम्हारी शैक्षणिक यात्रा और हिंदी भाषा की प्रगति के लिए तुम्हें मन से शुभेच्छा!

(अनुराधा ओक)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

पुणे

दिनांक : १ मई २०२६

भारतीय सौर दिनांक : वैशाख ११, शके १९४८, महाराष्ट्र दिन

भाषा संबंधी अध्ययन निष्पत्ति : प्रथम भाषा हिंदी (छठी)

यह अपेक्षा है कि छठी कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित अध्ययन निष्पत्तियाँ विकसित हों।

क्षमता	अध्ययन निष्पत्ति	सीखने के प्रतिफल	पृष्ठ क्रमांक
C-1.1	1.1.1	सुनी या पढ़ी गई खबरों के मुख्य मुद्दे और सारांश बताता है।	८, १६, २३, ४१, ४२, ४३, ७९, ८३, ८९
	1.1.2	विज्ञापन को समझकर पढ़ता है और विज्ञापन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देता है।	४२, ४३, ८८, ८९, ९०
C-1.2		विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार सुनता है और साक्षात्कारों की योजना और उपयोजन भी करता है।	१३, ७५, ७८,१००
	1.2.1	परिचित लोगों के साक्षात्कार सुनता है। उनके साक्षात्कारों की योजना बनाता है और उनका उपयोजन करता है।	५७, ७५, ७८, ९८, १००, १०२
C-1.3		उचित भाषा का उपयोग करके (सामाजिक अनुभवों के बारे में गहन प्रश्न पूछने की क्षमता निर्माण करता है। (मुक्तोत्तरी प्रश्न, औपचारिक - अनौपचारिक, विषय वस्तु आधारित प्रश्न)।	६, २९, ३३, ४२, ४७, ५७, ७२, ८१, ८३
	1.3.1	उपयुक्त भाषा का उपयोग करते हुए विषय वस्तु पर आधारित सामाजिक अनुभवों के बारे में अनौपचारिक और औपचारिक प्रश्न पूछता है।	१३, १८, २१, ३९, ४९, ७७, ८२, ८९, ९५
C-1.4		उचित शैली का उपयोग करते हुए विविध प्रकार के पत्र, निबंध और वृत्तांत लेखन विभिन्न पाठकों के लिए लिखता है।	२२, २३, २५, ५०, ९५
	1.4.1	उचित शैली का उपयोग करते हुए विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनौपचारिक पत्र, वर्णनात्मक निबंध और वृत्तांत लिखता है।	१२, १३, १४, १६, १७, २६, ३०, ४०, ४३, ५०, ५८, ६९, ८१, ९१, ९५, १०२
C-1.5		विभिन्न दर्शकों और उद्देश्यों के लिए ऑडियो विज्युअल (दृश्य, दृक-श्रव्य) दोनों के लिए सामग्री बनाता है।	४७, ७
	1.5.1	विषय और संदर्भ के अनुसार दृक, श्रव्य और दृक-श्रव्य के लिए घोषवाक्य, संदेश और संवाद लेखन करता है।	१, ८, १०, ११, १८, २९, ३४, ४०, ५०, ५१, ६६, ६८, ७४, ७८, ८८, ८९, १०२
C-2.1		विभिन्न संस्कृतियों और विविध कालखंडों के साहित्य के विभिन्न रूपों (गद्य, पद्य) और लेखन शैलियों (कथात्मक : व्याख्यात्मक-विवेचनात्मक आदि) को पहचानता और उनका रसास्वाद लेता है।	४, ६, ११, २१, २५, ४९, ६२, ६४, ७०, ७२
	2.1.1	विभिन्न संस्कृतियों और विविध कालखंडों की विभिन्न बोलियों, लोक साहित्य (लोक साहित्य कथात्मक, व्याख्यात्मक-विवेचनात्मक) को पहचानता है।	२, ३, २१, ४४, ४५, ४७, ४८, ४९, ५२, ५४, ५६, ५७, ७७, ८२, ८५
C-2.2		उपमा, रूपक, मानवीकरण, अतिशयोक्ति, अनुप्रास आदि अलंकार, मुहावरे, कहावतें, साथ-ही-साथ पहेलियाँ आदि भाषा के विभिन्न तत्वों को पढ़ते समय ध्यान में रखता है और उनका लेखन में प्रयोग करता है।	१९, ३२, ३३, ७०
	2.2.1	तुकांत, यमक, अनुप्रास और श्लेष अलंकार की पहचान करता है।	४, ७, ३२, ३४, ६३, ८५, ९६, १००, १०१
	2.2.2	पाठ में दी गईं कहावतों और मुहावरों का अर्थ बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग करता है तथा विभिन्न पहेलियाँ हल करता है।	१८, २६, ३१, ३३, ३४, ४७, ४९, ५९, ७३, ७४, ९५, ९९, १०१
C- 2.3		भाषण और लेखन के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के विभिन्न पहलुओं पर अपनी आलोचनाओं और विचारों को व्यक्त करता है।	१, ६, ११, १३, २१, २२, २५, २९, ३१, ३९, ४९, ५४, ५७, ५८, ६०, ६८, ६९, ७२, ७७, ७८, ८२, ८४, ९८
	2.3.1	अभिव्यक्ति - घर और पास-पड़ोस में मनाए जाने वाले त्योहारों, उत्सवों, विभिन्न सामाजिक त्योहारों और समारोहों की भाषाई अभिव्यक्तियों, सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत के बारे में बताता है।	२, ३, ७, ४२, ५१, ५२, ५६, ६५, ७७, ८३, ८६, ९१, ९४, ९५, १०१

C-3.1		साहित्य की विभिन्न विधाएँ पढ़ते वक्त वाक्य रचना, विरामचिह्न, काल, लिंग और शब्दभेद जैसे मूलभूत भाषाई पहलू ध्यान में लेता है और लेखन में उनका उपयोग करता है।	१९, २२, २३, २७, २८, ६१, ६२, ७७, ९७
	3.1.1	संज्ञा, संज्ञा के भेद, सर्वनाम, सर्वनाम के भेद, विशेषण और विशेष्य, विशेषण के भेद, क्रिया और क्रिया के भेद, शुद्ध लेखन के नियम या व्याकरण के घटकों की जानकारी लेता है एवं उनका लेखन में उचित उपयोग करता है।	८, १२, १५, १९, २२, २३, २६, २८, ३०, ३५, ३८, ४०, ४३, ४५, ४६, ४८, ५०, ५९, ६१, ६८, ७० ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८१, ८२, ८३, ९३, ९७, १००, १०१, १०२
C-3.2		साहित्य की विधाएँ पद्य (कविता), गद्य (ललित निबंध, कथा, एकांकी, यात्रावर्णन, प्रहसन आदि), उनकी विशेषता, भिन्नता, शैली जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे समझता है।	१९, २५, ३५, ५७, ७५, ८६, ९४, ९८, १००, १०१
	3.2.1	गद्य और पद्य (कथा और कविता)- जैसी साहित्यिक विधाओं की विशेषताएँ, शैली, महत्वपूर्ण मुद्दे जानता/पहचानता है।	४, ६, ८, ११, १२, १६, १७, २२, २३, २५, २७, ३३, ४०, ४७, ५०, ५६, ६०, ६२, ६८, ७०, ७२, ७३, ७४, ७५, ८२, ८४, ८७, ९६, ९९, १००, १०१
C-3.3		उचित शैली और भाषा का प्रयोग करके गद्य-पद्य लिखता है।	६, ११, २२, ४०, ६५, ८६, ९८, १००
	3.3.1	अपनी भाषा में कथा-कविता लिखता है।	७, १२, ३९, ६१, ६९, ७४, ८७, ९५, १००, १०१, १०२
C-4.1		विभिन्न शैलियों की काल्पनिक और वास्तवदर्शी पुस्तकें पढ़ता है, इनपर प्रतिक्रिया देता है और समीक्षा करता है।	६, ३०
	4.1.1	विभिन्न साहित्य के प्रकारों की पुस्तकें पढ़कर सारांश बताता और लिखता है।	७, १३, १८, २२, २६, ३०, ३४, ४०, ४८, ५०, ५३, ५७, ६१, ६५, ७४, ७८, ८६, ८७, ९०, १००, १०१, १०२
C-4.2		प्रकल्प तथा अन्य उपक्रमों में संदर्भ पुस्तकें तथा विविध स्रोतों का प्रभावी उपयोग करता है।	५७, ६१, १०१
	4.2.1	प्रकल्पादि उपक्रमों के लिए शिक्षकों की सहायता से संदर्भ साहित्य ढूँढ़ता है/खोजता है।	७, १७, १८, २९, ३०, ३४, ४३, ५०, ६५, ७४, ७८, ८६, ८७, ९९, १०१
C-4.3		समाचारपत्र, विविध पत्रिकाओं से आस-पास की गतिविधियों को पढ़ने में रुचि दर्शाता है, उसपर चर्चा करता है।	२६, ४२, ८२, ८३
	4.3.1	विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आई सामाजिक घटनाओं को पढ़कर अपने विचार व्यक्त करता है।	३, ३९, ४१, ५३, ८२, ९४
C-5.1		भाषा की वर्णमाला, ध्वनि, लिपि, स्वर और व्यंजनों की संख्या, इनके आपसी संबंध और उनके उपयोग के महत्वपूर्ण मुद्दे समझता है।	५, ७, २२,
	5.1.1	भाषा की वर्णमाला के स्वर, व्यंजन, उच्चारण के बारे में बुनियादी जानकारी देता है।	५, ६, ७, २०, २२, २४, २५, २७, ४६, ६८, ९०, ९३, ९६, ९९, १०२
C-5.2		भाषण तथा लेखन अधिक रोचक और आनंददायी बनाने के लिए भाषा के वाक्य विन्यास में तुकबंदी, अनुप्रास और शब्द खेल का उपयोग करता है।	७, ६५
	5.2.1	भाषण अधिक रोचक और आनंददायी बनाने के लिए भाषा में वाक्य विन्यास, तुकबंदी, अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग करता है।	२२, ३४, ५७, ६५
C-5.3		भाषा के प्रमुख शब्द खेलों से परिचित होता है। उदा. विलोम पद (वाक्य वही रहता है, चाहे शुरू से पढ़े या अंत से। उदा. रजाबाजार, डालडा।) अक्षरों को उलटकर नये शब्द तैयार करना (पेलिन्ड्रोम), चुटकुला, अंताक्षरी, विभिन्न प्रकार की शब्द पहेलियाँ और शब्द खेल (दिए गए शब्दों से अलग- अलग शब्द) तैयार करता है।	७, १३, २९, ३४, ४८, ५०, ६०, ६९, ७४, ८७, ९१, ९४, १०२
	5.3.1	विभिन्न भाषाई खेलों से परिचित होता है। (जैसे : चुटकुला, शब्दांश की अदला-बदली कर नये शब्द निर्माण करता है।	७, १८, २८, ४३, ५७, ६९, ८३, ९५, १०२
C-5.4		नये भाषाई खेल स्वयं तैयार करने की कोशिश करता है।	९९
	5.4.1	सरल शब्द पहेली, शब्द खेल स्वयं तैयार करता है।	३४, ७४, ७६, ९९

दो शब्द

प्रिय शिक्षक/अभिभावक मित्रो !

यह पाठ्यपुस्तक विद्‌यार्थियों के पूर्व ज्ञान को ध्यान में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजन विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है। पाठ्यपुस्तक को स्तरीय बनाने हेतु इसे दो भागों में विभाजित करते हुए इसका क्रम 'सरल से कठिन' की ओर रखा गया है। यहाँ भाषा कौशलों के विकास के साथ-साथ अध्ययन और अध्यापन कौशलों पर विशेष बल दिया गया है। इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

पाठ्यपुस्तक में क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध 'अध्ययन निष्पत्ति' पर आधारित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय, उपक्रम और प्रकल्प दिए गए हैं। विद्‌यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, गीत, कहानी, निबंध, साक्षात्कार, संवाद आदि विविध विधाओं एवं विषयों का समावेश किया गया है। इसमें 'सुनो और चर्चा करो', 'पढ़ो, सोचो और बढ़ो', 'प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे', 'तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर', 'पंक्तियाँ कुछ कहती हैं', 'परखो स्वयं को', 'आओ, कौशल दिखाओ', 'खेल-खेल में भाषा', 'एक कदम भाषा की ओर', 'आओ, कुछ रचो', 'इस पाठ से तुमने समझा', 'पाठ से आगे' आदि विविध कृतियाँ दी गई हैं।

पूर्वानुभव पर आधारित स्मरण के साथ आकलन, उपयोजन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं सृजन आदि कृतियाँ 'ब्लूम के वर्गीकरण' पर आधारित हैं। पाठों के स्वाध्याय केवल पाठों तक सीमित न होकर 'पाठ से आगे' और 'जुड़ो सबसे' जैसे अन्य विषयों से सहसंबंध स्थापित करने की ओर अग्रसर हुए हैं। इन कृतियों में एक विशेष दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया गया है, जिसे समझकर आपको विद्‌यार्थियों तक उचित ढंग से पहुँचाना है।

विशेष विद्‌यार्थियों को प्रत्येक पाठों में आए महत्त्वपूर्ण पाँच शब्द आत्मसात करने के लिए प्रोत्साहित करें। कविता के भाव समझाने के लिए 'संरचनात्मक विधि' (स्ट्रक्चरल अप्रोच) का उपयोग करें। मुहावरों के अनुसार उनसे अभिनय कराएँ।

अध्ययन-अध्यापन करते समय विशेष विद्‌यार्थियों के लिए सांकेतिक चिह्नों की भाषा एवं अन्य पूरक अध्यापन पद्‌धति का उपयोग करें। उन्हें जिस पद्‌धति से संभव हो; उस पद्‌धति से व्यक्त होने का अवसर दें। सभी विद्‌यार्थियों के साथ उन्हें समान अवसर प्रदान करें। समय-समय पर प्रोत्साहन दें।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन अनुभव देने से पहले पूरी पाठ्यपुस्तक, उसमें दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देश अच्छी तरह समझ लें। सभी कृतियों का भरपूर अभ्यास कराएँ। आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, प्रसंगों का समावेश करें। पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी अध्ययन निष्पत्तियों का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन अपेक्षित है।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए विद्‌यार्थियों में हिंदी विषय के प्रति अधिक आत्मीयता एवं अभिरुचि उत्पन्न करके उनके हिंदी के भाषाई ज्ञान की वृद्‌धि करने में समर्थ होंगे।

विषय सूची

पहली इकाई

पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
* छुट्टियों का मौसम	पूर्वानुभव		१
१. हम हैं आदिवासी	चित्रवर्णन		२
२. ठुकरा दो या प्यार करो	प्रार्थना	सुभद्राकुमारी चौहान	४
३. श्यामा का न्याय	कहानी	श्यामलता गुप्ता	८
४. पानी का पत्र	पत्र लेखन	डॉ.डी.डी.ओझा	१४
५. ओला	कविता	मैथिलीशरण गुप्त	१९
६. साहसी बेटी	साहस कथा	रजनीकांत शुक्ल	२३
७. चूहा और मैं	हास्य-व्यंग्य निबंध	हरिशंकर परसाई	२७
८. बूझो तो जानें	पहेलियाँ	रीमा पाराशर	३१
९. कच्चा घड़ा	एकांकी	शकुंतला अग्रवाल	३५
१०. गौरव के पल	चित्र संयोजन (कोलाज)		४१
११. जन-जन के गीत	निबंध	डॉ. मीरा सिंह	४४
* पुनरावर्तन १			४९

दूसरी इकाई

पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
* त्योहार	पूर्वानुभव		५१
१. हमारे लोकनृत्य	चित्रवर्णन		५२
२. आम मँजरायल	लोकगीत	विभा रानी	५४
३. बैलोंवाली कार	कहानी	डॉ. अरविंद दुबे	५८
४. अमृत वाणी	दोहे	वृंद और रहीम	६२
५. प्रेरक संस्कार	कथा एवं लघुकथा	श्रीकृष्ण	६६
६. सोना-माटी	गीतिनाट्य	कीर्ति चौधरी	७०
७. मिसाइल मैन	साक्षात्कार	डॉ. ओ.पी. झा	७५
८. साप्ताहिक धमाका	कहानी	डॉ. हरिकृष्ण देवसरे	७९
९. हमको आना है...	गजल	किशन तिवारी	८४
१०. युवा दिवस	विज्ञापन		८८
११. पूर्वोत्तर भारत के त्योहार	निबंध	अरविंद	९१
१२. कदम-कदम बढ़ाए जा	प्रयाण गीत	वंशीधर शुक्ल	९६
* पुनरावर्तन २			१०१

प्रतीक चिह्न

सुनो | बोलो | पढ़ो | लिखो | सुनो और चर्चा करो | चर्चा करो | कृति | पढ़ो और हँसो | सांकेतिक भाषा

पूर्वानुभव : देखो और बताओ :

पहली इकाई

* छुट्टियों का मौसम

खुली हवा खुला आसमान, खुशियों से भरी ऊँची उड़ान।
बिन मोबाइल भी पढ़ना सीखो, खेल-खेल में बढ़ना सीखो।

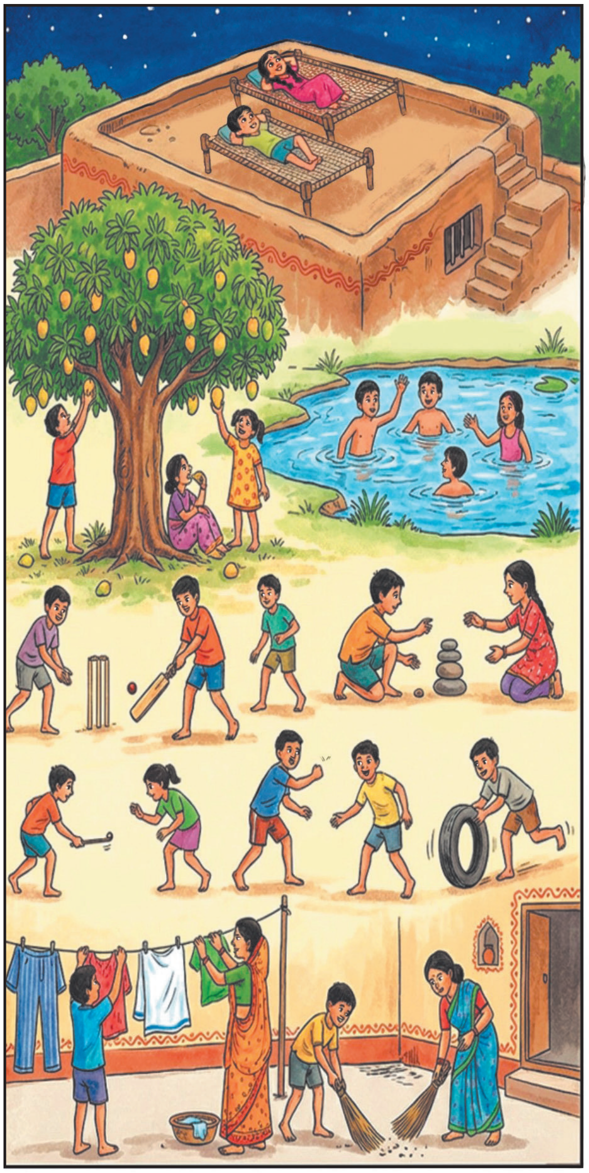

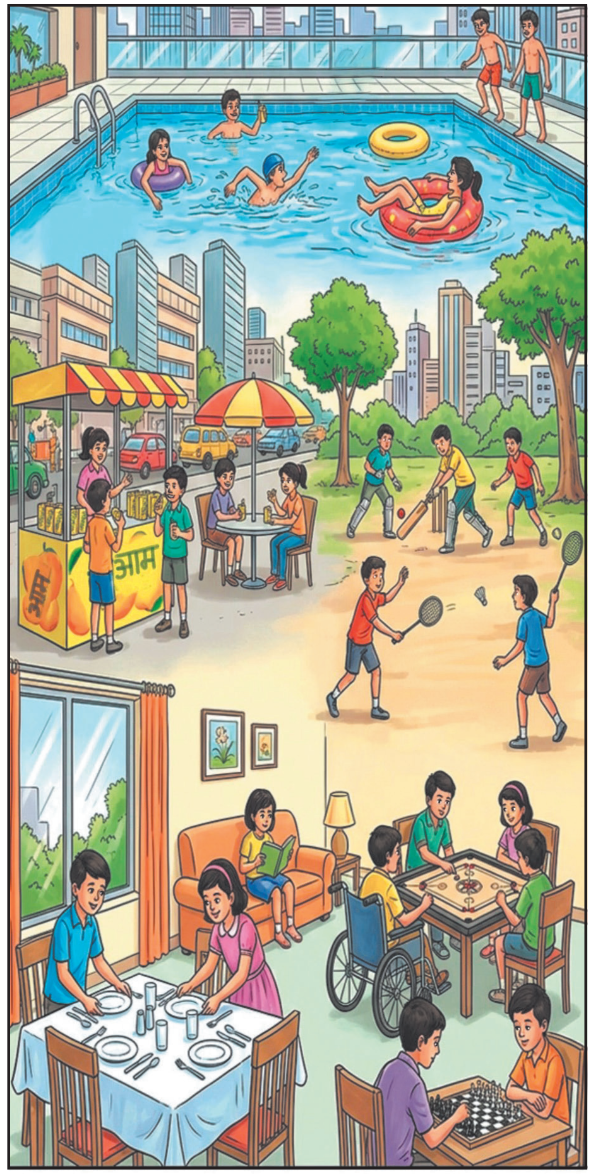

अध्यापन संकेत : सर्वप्रथम विद्यार्थियों से चित्रों का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ। शहर और गाँव के बच्चे अपनी छुट्टियाँ किस प्रकार बिताते हैं, इसपर चर्चा करें। दिए गए चित्रों पर उनको प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। गाँव और शहर में कौन-से खेल खेले जाते हैं, इसपर भी चर्चा करें और उन्हें प्रश्न बनाने के लिए कहें। चित्र में दिए गए घोषवाक्य पढ़वाएँ। अन्य घोषवाक्य बनाने के लिए भी प्रोत्साहित करें। गाँव और शहर की जीवन शैली में समानता और अंतर पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए उन्हें प्रेरित करें। खेलते समय विशेष विद्यार्थियों के लिए सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हुए आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।

देखो और बताओ :

१. हम हैं आदिवासी

✻ हम '**वारली**' जनजाति से हैं। महाराष्ट्र के पालघर, ठाणे, नाशिक और गुजरात के सीमावर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते हैं। हम प्रकृतिपूजक हैं और 'वारली' चित्रकला, खेती और सरल जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। हम सब 'वारली' भाषा बोलते हैं।

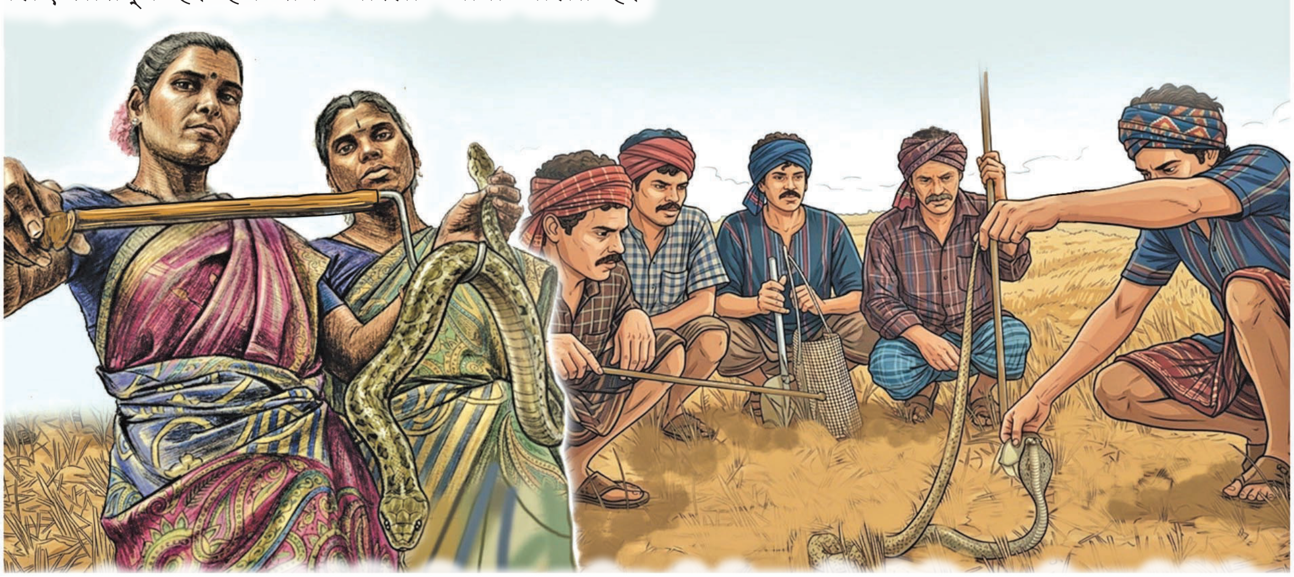

✻ हम '**इरूला**' जनजाति से हैं। तमिलनाडु, कर्नाटक और केरलम में रहते हैं। हम साँप पकड़ने में निपुण हैं और जड़ी-बूटियों का अच्छा ज्ञान रखते हैं। हम सब 'इरूला' भाषा बोलते हैं।

अध्यापन संकेत : विद्यार्थियों से चित्र का निरीक्षण कराएँ। चित्रों में आईं जनजातियों की बोली भाषा, रहन-सहन पर चर्चा करें। उनको स्थानीय बोली/भाषा के विभिन्न लोकसाहित्य का आनंद लेने के लिए प्रेरित करें। इसी तरह भारत की विभिन्न जनजातियों की संस्कृतियों, बोलियों की जानकारी प्रदान करें। उनके आस-पड़ोस में मनाए जाने वाले त्योहारों और उत्सवों के बारे में उनको अभिव्यक्त होने का अवसर प्रदान करें। संभाषण के लिए विशेष विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें।

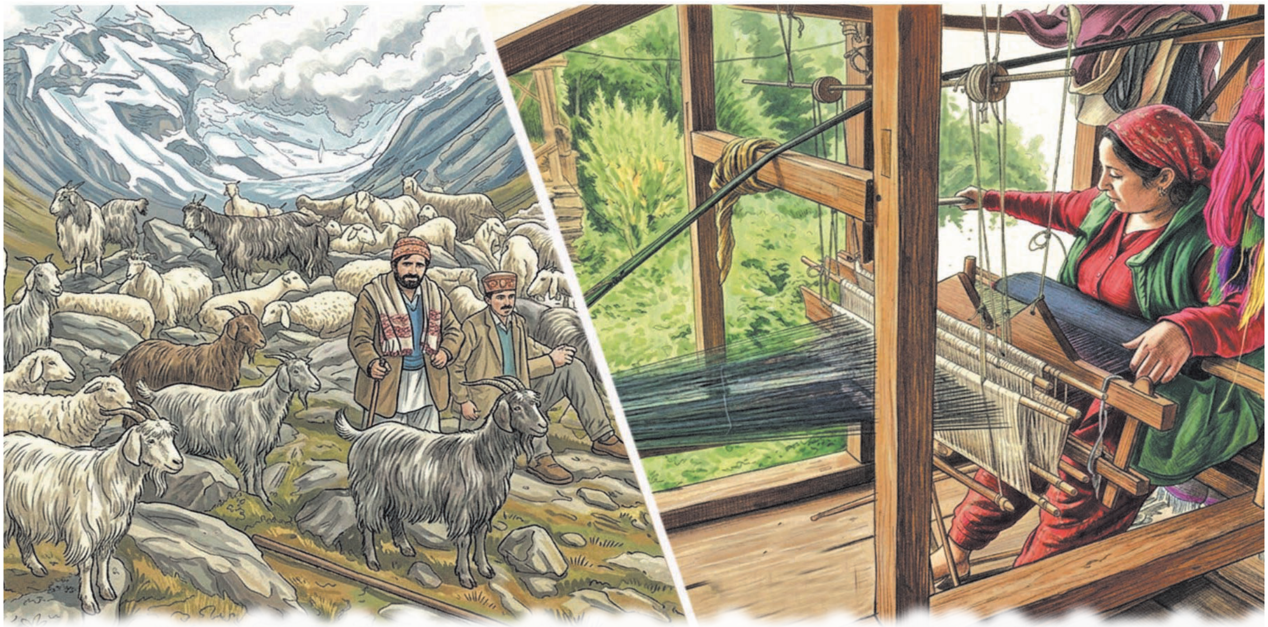

✻ हम **'गद्दी'** जनजाति के लोग हिमाचल प्रदेश से हैं। हम भेड़-बकरी पालते हैं और इनके ऊन से कपड़े बुनते हैं। हम 'गद्दी' या 'गड्डियाली/भरमौरी' बोली बोलते हैं।

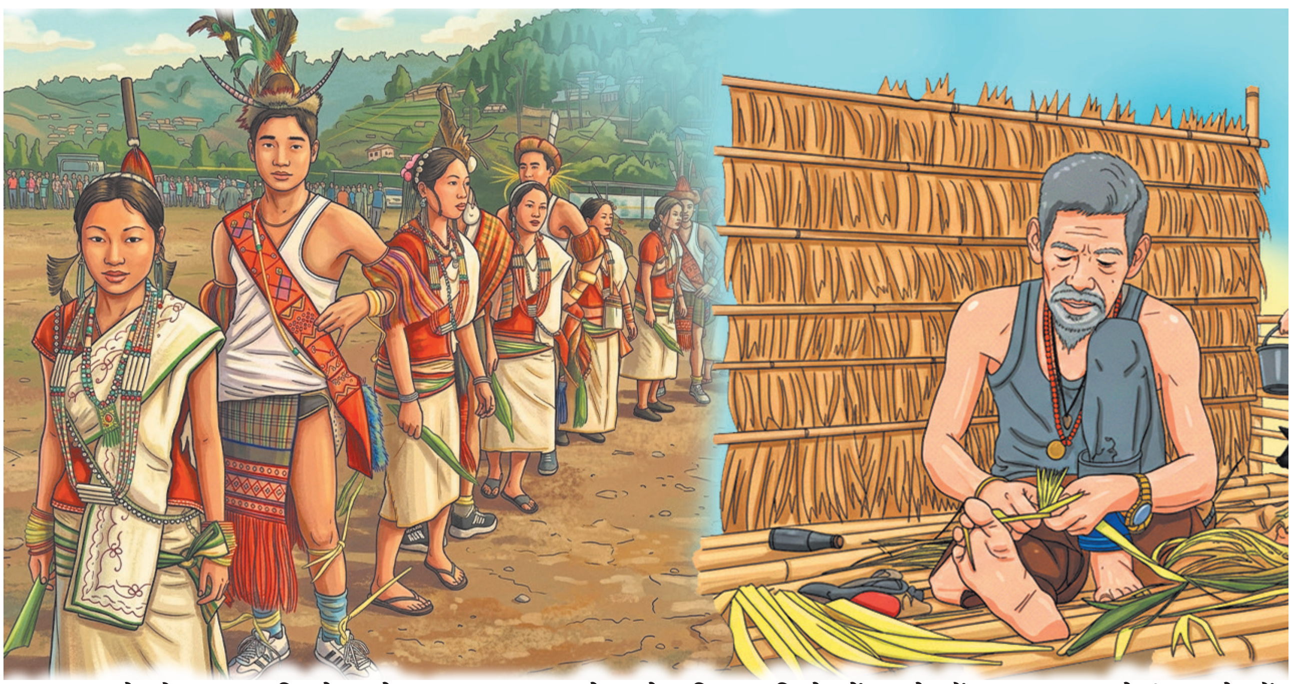

✻ हम **'नोक्ते'** जनजाति के लोग अरुणाचल प्रदेश के तिराप जिले में रहते हैं। हम झूम खेती करते हैं। हमारे घर बाँस और लकड़ी से बने होते हैं। हमारी मुख्य भाषा 'नोक्ते' है जो असम और नागालैंड के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती है।

अध्यापन संकेत : विद्यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ और उनपर चर्चा करें। राज्यों के माध्यम से सांस्कृतिक परिवेश में विविधता, समानता एवं अंतर की जानकारी दें। विविध राज्यों की भाषाओं पर चर्चा करें। किसी परिचित जनजाति से संबंधित ज्ञात कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें। उन्हें पूरक पठन के लिए विभिन्न पत्रिकाओं के संदर्भ देकर अलग-अलग भाषाओं के गीत सुनाएँ और उन्हें संकलित करने के लिए कहें। पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ी जनजाति से संबंधित घटनाओं, प्रसंगों के बारे में उनको अपना मत देने के लिए प्रेरित करें । 'झूम खेती' के बारे में जानकारी दें। उनके पास-पड़ोस में मनाए जाने वाले समारोहों, कार्यक्रमों पर चर्चा करें।

सुनो, पढ़ो और मिलकर गाओ :

२. ठुकरा दो या प्यार करो

– सुभद्राकुमारी चौहान

जन्म : १६ अगस्त १९०४, निहालपुर, उत्तर प्रदेश। **मृत्यु :** १५ फरवरी १९४८।
रचनाएँ : 'झाँसी की रानी', 'खिलौनेवाला', 'पानी और धूप' आदि।
सम्मान/पुरस्कार : 'सेकसरिया पुरस्कार'। भारतीय तटरक्षक दल के एक गश्ती जहाज को 'सुभद्रा कुमारी चौहान' नाम दिया गया है।

इस कविता में बताया गया है कि सच्ची भक्ति करने के लिए बाह्य आडंबर की आवश्यकता नहीं है। भक्ति के लिए सच्चा मन और निश्छल प्रेम पर्याप्त है।

देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे, कई रंग की लाते हैं॥
धूम-धाम से साज-बाज से, वे मंदिर में आते हैं।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ, लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं॥

मैं ही हूँ गरीबिन ऐसी, जो कुछ साथ नहीं लाई।
फिर भी साहस कर मंदिर में, पूजा करने चली आई॥
धूप-दीप-नैवेद्‌य नहीं है, झाँकी का शृंगार नहीं।
हाय! गले में पहनाने को, फूलों का भी हार नहीं॥

अध्यापन संकेत : उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का गायन करें। विद्‌यार्थियों से कविता का रसास्वादन करते हुए अभिनय के साथ सामूहिक अनुगायन कराएँ। एक-एक पद का विद्‌यार्थियों से एकल गायन कराकर उनसे तुकांत शब्दों की जोड़ियाँ बनाने के लिए कहें। कविता के भाव/अर्थ पर चर्चा करें। जिस पंक्ति में 'प' अक्षर अनुप्रास (आवृत्ति) के रूप में आया है, उसे खोजने के लिए कहें। काव्यविधा की विशेषताएँ, भिन्नताएँ एवं शैलियाँ आदि महत्त्वपूर्ण मुद्‌दों को चर्चा द्‌वारा समझाएँ। विशेष विद्‌यार्थियों के वाचन एवं गायन पर विशेष ध्यान दें। उन्हें लय-ताल के साथ ताली बजाने के लिए कहें।

कैसे करूँ कीर्तन, स्वर में है माधुर्य नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को, वाणी में चातुर्य नहीं॥
नहीं दान है, नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चली आई।
पूजा की विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आई॥

पूजा और पुजापा प्रभुवर इसी पुजारिन को समझो।
दान-दक्षिणा और निछावर, इसी भिखारिन को समझो।
मैं उन्मत्त प्रेम की प्यासी, हृदय दिखाने आई हूँ।
जो कुछ है, वह यही पास है, इसे चढ़ाने आई हूँ॥

चरणों पर अर्पित है, इसको चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो॥

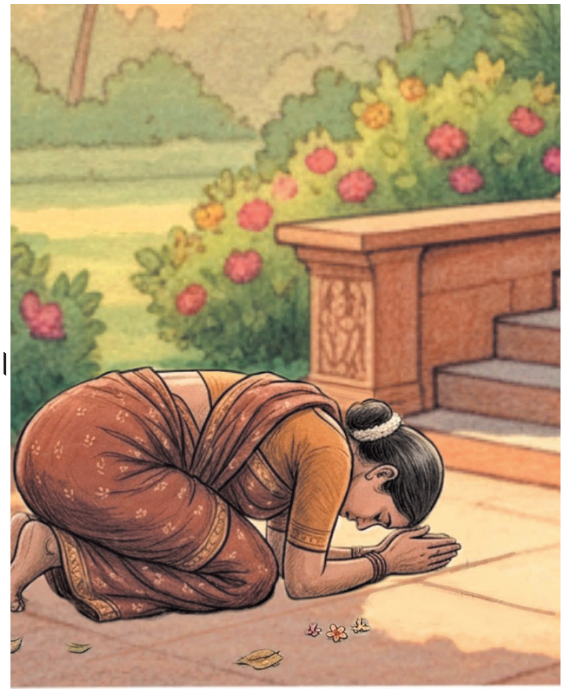

यह भी जानो : वर्णमाला (स्वर, व्यंजन)
बिंदुओं को जोड़कर रंग भरो और पूरी वर्णमाला क्रम से बोलो:

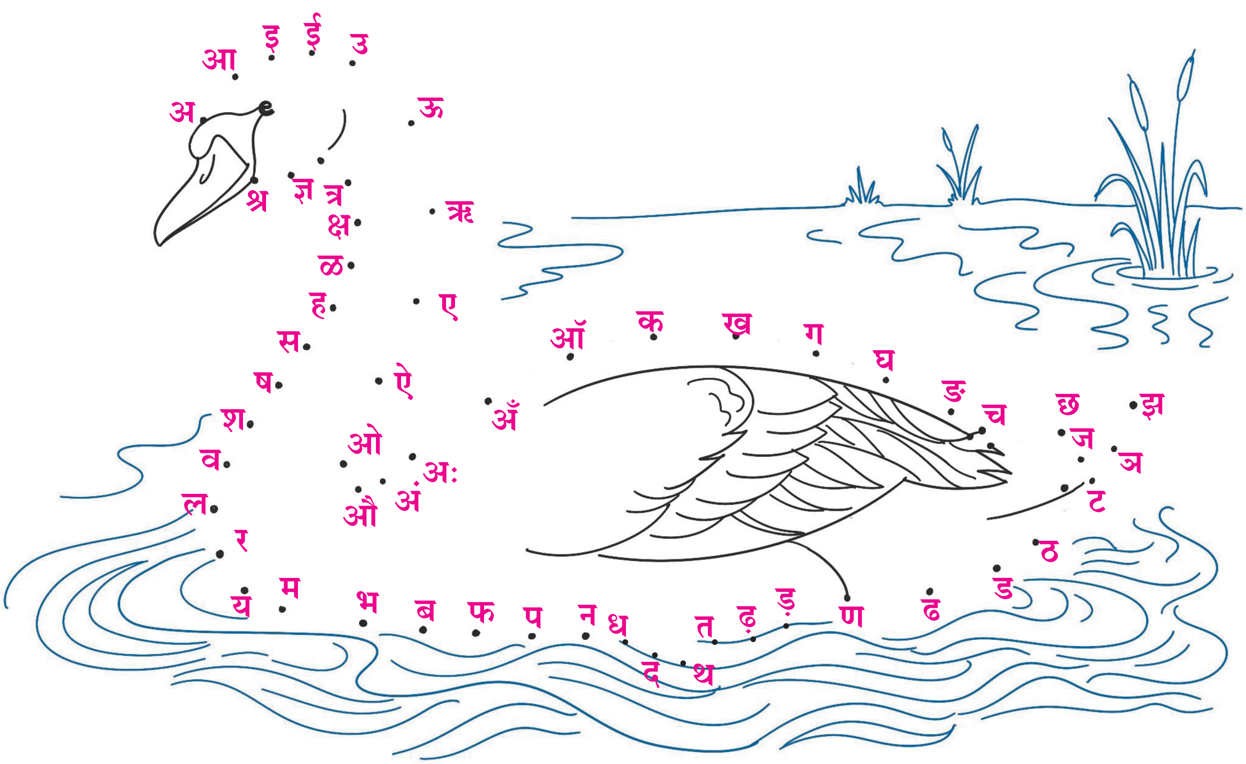

अध्यापन संकेत : हिंदी भाषा की वर्णमाला, स्वर-व्यंजन, ध्वनि, लिपि, स्वर-व्यंजनों की संख्या, इनके आपसी संबंध आदि पर चर्चा करें। वर्णों की उच्चारण विधि स्पष्ट करें। विद्यार्थियों से वर्णों का शुद्‍ध उच्चारण कराएँ। स्वर एवं व्यंजनों की संख्या पूछें।

शब्द सौरभ : निछावर = समर्पित; बहुमूल्य = बहुत अधिक मूल्यवाली; मुक्तामणि =सीपी से निकलने वाला बहुमूल्य मोती; उन्मत्त = मतवाली/मतवाला; पुजापा = पूजा की सामग्री, पूजा का भाव।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

प्रार्थना की विभिन्न पद्‌धतियों के बारे में बड़ों से प्रश्न पूछकर उनके बारे में चर्चा करो।

(२) रसास्वादन करते हुए पढ़ो, समझो और अपने शब्दों मे विचार व्यक्त करो :

हे प्रभो आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्‌मचारी, नीति रक्षक, वीर व्रतधारी बनें।। – रामनरेश त्रिपाठी

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) भक्त भगवान की सेवा में क्या-क्या भेंट लाते हैं?
(ख) कवयित्री ने कौन-सा साहस किया है ?
(ग) सच्ची भक्ति के लिए किन बातों की आवश्यकता है?
(घ) प्रार्थना करने के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?
(ङ) यदि तुम इस कविता को नया शीर्षक देना चाहो तो क्या दोगे और क्यों?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

"चरणों पर अर्पित है, इसको चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो।"
इन पंक्तियों का अर्थ लिखो।

(५) परखो स्वयं को :

दिए गए शब्दों में से स्वर-व्यंजन अलग करके उनकी सूची बनाओ :

जैसे – आईना = आ+ई+न्+आ

(च) उन्मत्त
(छ) गाओ
(ज) आई
(झ) उपासक
(ञ) इकतारा
(ट) अर्पित

(६) आओ, कौशल दिखाओ :

तुम अपने आस-पास धूम-धाम तथा साज-बाज कब और किन अवसरों पर देखते हो, इसपर कक्षा में चर्चा करो।

(७) एक कदम भाषा की ओर :

(त) कविता में आए हुए तुकांत शब्द ढूँढ़कर लिखो और ऐसे तुकबंदीवाले शब्द बनाओ। जैसे-पुजारिन-भिखारिन।

(थ) कविता में आए अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) वाले शब्द ढूँढ़कर अलग-अलग लिखो।

(द) वर्णमाला के स्वर और व्यंजन वर्णों को अलग-अलग लिखकर उनकी संख्या बताओ।

(ध) सूचना के अनुसार कृति करो :

१. शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो - उपासक, शृंगार, भेंट, चातुर्य।

२. शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखो - गरीब, प्रकट, स्वीकार, खाली।

(८) आओ, कुछ रचो :

वर्षा ऋतु के संदर्भ में नीचे दिए गए शब्दों के आधार पर चार पंक्तियों की स्वरचित कविता लिखो। कविता गाते हुए दृश्य-श्रव्य वीडियो बनाओ। नीचे दिए शब्दों के अतिरिक्त तुम अन्य शब्द भी जोड़ सकते हो।

रानी, पानी, छम-छम, ढम-ढम।

(९) इस कविता से तुमने समझा :

....

....

....

(१०) खेल-खेल में भाषा :

भाषा की अंत्याक्षरी खेलो -

अमरूद - दवा - वानर - रात - तारा - ...... - ...... - ...... - ......

(११) पाठ से आगे :

अध्यापक की सहायता से संत कवयित्री मीराबाई के पद ढूँढ़ो, सुनो और सुनाओ।

पढ़ो और समझो :

३. श्यामा का न्याय

– *श्यामलता गुप्ता*

जन्म : १३ जून १९५२, लालपुर, उत्तर प्रदेश।
सम्मान/पुरस्कार : महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का 'मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार', 'फणीश्वर नाथ 'रेणु' पुरस्कार'।
इस कहानी में लेखिका ने नशे की समस्या को उजागर करके व्यसनमुक्त समाज हेतु प्रेरणा दी है।

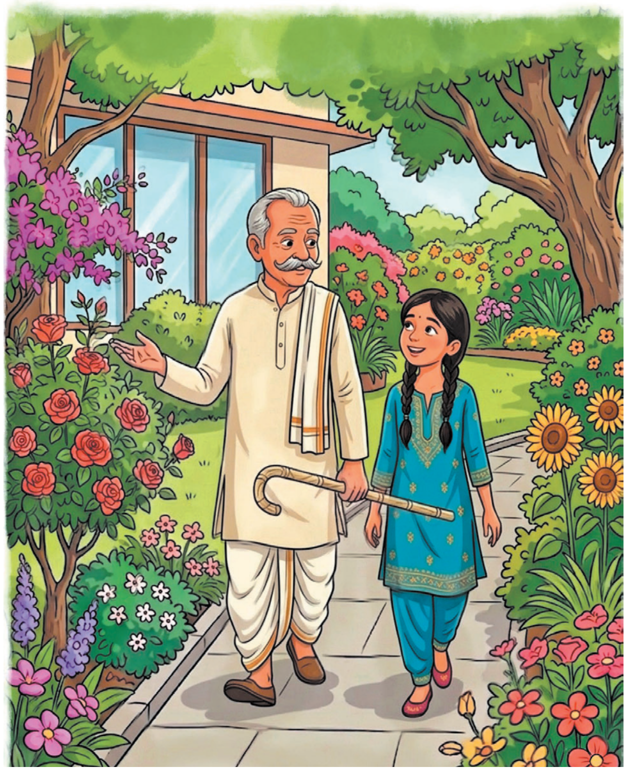

मनमोहक मुस्कान बिखेरते प्यारे-प्यारे दादा जी किसी एक परिवार के ही नहीं, पूरे गाँव के दादा जी थे। सफेद धोती, कुरता, हाथ में छड़ी लेकर जिस ओर निकल जाते, उस ओर अभिवादन में हाथ जुड़ जाते, प्रणाम कहते हुए सिर झुक जाते। सभी को मुस्कराकर वे राम-राम कहते। दादा जी के मित्र या उनसे बड़ी आयु के लोग ही उनका नाम लेकर बुलाते थे। दादा जी सभी से बहुत प्यार करते थे। बच्चे तो उनको जान से ज्यादा प्रिय थे।

इन्सान तो इन्सान, वे पशु-पक्षियों को भी बहुत प्रेम करते थे। रास्ते में जो भी पेड़ दिखता, उसका हाल-चाल पूछते। बड़े वृक्षों को राम-राम करते और छोटे पौधों को अपने हाथों से स्पर्श करके दुलार करते। अद्‍भुत था उनका पेड़-पौधों से प्रेम और अपनत्व।

एक दिन उनकी पौत्री श्यामा ने उनसे पूछा, ''दादा जी, आप पेड़-पौधों को छूते हो, राम-राम करते हो परंतु आपको तो ये कोई जवाब देते नहीं?''

दादा जी खिलखिलाकर हँस पड़े। श्यामा के सिर पर हाथ फिराते हुए बोले, ''प्यारी बिटिया! पेड़-पौधों में भी जान होती है। ये भी हमारे शब्दों को सुनते हैं, हमारे स्पर्श का अनुभव करते हैं। ये बोल नहीं पाते किंतु जब हम इनसे बातें करते हैं या इन्हें प्यार से छूते हैं तो ये अपनी टहनियाँ और पत्ते हिलाकर हमें उत्तर देते हैं। जब हम इनको राम-राम करते हैं तब ये झूम-झूमकर हमारा अभिवादन करते हैं।

दादा जी सौम्य व्यक्तित्व एवं सरल स्वभाव के थे। प्रातः बेला में उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर रामायण-

अध्यापन संकेत : कहानी के प्रथम परिच्छेद का उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श मुखर वाचन करें। अन्य परिच्छेदों का विद्‍यार्थियों से क्रमशः मुखर वाचन कराएँ। कहानी में आए मूल्यों, दादा जी के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर चर्चा करें। श्यामा की निर्णय क्षमता को ध्यान में रखते हुए उसके स्वभाव की विशेषताएँ बताने के लिए कहें। व्यसन के दुष्प्रभाव पर बातचीत करें तथा इस विषय पर उनको संदेश लिखने के लिए प्रेरित करें। विद्‍यार्थी पिछली कक्षाओं में संज्ञा के बारे में जान चुके हैं। संज्ञा पर चर्चा करते हुए पुनरावर्तन कराएँ। विशेष विद्‍यार्थी को श्यामा का स्थान देकर नाट्यीकरण कराएँ। 'टेली मानस योजना' अभिभावक एवं विद्‍यार्थियों को समझाएँ। आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें। हेल्पलाइन नंबर १४४१६।

गीता का पाठ करते। नित्य प्राणायाम करके अपने शरीर को नीरोगी बनाए रखते।

जब वे भजन-पूजन कर लेते, उनकी पौत्री श्यामा, दादा जी की उँगली पकड़कर ले जाती और एक तख्त पर बिठा देती। तख्त नक्काशीदार था। उसमें पीतल और ताँबा जड़ा हुआ था। तख्त के ऊपर कलात्मक गलीचा बिछा रहता था। उसके एक ओर तिपाई होती थी। उसपर दादा जी की धार्मिक तथा ज्ञानवर्धक पुस्तकें सजी रहती थीं। पुस्तकों को सजा-सँवारकर रखने का कार्य श्यामा करती थी। तख्त के सामने कुछ मूढ़े रखे रहते थे। दादा जी के मित्र और मिलने वाले आकर उनपर बैठते थे। दादा जी गाँव के सरपंच थे। गाँव के पंच भी वहीं आकर बैठते थे।

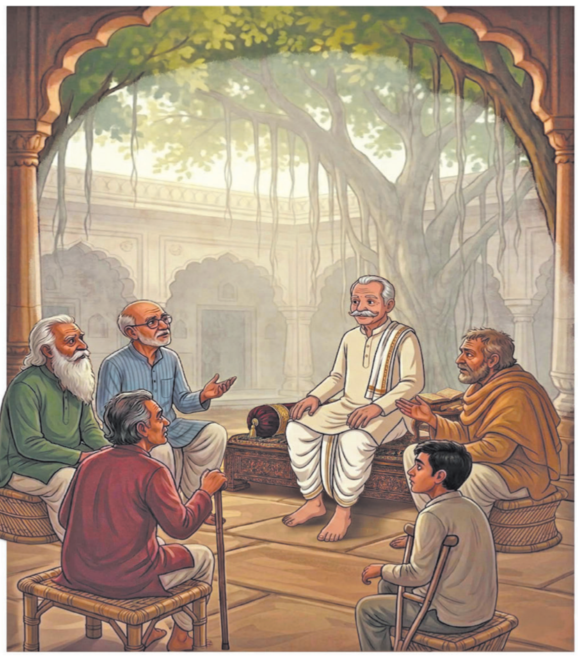

दादा जी सभी को यथोचित मान-सम्मान देकर भाईचारे का निर्वहन करते थे। उनका निर्णय इतना निष्पक्ष और सत्य का दर्पण होता था कि सब शीश झुकाकर उसे मान्य करते थे।

एक दिन पौत्री श्यामा ने कहा, ''दादा जी! आपकी तरह मैं भी फैसला करूँगी।''

दादा जी ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा, ''जरूर, आखिर पोती किसकी है?'' दादा जी ने अपने पास बिठाते हुए श्यामा को समझाया, ''देखो बिटिया, फैसला तुम दो प्रकार से कर सकती हो-एक तो न्यायाधीश (जज) बनकर और दूसरे शिक्षिका बनकर। इन दोनों के लिए तुमको बहुत पढ़ाई करनी होगी।''

''लेकिन दादा जी, इसमें तो बहुत समय लगेगा। अभी तो मैं बहुत छोटी हूँ?'' पोती ने प्रश्न किया।

दादा जी मुस्कराते हुए बोले, ''तो क्या हुआ? एक दिन बड़ी भी हो जाओगी। बिटिया! यदि मन में संकल्प करके मेहनत करोगी तो सफलता अवश्य मिलेगी।''

श्यामा कुछ उदास होकर बोली, ''लेकिन दादा जी! मैं फैसला अभी सुनाना चाहती हूँ। बस आप 'हाँ' कर दीजिए।''

''चलो, सुनाओ फैसला जज साहिबा! हमने हाँ कर दी,'' दादा जी ने श्यामा के सिर पर हाथ रखकर कहा।

"दादा जी! ऐसे नहीं! पहले मुझे आप यह बताइए कि आप तख्त पर बैठकर ही फैसला क्यों सुनाते हैं?"

''अरी बिटिया रानी! मेरा तख्त तो राजा विक्रमादित्य के सिंहासन जैसा है। कहते हैं कि विक्रमादित्य राजा जब अपने सिंहासन पर बैठकर राज्य के लोगों की समस्याओं और झगड़ों पर निर्णय देते थे तो वह बहुत ही न्यायपूर्ण होता था। उनका सिंहासन न्याय के लिए प्रसिद्ध था।'' दादा जी ने आकाश की ओर देखते हुए कहा।

''हूँ ऽऽऽ! तो यह बात है दादा जी। फिर तो मैं भी अब आपके सिंहासन पर बैठकर न्याय करूँगी। आपको स्वीकार है?'' हँसते हुए पौत्री बोली।

''लेकिन हमारा कसूर?'' दादा जी ने श्यामा की तरफ प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हुए पूछा।

''दादा जी, पहले मुझे तख्त पर बैठने तो दीजिए,'' कहते हुए श्यामा तख्त पर जाकर बैठ गई। दादा जी को इंगित करते हुए श्यामा बोली, ''दादा जी, अब हम न्याय के सिंहासन पर विराजमान हैं। साफा भी सिर पर बाँध लिया है।" दादा जी नीचे खड़े थे।

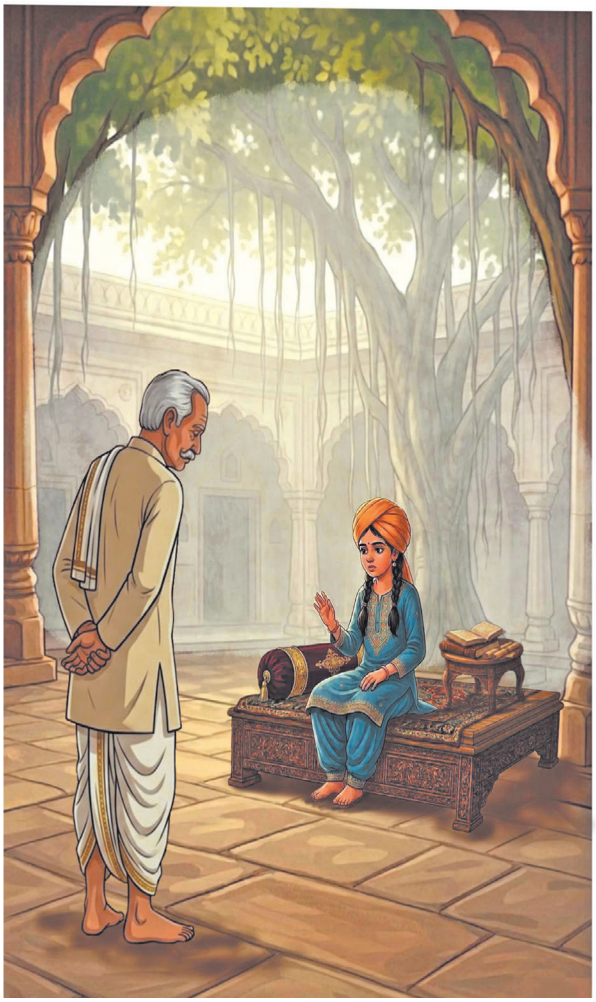

"आपको हमारा निर्णय मान्य होगा ? अगर मान्य होगा तो हाथ उठाकर हमारी सौगंध लेकर 'हाँ' कहिए।"

''ठीक है बिटिया, हम आपकी शपथ लेकर स्वीकृति देते हैं। अपना निर्णय सुनाइए।'' दादा जी ने गंभीर होते हुए कहा।

लेकिन दादा जी के मन में बड़ी उथल-पुथल चल रही थी। जीवन में आज पहली बार वे सुनने के लिए न्यायालय में न्यायाधीश के सामने खड़े हैं। दृढ़ निश्चयी तथा निर्भीक व्यक्तित्व के दादा जी का भी दिल आज जोर-जोर से धड़कने लगा था।

दादा जी का ध्यान भंग करते हुए पोती श्यामा बोली, ''तो दादा जी ! अब मैं फैसला सुनाती हूँ।''

''जी, बिटिया रानी.... मेरा मतलब जज साहिबा।'' कहकर दादा जी सिर झुकाकर खड़े हो गए।

''आज से नहीं बल्कि अभी से आपका हुक्का पीना बंद। आपकी पंचायत के बहुत-से सदस्य बीड़ी सिगेरट पीते हैं। कई तंबाकू खाते हैं। आज से आप अपनी पंचायत के सभी गाँवों में यह सब बंद करवा देंगे। हमारे गुरु जी हमें बता रहे थे कि हुक्का, बीड़ी-सिगरेट पीने से आदमी के फेफड़े खराब हो जाते हैं। तंबाकू खाने से कैंसर जैसी भयंकर बीमारी हो सकती है।''

पोती का फैसला सुनकर दादा जी का मुँह खुला का खुला रह गया। बोले, ''पर बिटिया.. !''

बात काटते हुए श्यामा ने आदेश के स्वर में कहा, ''दादा जी, आपको मेरा फैसला मंजूर है या नहीं ?''

''मंजूर है जज बिटिया का फैसला।'' अब श्यामा तख्त से उतर दादा जी से लिपटकर रोने लगी। दादा जी ने पोती के आँसू पोंछते हुए उसके फैसले के लिए धन्यवाद दिया। उसके सिर पर हाथ फिराते हुए उसके दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया।

दादा जी संस्कार और शिष्टाचार का पालन न करने वालों के साथ कठोर व्यवहार करते थे। उनकी विनम्रता कठोरता में बदल जाती थी। श्यामा बिटिया के निर्णय को न केवल उन्होंने स्वयं स्वीकार किया अपितु अपनी पूरी पंचायत को व्यसनमुक्त करने की घोषणा भी कर दी।

यहाँ व्यसनमुक्ति के संदर्भ में अपना संदेश लिखो–

....
....
....
....
....
....
....
....
....

शब्द सौरभ : पौत्री = पोती; गलीचा = सूत की मोटी दरी, कालीन; मूढ़े = बाँस, बेंत और रस्सी से बनाई गोल चौकी; सौम्य = कोमल, शांत, विनम्र; निवृत्त = मुक्त; यथोचित = उपयुक्त; स्वीकृति = स्वीकार करने का भाव, मंजूरी; निर्भीक = निडर; शिष्टाचार = सभ्य व्यवहार; विनम्रता = विनयशीलता; व्यसन = नशा, बुरी आदत; शपथ = किसी कार्य को करने का निश्चय।

मुहावरे : **खिलखिलाकर हँसना** = मुक्त रूप से हँसना; **मूँछों पर ताव देना** = गर्व से मूँछ मरोड़ना; **दिल जोर-जोर से धड़कना** = घबराहट होना, बेचैन होना; **उथल-पुथल चलना** = अशांति होना, हलचल मचना। **संकल्प करना** = दृढ़ निश्चय करना; **मुँह खुला रह जाना** = आश्चर्यचकित होना।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

(क) अगर तुम श्यामा की जगह होते तो पंचायत सदस्यों की बुरी आदतें छुड़ाने के लिए कौन-सा तरीका अपनाते?

(ख) अगर तुम्हारे परिवार में कोई व्यक्ति धूम्रपान करता है तो तुम उनसे वह लत छुड़ाने के लिए क्या उपाय करोगे?

(२) रुचिपूर्वक पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

नशा नरक का द्वार है, खोलो बंदे नैन। वरना तुम पछताओगे, खोकर सारा चैन।।
नशा मारकर चेतना, लाता है अविवेक। नशा धारता है नहीं, कभी इरादे नेक॥

पंक्तियाँ पढ़कर इस तरह के घोषवाक्य बनाओ।

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(च) दादा जी गाँव के सरपंच होने के कारण कौन-से काम करते थे?

(छ) दादा जी तख्त पर बैठकर किस प्रकार का निर्णय देते थे?

(ज) तख्त पर बैठकर श्यामा ने कौन-सा फैसला सुनाया?

(झ) दादा जी ने पौधों के बारे में श्यामा से क्या कहा?

(ञ) इस कहानी का कौन-सा पात्र तुम्हें पसंद आया, क्यों, कारण लिखो।

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

(ट) "हुक्का बीड़ी-सिगरेट पीने से आदमी के फेफड़े खराब हो जाते हैं।" इस कथन द्वारा श्यामा क्या कहना चाहती है, पाँच-छह पंक्तियों में विवेचन करते हुए लिखो।

(ठ) "पेड़-पौधों में भी जान होती है।" इसपर अपने विचार लिखो।

(५) परखो स्वयं को :

निम्नलिखित वाक्य पढ़कर सही या गलत का चिह्न लगाओ :

(त) दादा जी पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों से प्यार करते थे। - ☐

(थ) दादा जी ठीक से न्याय नहीं कर पाते थे। - ☐

(द) श्यामा को दादा जी की सारी बातें अच्छी लगती थीं। - ☐

(ध) श्यामा योग्य न्याय, अपनी निर्णय क्षमता के कारण दे पाई। - ☐

(न) पोती का फैसला सुनकर दादा जी का मुँह गुस्से से लाल हो गया। - ☐

(६) एक कदम भाषा की ओर :

निम्नलिखित परिच्छेद का वाचन करो तथा परिच्छेद में आई विभिन्न संज्ञाओं को ढूँढ़कर लिखो:

"अरी बिटिया रानी! मेरा तख्त तो राजा विक्रमादित्य के सिंहासन जैसा है। कहते हैं कि विक्रमादित्य राजा अपने सिंहासन पर बैठकर राज्य के लोगों की समस्याओं और झगड़ों पर निर्णय देते थे तो वह बहुत ही न्यायपूर्ण होता था। उनका सिंहासन न्याय के लिए प्रसिद्ध था।

(७) आओ, कुछ रचो :

दिए हुए चित्रों को देखकर 'मोबाइल वरदान या अभिशाप' विषय पर आठ-दस वाक्यों में अपने विचार लिखो:

नि:शुल्क वितरण के लिए

(८) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

....

(९) जुड़ो सबसे :

धूम्रपान जैसी बुरी आदतों का शरीर पर क्या दुष्परिणाम होता है, इसपर अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में विज्ञान के शिक्षकों से चर्चा आयोजित करो। उनसे प्रश्न पूछो और उनके विचार सुनो।

(१०) चित्र कुछ कहते हैं :

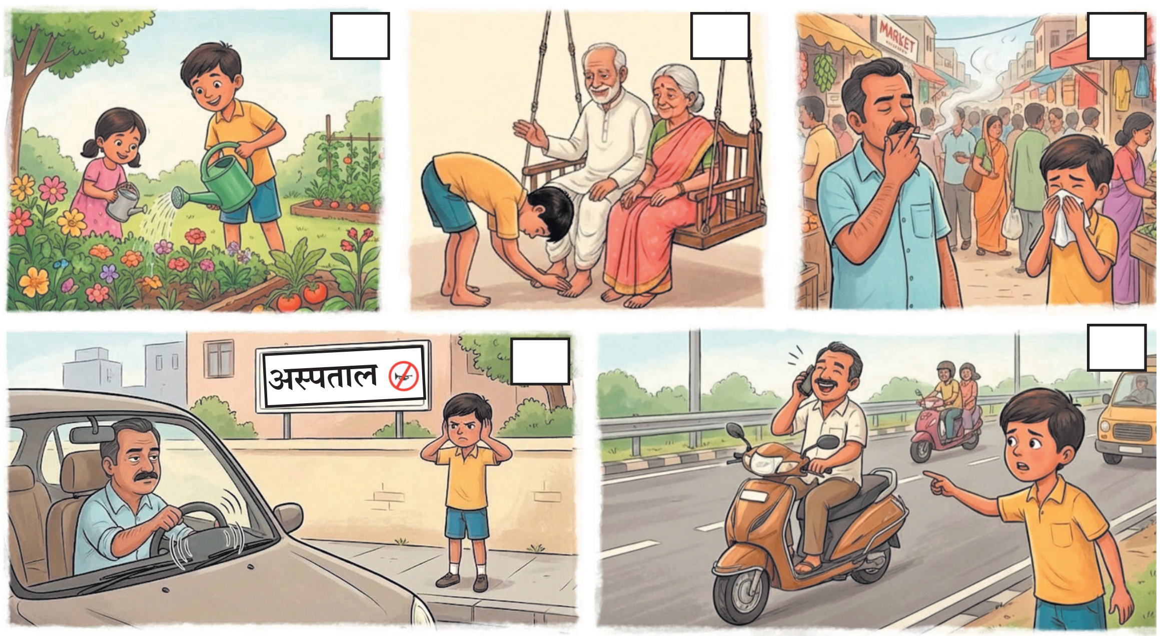

ऊपर दिए चित्रों को देखो और चर्चा करो। चित्रों पर सही √ या गलत × का चिह्न लगाओ। अच्छी आदतों पर आधारित एक पहेली बनाओ।

(११) पाठ से आगे :

बड़ों की सहायता से किसी व्यसनमुक्ति केंद्र की जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रश्न पूछो। वहाँ चलने वाली गतिविधियों के बारे में आठ-दस वाक्यों का निबंध लिखो।

४. पानी का पत्र

– डॉ. डी. डी. ओझा

जन्म : १६ फरवरी १९५३, जोधपुर, राजस्थान।
प्रमुख रचनाएँ : मृदा, जल और पर्यावरण संबंधी पुस्तक लेखन तथा अनुसंधान।
सम्मान/पुरस्कार : 'अखिल भारतीय स्तर का विज्ञान पुरस्कार', 'साहित्य कला सरस्वती पुरस्कार' आदि।
इस पत्र में लेखक ने पानी का अपव्यय रोकने का संदेश दिया है।

दिनांक – १० अगस्त...

प्रिय मानव,

नमस्ते!

मेरा पत्र पढ़कर तुम्हें आश्चर्य होगा! पत्र लिखने का मुख्य उद्‌देश्य है कि तुम सब मेरे महत्व को समझो और उसपर ध्यान दो।

मैं पानी हूँ। आज से अरबों वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर मेरा जन्म हुआ। मेरे कारण ही प्रत्येक जीव की उत्पत्ति हुई। मैं सर्वव्यापी हूँ। पृथ्वी के लगभग तीन चौथाई भाग पर मैं भिन्न-भिन्न रूपों में पाया जाता हूँ। कभी आकाश को, कभी भूमि को तो कभी सागर को अपना घर बनाता हूँ।

तुम सोचते होगे कि मेरा प्रत्येक रूप तुम्हारे लिए उपयोगी है परंतु ऐसा नहीं है। मेरा तो केवल शुद्‌ध एवं स्वच्छ रूप ही तुम्हारे लिए उपयोगी है। इस रूप में मैं एक प्रतिशत से भी कम केवल तालाबों, झरनों, नदियों एवं भूजल के रूप में पाया जाता हूँ। मुझे तो दुख इस बात का है कि तुमने मेरे इस रूप और महत्व को समझा ही नहीं है।

मैं प्रत्येक प्राणी के जीवन का स्रोत हूँ। जीवन की सभी क्रियाएँ मुझसे ही संभव हैं। मेरा उपयोग तुम प्रात:काल से रात्रि तक तथा जन्म से मृत्यु तक करते हो। तुम्हारे शरीर तथा खाद्‌य पदार्थों में मेरा अंश रहता ही है।

मेरी माँग निरंतर बढ़ती जा रही है। जनसंख्या में अनियंत्रित वृद्‌धि, तेजी से बदलता रहन-सहन, खान-पान के ढंग से मुझपर दबाव बढ़ता जा रहा है। तुम्हारे लिए मेरा सुलभता से उपलब्ध होना तो अनिवार्य है ही, इसके साथ मेरा शुद्‌ध, स्वच्छ, लवण एवं क्षाररहित रूप भी अत्यावश्यक है।

मुझे खेद है कि तुम मुझे और प्रकृति को ही दोष देते हो। प्रकृति को यदि तुम सुरक्षित रखते हो तो प्रकृति अपने अपार प्यार तथा खजाने को तुम्हारी सेवा में अर्पण कर देगी।

घरों में तुम अनजाने में मुझे बहुत बेकार गँवा देते हो, जिसे थोड़ी-सी जागरूकता से बचाया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर प्रात:काल दातून करते समय, मुँह-हाथ धोते समय, कपड़े धोते समय, नहाते समय तुम नल

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों से क्रमशः पाठ का शुद्‌ध वाचन कराएँ। 'पत्र लेखन' के बारे में वे क्या जानते हैं, यह समझने हेतु कुछ प्रश्न पूछें। पत्र लेखन क्यों किया जाता है, पत्रों के विविध प्रकार, पत्र लेखन एक कला है, इसपर चर्चा करें। आत्मकथा पद्‌धति से लिखे पत्र को समझाएँ। विद्‌यार्थियों से चर्चा करते हुए पानी की आवश्यकता एवं महत्व बताएँ। दैनिक जीवन में पानी के संरक्षण एवं बचत के लिए उनको उपाय ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करें। पत्र लेखन एवं ई-मेल के मुद्‌दों को समझाएँ।

अनावश्यक चलने देते हो तथा बर्तनों के भर जाने के बाद भी मुझे व्यर्थ ही बहने देते हो। कभी-कभी नल बंद करना भी भूल जाते हो। नल और हैंडपंप कभी-कभी चूने लगते हैं और मैं बहता ही रहता हूँ। अपने तथा मेरे कल्याण के लिए तुम्हें यह रवैया बदलना होगा। पानी का अपव्यय रोकना होगा। यह तो तुम स्वयं जानते हो कि 'जल ही जीवन है।'

आशा है, मेरा यह पत्र पढ़ने के बाद तुम मेरी बर्बादी नहीं करोगे और मेरे संरक्षण के प्रति जागरूक रहोगे।

तुम्हारा अपना मित्र,
पानी
'जीवन', तालाबघर, पो. सरितापुर बाँध, जि. जलौघ नगर,
समुद्र राज्य, १०० ००१, दूरभाष - १०००२०००३
ई-मेल - pani@watermail.com

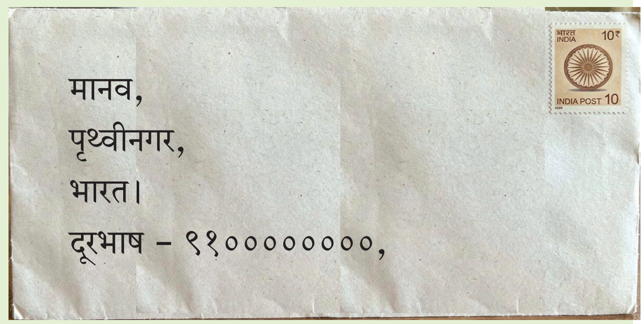

यह भी जानो :

१. श्याम निरंतर पढ़ाई **करता है**। २. सुवर्णा सुंदर गीत **गा रही है**। ३. सुदेश ने चित्र **बनाया** है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से पढ़ो। इन वाक्यों में **करता है, गा रही है, बनाया है** आदि से क्रिया के वर्तमान में किए जाने का बोध हो रहा है, अर्थात क्रिया वर्तमान समय में चल रही है।

१. सुमन ने गृहकार्य **पूरा किया**। २. रोहन साइकिल **चला रहा था**। ३. माँ बाजार **गई थी**।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से पढ़ो। इनमें **पूरा किया, चला रहा था, गई थी** आदि शब्दों से क्रिया के पूर्ण होने का संकेत मिल रहा हैं। अर्थात काम भूतकाल में बीत गया है।

तुम विचारपूर्वक **पढ़ोगी** तो **समझोगी** कि भारत कितना विविधतापूर्ण है। जब तुम बड़ी हो **जाओगी** तो इन स्थानों की सैर **करोगी** और अपने अनुभव **लिख रही होगी**।

उपर्युक्त अनुच्छेद में **पढ़ोगी, समझोगी, जाओगी** आदि शब्दों से आने वाले समय अर्थात भविष्य में क्रिया के होने का पता चल रहा है अर्थात क्रियाएँ भविष्य में होंगी। इस तरह तुम देखते हो कि क्रिया के तीन काल होते हैं -

वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यकाल।

अध्यापन संकेत : 'यह भी जानो' में दिए गए वाक्यों को विद्यार्थियों से पढ़वाएँ। विभिन्न कालों में प्रयुक्त क्रियाओं पर चर्चा करें। भूत, वर्तमान, भविष्यकाल की जानकारी विविध उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करें। सभी को तीनों कालों के वाक्य बनाने के लिए प्रेरित करें। विद्यार्थियों के दो समूह बनाकर विभिन्न कालों के वाक्य बनाने की प्रतियोगिता कराएँ।

शब्द सौरभ : उत्पत्ति = जन्म, निर्मिति; वाष्प = भाप; स्रोत = उद्‌गम; अनियंत्रित = निरंकुश, नियंत्रण में न होना; सर्वव्यापी = जो सब जगह हो; प्रतिशत = प्रति सैकड़ा; लवणरहित = नमकरहित।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

यदि पृथ्वी पर पानी खत्म हो जाए तो क्या होगा? इसपर अपने बड़ों से चर्चा करके उसका सारांश कक्षा में सुनाओ।

(२) रुचि से पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

प्रिय किसान भाई,

सप्रेम नमस्कार!

आप देश के अन्नदाता हैं! आप चिलचिलाती धूप, कड़ाके की ठंड और मूसलाधार बारिश में भी अपने खेतों में मेहनत करते हैं। आपकी अटूट लगन और कड़ी मेहनत से ही हमारे घरों में अन्न पहुँचता है।

आपका परिश्रम न केवल राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाता है बल्कि करोड़ों लोगों का पेट भी भरता है। आप न केवल फसल उगाते हैं बल्कि देश की उम्मीदों और आकांक्षाओं को भी सींचते हैं। आपकी भूमिका समाज में अनमोल है और आपका समर्पण प्रेरणादायी है।

आपकी मेहनत को प्रणाम!

भवदीय,

एक नागरिक।

(ऐसा ही एक पत्र अध्यापकों के नाम लिखो।)

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) पानी के विविध रूप लिखो।

(ख) पानी की माँग निरंतर क्यों बढ़ती जा रही है?

(ग) पानी की शिकायत के अनुसार लोग उसका अपव्यय किस प्रकार करते हैं?

(घ) पानी के पत्र का उत्तर अपने शब्दों में लिखो।

(ङ) पत्र लेखन के कौन-कौन-से मुद्दे होते हैं, लिखो।

(४) परखो स्वयं को :

(च) नीचे दिए गए वाक्य पढ़कर बताओ कि तुम्हारे अनुसार पानी ने पत्र क्यों लिखा होगा?

१. पानी को पत्र लिखना अच्छा लगता है।

२. पानी हमें हमारी गलतियों का एहसास करवाना चाहता है।

३. पानी पत्र लेखन सीखना चाहता है।

४. पानी को हम सभी से संपर्क स्थापित करना था।

(छ) पानी के अनुसार हम मानव इन गलतियों के अतिरिक्त अन्य कौन-सी गलतियाँ करते हैं?

१. हम पानी का अपव्यय करते हैं। २. हम अच्छे से नहीं रहते।

३. हम प्रकृति को दोष देते हैं। ४. हम जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं करते हैं।

(५) आओ, कौशल दिखाओ:

समाचारपत्र, दूरदर्शन, अंतरजाल से जल प्रदूषण संबंधी समाचार पढ़/सुन/खोजकर उसकी मुख्य बातें अपने शब्दों में बताओ।

(६) एक कदम भाषा की ओर :

अपने मित्र/सहेली को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ देते हुए पत्र लिखो:

दिनांक : ....

संबोधन : ....

अभिवादन : ....

प्रारंभ : ....

विषय विवेचन – ....

....

तुम्हारा/तुम्हारी

नाम : ....

पता : ....

(७) खेल-खेल में भाषा :

(ट) नीचे लिखे हिंदी शब्दों के लिए मराठी, अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखो :

हिंदी	मैं	आप	बहन	भाई	झरना	लवण
मराठी	मी					
अंग्रेजी	I					

(ठ) पढ़ो और हँसो :

शिक्षक : मोहन! तुमने गृहकार्य क्यों नहीं पूरा किया?
मोहन : गुरु जी, मैं लिखने बैठा तो लाइट चली गई।
शिक्षक : तो लाइट आने के बाद क्यों नहीं लिखा?
मोहन : मैंने सोचा कि लाइट मेरी पढ़ाई से डरकर फिर चली जाएगी।

(८) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

....

(९) जुड़ो सबसे :

भूगर्भ में पानी किस प्रकार जमा होता है, इस प्रक्रिया को जानने के लिए भूगोल के अध्यापक से प्रश्न पूछो। प्रक्रिया समझते हुए उसका चित्र बनाकर लगाओ।

(१०) निपुण बनो :

तुम्हारी पाठशाला में पानी की बचत हो, इसलिए पानी की बचत से संबंधित घोष वाक्य तैयार करो और अपनी कक्षा में लगाओ।

(११) पाठ से आगे : प्रकल्प

पानी से संबंधित मुहावरों, कहावतों, सुवचनों का संग्रह करो।

सुनो, पढ़ो और मिलकर गाओ :

५. ओला

– *मैथिलीशरण गुप्त*

जन्म : ०३ अगस्त १८८५, चिरगाँव (उ.प्र.) *मृत्यु :* १२ दिसंबर १९६५
रचनाएँ : भारत-भारती, यशोधरा, साकेत, जयद्रथ वध आदि।
सम्मान/पुरस्कार : 'पद्‌मभूषण' से सम्मानित। 'राष्ट्रकवि' उपाधि से सम्मानित हैं।
इस कविता में मानव स्वभाव की कहानी प्रकृति के माध्यम से स्पष्ट की गई है। जल से बना 'ओला' जब घमंड के कारण कठोर और क्रूर बन जाता है तो उसका नाश होता जाता है। इसी प्रकार ऊँचाई और सफलता मिलते ही व्यक्ति गर्व तथा घमंड करने के कारण पतन की राह पर जाता है। अतः हमें किसी बात का घमंड नहीं करना चाहिए।

एक सफेद बड़ा-सा ओला,
था मानो हीरे का गोला!
हरी घास पर पड़ा हुआ था,
वहीं पास मैं खड़ा हुआ था!
मैंने पूछा, क्या है भाई,
तब उसने यों कथा सुनाई!
जो मैं अपना हाल बताऊँ,
कहने में भी लज्जा पाऊँ!
पर मैं तुझे सुनाऊँगा सब,
कुछ भी नहीं छिपाऊँगा अब!

जो मेरा इतिहास सुनेंगे,
वे उससे कुछ सार चुनेंगे!
यद्‌यपि मैं न अब रहा कहीं का,
वासी हूँ मैं किंतु यहीं का!

सूरत मेरी बदल गई है,
दीख रही वह तुम्हें नई है!
मुझमें आर्द्रभाव था इतना,
जल में हो सकता है जितना।

मैं मोती-जैसा निर्मल था,
तरल किंतु अत्यंत सरल था!

अध्यापन संकेत : उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ विद्‌यार्थियों को कविता सुनाएँ। उनको कविता की शैली और विशेषताओं से अवगत कराएँ। उनसे कविता का व्यक्तिगत तथा सामूहिक गायन कराएँ। कविता की कौन-सी पंक्ति अच्छी लगी; पूछें एवं कारण बताने हेतु प्रेरित करें। रूपक, उपमा, मानवीकरण और अतिशयोक्ति अलंकार पर चर्चा करें। विरामचिह्‌नों पर चर्चा करते हुए उनकी पहचान कराएँ। उनका लेखन में अभ्यास कराएँ। 'वाक्य' के बारे में समझाएँ। विशेष विद्‌यार्थियों को प्रश्न पूछकर अर्थ समझाएँ।

एक रोज जब दोपहरी थी
मेरे पास छाँव गहरी थी
रवि ने अपना हाथ बढ़ाया
और गगन में मुझे उठाया
देखने लगा मैं रवि की छवि को।
सुरगण मुझे देखने आए
दिव्य नगाड़े थे बजाए
भूतल से जो उठा गगन में
गर्व हुआ मेरे मन में।
मुझे क्रूरता ने आ घेरा
तब देवों ने कहा, वहाँ पर
क्रूरों का क्या काम यहाँ पर।
देकर मुझे पाँव का झटका
पवन देव ने नीचे पटका
पड़ा-पड़ा पछता रहा हूँ
हरी घास में घुला जा रहा हूँ।

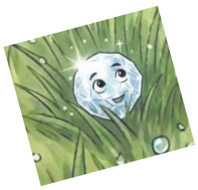

यह भी जानो :

क = क् + अ
का = क् + आ
प = प् + अ

शब्दों से स्वर एवं व्यंजन का विग्रह :
हाथ = ह् + आ + थ् + अ।
सूरत = स् + ऊ + र् + अ + त् + अ।
मोती = म् + ओ + त् + ई।
क्रूरता = क् + र् + ऊ + र् + अ + त् + आ।

अध्यापन संकेत : 'यह भी जानो' पर चर्चा करें। प्रत्येक व्यंजन वर्ण का उच्चारण स्वरों के मेल से ही संभव है, समझाएँ। स्वर, व्यंजन तथा अक्षरों का पारस्परिक संबंध स्पष्ट करते हुए अक्षरों के विग्रह का स्वाध्याय कराएँ। संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों की जानकारी दें। विद्‌यार्थी अपने विशेष सहपाठियों की मदद कर रहे हैं या नहीं, इसपर ध्यान दें।

शब्द सौरभ : ओला = आसमान से गिरने वाला बर्फ का छोटा गोला; सार = सारांश; सुरगण = देवगण; आर्द्रभाव = नमी; क्रूर = निर्दयी; तरल = द्रव।

मुहावरे : हाथ बढ़ाना = सहायता करना; कहीं का न रहना = किसी काम का न रहना।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

(क) ओला कैसे बनता है? इसपर वर्ग शिक्षक से सुनकर मित्रों से चर्चा करो।

(ख) 'घमंडी का सिर नीचा' से संबंधित कहानी सुनो और कक्षा में चर्चा करो।

(२) रसास्वादन करते हुए पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ, एक दिन जब था मुंडेर पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ, एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।
मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा, लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे, ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।
जब किसी ढब से निकल तिनका गया, तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा, एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

कविता का आशय ध्यान में रखते हुए उसके आधार पर कब, कहाँ, कौन, क्या, किसने जैसे प्रश्नवाचक शब्दों का उपयोग करते हुए पाँच प्रश्न बनाओ। उनके उत्तर अपनी स्वाध्याय पुस्तिका में लिखो:

(च) ....

(छ) ....

(ज) ....

(झ) ....

(ञ) ....

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

'मुझमें आर्द्रभाव था इतना, जल में हो सकता है जितना।'
'मैं मोती-जैसा निर्मल था, तरल किंतु अत्यंत सरल था।'

इन पंक्तियों का व्याख्यात्मक भावार्थ लेखन अपने शब्दों में करो।

(५) परखो स्वयं को :

इन अर्थोंवाली पंक्तियाँ कविता से ढूँढ़कर पढ़ो :

(ट) यहाँ निर्दयी लोगों की जरूरत नहीं है।

(ठ) मेरे मन का घमंड जमीन से आसमान तक छा गया।

(६) आओ, कौशल दिखाओ :

तुम्हारे मित्र/सहेली को किसी बात का घमंड हो गया है, उसे बिना बताए तुम उसका घमंड कैसे दूर करोगे, लिखो।

(७) एक कदम भाषा की ओर :

निम्न वर्णों और शब्दों से स्वर एवं व्यंजन का विग्रह करो :

घ = ... + ...

ठा = ... + ...

धुला = ... + ... + ... + ...

(८) आओ, कुछ रचो :

(त) आसमान, वर्षा, चाँद, बादल इन शब्दों के आधार पर पाँच-छह पंक्तियों की कविता लिखो।

(थ) 'अगर पेड़ बोलने लगे तो', वह क्या कहेगा, अपने शब्दों में लिखो।

(९) इस कविता से तुमने समझा : (आशय)

....

....

....

(१०) खेल-खेल में भाषा :

(प) कविता से खोजकर लिखो :

१. तुकांतवाले शब्द – ....

२. संयुक्ताक्षरवाले शब्द – ....

३. भविष्यकालवाले शब्द – ....

४. भूतकालवाली क्रियाएँ – ....

(फ) दिए गए पद में विरामचिह्न पहचानकर उनके नाम लिखो।

		विरामचिह्न	नाम
१. एक सफेद बड़ा-सा ओला,	–	....	....
था मानो हीरे का गोला!	–	....	....
२. पड़ा-पड़ा पछता रहा हूँ	–	....	....
हरी घास में घुला जा रहा हूँ।	–	....	....

(११) पाठ से आगे :

दी गई सूचना के अनुसार तीन सप्ताह में अलग-अलग प्रकल्प पूर्ण करो।

(य) पानी के पर्यायवाची शब्द (र) पानी में रहने वाले प्राणी

(ल) पानी में खिलने वाले/फलने वाले फूल-फल

नि:शुल्क वितरण के लिए

६. साहसी बेटी

– रजनीकांत शुक्ल

जन्म : १५ जनवरी १९६१, फर्रुखाबाद। (उ.प्र)
रचनाएँ : 'पैरों की हड़ताल', 'नन्हे जगमग तारे', 'जिंदगी तुझी से है' आदि।
सम्मान/पुरस्कार : अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्‍वारा सम्मानित।
इस कहानी में तन्वी ने अपनी निर्णय क्षमता और सूझ-बूझ से अपनी बहन की जान बचाई। यह पाठ हमें समय के अनुसार शीघ्र निर्णय लेने, सूझ-बूझ और साहसी कार्य करने की प्रेरणा देता है।

२० अगस्त, २०१२ को ईद का त्योहार था। महाराष्ट्र में पुणे के दत्तवाड़ी इलाके में मंदिर के बाहर चौक में लगी बेंचों पर लोग बैठे आपस में बातें कर रहे थे।

साढ़े सात साल की तन्वी ने देखा कि सड़क के उस पार एक अधबने दो मंजिला मकान के आस-पास उसके कुछ दोस्त खेल रहे थे। तन्वी भी उस ओर दौड़ पड़ी। छोटी बहन निर्मिति और पड़ोस का एक लड़का वेदांत भी उसके पीछे थे।

ईद की छुट्‍टी के कारण उस दिन मकान में एक-दो मजदूर ही काम कर रहे थे। बच्चे इकट्‍ठा हुए और 'चोर-सिपाही' खेलने लगे। चोर बना लड़का जोर-जोर से एक से लेकर सौ तक गिनती गिन रहा था- अट्‍ठानवे, निन्यानवे, सौ... मैं आऊँ?

बच्चे इधर-उधर छिपने के लिए भागने लगे। निर्मिति को कोई जगह न सूझी तो वह पहली मंजिल पर जाने वाली सीढ़ियों के नीचे छिपने के लिए घुसी। वहाँ अँधेरा था। सीढ़ियों के नीचे पानी का टैंक था। निर्मिति अचानक उसी टैंक में जा गिरी। 'छपाक' की आवाज सुनकर वेदांत और तन्वी दौड़े।

अध्यापन संकेत : उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का आदर्श वाचन करें। विद्‍यार्थियों से पाठ का मौन वाचन कराएँ। साहस कथा की विशेषताओं से उनको अवगत कराएँ। पाठ में वर्णित घटनाओं का क्रम बनाकर, मौखिक रूप से बताने के लिए कहें। साहस संबंधी कोई कहानी ढूँढ़ने और बताने के लिए कहें। समाचारपत्र, पत्रिकाओं में आए इस प्रकार के प्रसंग को पढ़कर अपना विचार व्यक्त करने के लिए सूचित करें। पिछली कक्षाओं में पढ़े सर्वनाम के आधार पर पाठ में सर्वनाम ढूँढ़ने के लिए कहें। वृत्तांत लेखन के मुद्‍दों से अवगत कराएँ। कहानी का सारांश बताने का अवसर दें। 'लिंग' विधान पर चर्चा करें।

तन्वी बिना एक भी पल गँवाए करीब सात फुट लंबे और इतने ही फुट चौड़े उस टैंक में कूद गई। उसका एक पैर वहाँ तली में जमा मिट्टी पर फिसला और निर्मिति के हाथ से जा टकराया।

पानी की गहराई को भूलकर उसने अपने दोनों हाथ नीचे की ओर डालकर निर्मिति को पकड़कर ऊपर खींचा। ऐसे में उसका संतुलन बिगड़ गया। खुद को सँभालने की कोशिश में टैंक का गंदा पानी उसकी नाक और मुँह में चला गया। टैंक के तल पर दोबारा पाँव जमाते हुए उसने फिर से उठने की कोशिश की। इस बार उसने निर्मिति को एक झटके में अपने सिर के ऊपर उठा लिया।

अब टैंक की सपाट दीवारों पर वह कैसे चढ़े, यह समझ नहीं पा रही थी। गले तक पानी में डूबी वह निर्मिति को कंधे पर बैठाए लगभग पाँच मिनट तक खड़ी थी। निर्मिति अपने हाथ-पाँव चलाती रो रही थी, जिससे तन्वी को सीधे खड़े होने में कठिनाई हो रही थी। बार-बार हिलने-डुलने से उसके मुँह में टैंक का गंदा पानी जा रहा था। बाकी साथी बच्चे वहाँ से डरकर भाग चुके थे।

उधर वेदांत सड़क पार करके अपने घर पहुँचा। उसने अपनी माँ भारती को यह सब बताया। भारती सीधे उस मकान की ओर दौड़ी। वहाँ उन्होंने देखा कि गंदे पानी में निर्मिति को कंधे पर बैठाए तन्वी का केवल सिर दिख रहा था। भारती ने निर्मिति और तन्वी को बाहर निकालना चाहा मगर वे उस तक नहीं पहुँच पाईं। हड़बड़ी में मदद के लिए वापस पलटीं तो फिसलकर गिर गईं। तभी एक मजदूर ने उन्हें देख लिया और चिल्लाता हुआ उनकी ओर दौड़ पड़ा।

यह देख मंदिर के पास बैठे लोग भी दौड़कर उन्हें बचाने के लिए लपके। उनमें से एक युवक संदीप ने उन दोनों को टैंक से बाहर निकाला। दोनों की ही हालत बहुत खराब थी लेकिन गनीमत हुई कि उनकी जान बच गईं। तन्वी को देश के राष्ट्रपति जी ने 'वीर बाल दिवस' पर 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' देकर सम्मानित किया।

यह भी जानो –

*** संयुक्त वर्ण**

क. खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए।
जैसे- ख्याति, कच्चा, व्यास, कुत्ता, सभ्य, श्लोक आदि।

ख. आधे होकर- (क और फ के संयुक्ताक्षर)
जैसे- संयुक्त, पक्का, दफ्तर, गफ्फार आदि।

ग. हल लगाकर (ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह)
जैस- वाङ्मय, उच्छ्वास, लट्टू, पाठ्य, बुड्ढा, बलाढ्य, विद्या, ब्रह्मा, आदि।

घ. र के प्रचलित तीन रूप-
जैसे - कर्म, प्रेम, राष्ट्र आदि।

शब्द सौरभ : संतुलन = समतोल; गनीमत = कठिन परिस्थिति में राहत की बात।

स्वाध्याय

(१) सुनो, सोचो और चर्चा करो।

(क) पाठ में आए इधर-उधर, चोर-सिपाही जैसे अन्य युग्म शब्द ढूँढ़कर अपने सहपाठी से चर्चा करो:

(ख) दिए गए संयुक्ताक्षर शब्दों को पढ़ो और इनमें किन वर्णों का मेल हुआ है, चर्चा करो और उच्चारण करके सुनाओ।

बच्चा, पुरस्कार, तन्वी, अगस्त, दत्तवाड़ी, त्योहार, इकट्ठा।

(ग) साहसी व्यक्ति में कौन-से गुण होते हैं, चर्चा करो।

(२) रसास्वादन करते हुए पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

"सच है, विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते।

– 'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर'

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(च) निर्मिति के साथ दुर्घटना कैसे घटी?

(छ) निर्मिति को बचाने के लिए तन्वी ने क्या किया?

(ज) तुमको तन्वी का कौन-सा गुण सबसे अच्छा लगा?

(झ) यदि तुम तन्वी की जगह होते तो क्या करते?

(ञ) कहानी का शीर्षक कितना उपयुक्त है और क्यों?

(४) परखो स्वयं को :

इस पाठ को पढ़कर वर्णित घटना का घटनाक्रम लिखो:

(ट) 'छपाक' की आवाज सुनकर तन्वी और वेदांत दौड़ पड़े।

(ठ) सारे बच्चे चोर-सिपाही खेलने लगे।

(ड) निर्मिति को कंधे पर बिठाए तन्वी लगभग पाँच मिनट तक खड़ी रही।

(ढ) तन्वी को राष्ट्रपति ने 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' देकर सम्मानित किया।

(ण) वेदांत दौड़ते हुए सड़क पार कर अपने घर पहुँचा।

(५) आओ, कुछ रचो :

परिचित किसी बहादुर बालक के बारे में आठ से दस पंक्तियों का निबंध लिखो।

(६) खेल-खेल में भाषा :

इस शब्द पहेली में कुछ राष्ट्रीय पुरस्कारों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखो:

रा	मां	व	ण	अ	शो	क	च	क्र	
स	ष्ट्री	घ	इ	र्जु		ब	ज	पु	
प		य	ज्ञा	न	पी	ठ		स्का	
प	क		बा		द्		बा	क्र	
द्	प	आ	फ	ल	झ		भू	च	शो
म	स	क	ई	श्री	पु		ष	श्री	च
भू	ग	प	र	म	वी	र	च	क्र	
ष	भ	ज़	व	द्			स्का	न	ज्ञा
ण	ज्ञा	ल	म	प	भा	र	त	र	त्न

१. भारतरत्न

२. पद्मश्री

३. पद्मभूषण

४. परमवीरचक्र

५. अशोकचक्र

६. ज्ञानपीठ

७. अर्जुन

८. राष्ट्रीय बाल पुरस्कार

(७) आओ, कौशल दिखाओ :

निम्न क्रियाओं के अनुसार अभिनय करो - दौड़ लगाना, इधर-उधर छिपना, संतुलन बिगड़ना, पाँव जमाना, हाथ-पाँव चलाना, पुरस्कार देना।

(८) एक कदम भाषा की ओर:

नीचे दिए परिच्छेद में आए संज्ञा, सर्वनाम, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग शब्दों को अपनी स्वाध्याय पुस्तिका में लिखो :

कल मेले में मुझे मेरा मित्र रमेश मिला। वह मुझसे मिलकर बहुत खुश हुआ। हमने वहाँ बहुत सारी वस्तुएँ देखीं। वहाँ हमें एक अपरिचित व्यक्ति ने मिठाई खाने को कहा। मैंने मना कर दिया क्योंकि मेरी माँ ने मुझसे कहा था कि किसी अनजान के हाथ से कुछ मत खाना।

(९) निपुण बनो :

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर तुम्हारी पाठशाला में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह का वृत्तांत लेखन करो। (शीर्षक, स्थल और समय, उद्देश्य, अतिथि, घटनाक्रम, समापन।)

(१०) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

(११) पाठ से आगे :

'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' प्राप्त बच्चों के बारे में समाचारपत्र/पुस्तक पढ़ो तथा उनमें कौन-से गुण समान रूप से दिखाई देते हैं, इसपर चर्चा करो।

पढ़ो और समझो :

७. चूहा और मैं

– हरिशंकर परसाई

जन्म : २२ अगस्त १९२४, होशंगाबाद, म.प्र। **मृत्यु :** १० अगस्त १९९५, जबलपुर म.प्र।
प्रमुख रचनाएँ : 'विकलांग श्रद्‌धा का दौर', 'भूत के पाँव पीछे', 'मुक्तिबोध: एक संस्मरण' आदि।
सम्मान/पुरस्कार : विकलांग श्रद्‌धा का दौर' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।
इस निबंध के माध्यम से चूहे की तरह हमें भी अपने अधिकारों के लिए जागरूक रहकर लड़ने की प्रेरणा दी है।

यह कहानी स्टीन बेक के लघु उपन्यास 'ऑफ मेन एंड माउस' से अलग है। चाहता तो लेख का शीर्षक 'मैं और चूहा' रख सकता था, पर मेरे अहंकार को इस चूहे ने नीचे कर दिया है। जो मैं नहीं कर सकता, वह मेरे घर का यह चूहा कर लेता है। जो इस देश का सामान्य आदमी नहीं कर पाता, वह इस चूहे ने मेरे साथ करके बता दिया।

घर में एक मोटा चूहा है। जब छोटे भाई की पत्नी थी तब घर में खाना बनता था। इस बीच पारिवारिक दुर्घटनाओं, बहनोई की मृत्यु आदि के कारण हम लोग बाहर रहे। चूहे ने अपना यह अधिकार मान लिया था कि मुझे खाना इसी घर में मिलेगा। ऐसा अधिकार आदमी भी अभी तक नहीं मान पाया।
लगभग पैंतालीस दिन घर बंद रहा। मैं जब अकेला लौटा, घर खोला तो देखा कि चूहे ने काफी 'क्रॉकरी' फर्श पर गिराकर फोड़ डाली है। क्रॉकरी और डिब्बों में खाना तलाशता होगा। उसे खाना नहीं मिलता होगा तो वह पड़ोस में कहीं कुछ खा लेता होगा और जीवित रहता होगा पर घर उसने नहीं छोड़ा। उसने इसी घर को अपना घर मान लिया था।

जब मैं घर में घुसा, बिजली जलाई तो मैंने देखा कि वह खुशी से चहकता हुआ यहाँ-से-वहाँ दौड़ रहा है। वह शायद समझ गया कि अब इस घर में खाना बनेगा, डिब्बे खुलेंगे और उसकी खुराक उसे मिलेगी।

दिन भर वह आनंद से सारे घर में घूमता रहा। मैं देख रहा था। उसके उल्लास से मुझे अच्छा ही लगा पर घर में खाना बनना शुरू नहीं हुआ। मैं अकेला था। बहन के यहाँ जो पास में ही रहती है, दोपहर को भोजन कर लेता। रात को तो बहन डिब्बा भेज देती। खाकर मैं डिब्बा बंद करके रख देता। चूहाराम निराश हो रहे थे। सोचते होंगे-यह कैसा घर है? आदमी आ गया है। रोशनी भी है पर खाना नहीं बनता। खाना बनता तो कुछ बिखरे दाने या

अध्यापन संकेत : किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें। विद्यार्थियों से मुखर एवं शुद्‌ध वाचन कराएँ। प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के सभी मुद्‌दों को स्पष्ट करें। इस निबंध के माध्यम से सामान्य एवं विशेष विद्‌यार्थियों को व्यावहारिक उदाहरण द्‌वारा व्यंग्य विधा समझाएँ। पाठ से व्यंग्य के वाक्य ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करें। पाठ में आए अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों के अंतर को समझाते हुए उनका उच्चारण करवाएँ। तदनुसार उनका लेखन करवाएँ। विशेष विद्‌यार्थियों के लिए सांकेतिक चिह्नों का उपयोग भी करें। आवश्यकतानुसार उनका मार्गदर्शन करें। पाठ में आए स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्दों की सूची बनवाएँ।

रोटी के टुकड़े उसे मिल जाते।

मुझे एक नया अनुभव हुआ। रात को चूहा बार-बार आता और सिर की तरफ मच्छरदानी पर चढ़कर कुलबुलाता। रात में कई बार मेरी नींद टूटती। मैं उसे भगाता। थोड़ी देर बाद फिर आ जाता और मेरे सिर के पास हलचल करने लगता।

वह भूखा था मगर उसे सिर और पाँव की समझ कैसे आई ? वह मेरे पाँवों की तरफ गड़बड़ नहीं करता था। सीधे सिर की तरफ आता और हलचल करने लगता। एक दिन वह मच्छरदानी में घुस गया। मैं बहुत परेशान। क्या करूँ ? इसे मारूँ और यह किसी अलमारी के नीचे मर गया तो सड़ेगा और सारा घर दुर्गंध से भर जाएगा। फिर भारी अलमारी हटाकर इसे निकालना पड़ेगा।

चूहा दिन भर भड़भड़ाता और रात को मुझे तंग करता। मुझे नींद आती मगर चूहाराम फिर मेरे सिर के पास भड़भड़ाने लगते।

आखिर एक दिन मुझे समझ में आया कि चूहे को खाना चाहिए। उसने इस घर को अपना घर मान लिया है। वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। वह रात को मेरे सिरहाने आकर शायद यह कहता है- "क्यों बे, तू आ गया है। भरपेट खा रहा है मगर मैं भूखा मर रहा हूँ। मैं इस घर का सदस्य हूँ। मेरा भी हक है। मैं तेरी नींद हराम कर दूँगा।" तब मैंने उसकी माँग पूरी करने की तरकीब निकाली।

रात को मैंने भोजन का डिब्बा खोला तो पापड़ के कुछ टुकड़े यहाँ-वहाँ डाल दिए। चूहा कहीं से निकला और एक टुकड़ा उठाकर अलमारी के नीचे बैठकर खाने लगा। भोजन पूरा करने के बाद मैंने रोटी के कुछ टुकड़े फर्श पर बिखरा दिए। सुबह देखा कि वह सब खा गया है।

एक दिन बहन ने चावल के पापड़ भेजे। मैंने तीन-चार टुकड़े फर्श पर डाल दिए। चूहा आया, सूँघा और लौट गया। उसे चावल के पापड़ पसंद नहीं। मैं चूहे की पसंद से चमत्कृत रह गया। मैंने रोटी के कुछ टुकड़े डाल दिए। वह एक के बाद एक टुकड़ा लेकर जाने लगा।

अब यह प्रतिदिन का काम हो गया। मैं डिब्बा खोलता तो चूहा निकलकर देखने लगता। मैं भोजन करके रोटी के टुकड़े फर्श पर डाल देता। वह रात को उन्हें खा लेता और सो जाता।

इधर मैं भी चैन की नींद सोता। चूहा मेरे सिर के पास गड़बड़ नहीं करता। फिर वह कहीं से अपने एक भाई को ले आया। कहा होगा- "चल रे, मेरे साथ उस घर में। मैंने उस रोटीवाले को तंग करके, डराकर खाना निकलवा लिया है। चल, दोनों खाएँगे। उसका बाप हमें खाने को देगा वरना हम उसकी नींद हराम कर देंगे। हमारा हक है।"

अब दोनों चूहाराम मजे में खा रहे हैं।

मगर मैं सोचता हूँ- चूहा तो अपनी रोटी के हक के लिए मेरे सिर पर चढ़ जाता है, मेरी नींद हराम कर देता है- आदमी कब चूहे की तरह आचरण करेगा ? वह कब अपने कर्तव्यों के साथ-साथ अधिकारों के प्रति भी जागरूक होगा ?

अध्यापन संकेत : कोई हास्य घटना/प्रसंग सुनाकर विद्यार्थियों को चुटकुले सुनाने के लिए प्रेरित करें। विशेषण क्या होता है, समझाएँ। उनको पाठ में आए विशेषण, विरामचिह्न पहचानने के लिए प्रोत्साहित करके उनके नाम लिखवाएँ।

शब्द सौरभ : उल्लास = खुशी; खुराक = भोजन की मात्रा।

मुहावरे : **तंग करना** = सताना; **नींद हराम करना** = नींद खराब करना; **चैन की नींद सोना** = सुख से सोना; **चमत्कृत रह जाना** = आश्चर्यचकित रह जाना; **कुलबुलाना** = परेशान होना, हलचल करना।

स्वाध्याय

(१) सुनो, सोचो और चर्चा करो :

(क) चूहों से होने वाली हानि।

(ख) विद्‌यार्थियों के अधिकार और कर्तव्य।

(२) पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

पाठ्‌यपुस्तक में दी गई संविधान की उद्‌देशिका का मुखर वाचन करो। संदर्भ पुस्तकों की सहायता से उसमें आए मूल्यों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करो।

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

पाठ के आधार पर पाँच प्रश्न बनाकर उत्तर लिखो:
(प्रश्न बनाते समय क्या, कब, कहाँ, कैसे आदि प्रश्नार्थक शब्दों का प्रयोग करो।)

(च) ....

(छ) ....

(ज) ....

(झ) ....

(ञ) ....

(४) खेल-खेल में भाषा :

दी गई शब्द पहेली से बेमेल शब्द ढूँढ़कर उसपर गोल ◯ करो:

(ट)	१. मैं	२. तुम	३. अच्छा	४. इसने
(ठ)	१. सुंदर	२. कंजूस	३. लाल	४. उसके
(ड)	१. पुणे	२. संतरा	३. मेज	४. भला

(५) आओ, कौशल दिखाओ :

(त) आपके घर में बहुत सारे चूहे परेशान कर रहे हैं। कक्षा में चर्चा करके चूहों से होने वाली परेशानियाँ कम करने के उपाय लिखो।

(थ) पाठशाला परिसर में आवारा कुत्तों से होने वाली परेशानियों की चर्चा करो और उन्हें दूर करने के उपाय ढूँढ़ो।

(६) ढूँढ़ो पंक्तियों का ठिकाना :

'हमें अपनी जिम्मेदारियों और अधिकारों के लिए सजग रहना चाहिए।' इस वाक्य से मिलते-जुलते अर्थवाली पंक्तियाँ पाठ से ढूँढ़कर; उसके आधार पर संदेश, घोषवाक्य बताओ।

(७) एक कदम भाषा की ओर :

राम **अच्छा** लड़का है। कक्षा में **चालीस** विद्‌यार्थी उपस्थित थे। उसे **एक** किलो चीनी चाहिए। **वह** आदमी व्यवहार कुशल है।

उपर्युक्त वाक्य पढ़ो। **मोटे** टाईप वाले शब्द विशेषण हैं। इनके बारे मे शिक्षक से चर्चा करो। इस प्रकार के विशेषणयुक्त वाक्य कॉपी में लिखो।

(८) आओ, कुछ रचो :

चित्र का निरीक्षण करो और उसपर आधारित आठ-दस पंक्तियों का निबंध अपनी स्वाध्याय पुस्तिका में लिखो:

(९) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

....

(१०) जुड़ो सबसे :

एक नागरिक के रूप में हमारे अधिकार और कर्तव्य क्या हैं? इस संबंध में पुस्तकालय से जानकारी प्राप्त करो और बताओ।

(११) पाठ से आगे :

हरिशंकर परसाई का कोई अन्य निबंध पढ़ो और उसपर अपने विचार प्रस्तुत करो।

नि:शुल्क वितरण के लिए

८. बूझो तो जानें

– *रीमा पाराशर*

ना हिंदू ना मुसलमान था,
परम संत ज्ञानी था।
भक्तिकाल का वह फकीर,
जो उपदेशक मानी था।
काम जुलाहे का करता था
चादर खुद ही बीनी।
कहो, कौन जिसने चदरिया
'ज्यूँ की त्यूँ' धर दीनी?

जिनकी वाणी सुनकर सबका
रक्त उबल उठता है।
जिनको पूरा युग ही अपना,
'नेताजी' कहता है।
आजादी के लिए जिन्होंने,
दिया खून का नारा।
अब तक जिनकी राह देखता,
हिंदुस्तान हमारा।

पुत्र पीठ पर बाँध युद्‌ध में,
थीं तलवार चलाती।
काट-काट सिर अंग्रेजों के,
थीं इतिहास बनाती।
अंग-अंग कट गए थे उनके,
फिर भी युद्‌ध किया था।
कहो, कौन वह रानी जिसने
झाँसी नहीं दिया था?

शिक्षा और संस्कृति युति का
था प्रसिद्‌ध वह नायक।
बंग विभूति विश्वकवि न्यारा,
गीतांजलि का गायक।
'जनगण' गान रचा था,
जिसने शांति निकेतनवाला।
किसके गीतों की रचना को,
नोबेल मिला निराला?

अध्यापन संकेत : पहेलियों का मुखर वाचन कराएँ। उन्हें पहेलियाँ बूझने के लिए कहें। पहेलियों के आशय पर चर्चा करें। साथ ही; पहेली विधा की विशेषताओं के बारे में विद्यार्थियों को बताएँ। देशभक्तों और संतों के कार्य की जानकारी देकर उन्हें अपने विचार प्रकट करने के लिए प्रेरित करें। इस प्रकार की अन्य पहेलियाँ ढूँढ़ने, बोलने और बनाने के लिए प्रेरित करें।

यह भी जानो :

सूर्य की शोभा उसके तेज प्रकाश से है। पृथ्वी की शोभा हरियाली से है। जैसे नदी की शोभा उसके कल-कल बहते जल से है, वैसे ही भाषा और साहित्य की शोभा अलंकारों से है।

ये अलंकार भाषा की शोभा बढ़ाते हैं।

जैसे - चाँद सुंदर है। इस वाक्य को हम अधिक सुंदर बना सकते हैं। चमकीला चाँद चाँदी जैसा चमक रहा है। 'च' अक्षर के बार-बार आने से यह वाक्य अधिक सुंदर लगने लगा है। 'रघुपति राघव राजा राम' अब यह पंक्ति पढ़ो, इसमें 'र' अक्षर कई बार आया है। इसे अक्षरों की आवृत्ति कहते हैं। इस प्रकार जब अक्षरों की पुनरावृत्ति हो तो वहाँ अनुप्रास अलंकार बनता है। अनुप्रास में वर्ण एक से अधिक बार आते हैं। जैसे -

अनुप्रास : वर्ण या वर्णों की पुनरावृत्ति -

उदाहरण - १

सर-सर सरिता से सुनो सरस सलिल संगीत,
छम-छम बूँदें नाचतीं मन में महके प्रीत।
कल-कल करता बढ़ रहा निर्मल नदिया नीर,
मंद मधुर मुस्कान संग, ज्यों ममत्व का चीर।

उदाहरण - २

जल जो न होता तो जग जाता जल।

यहाँ पहले उदाहरण में 'स, छ, क, ल, न, म' और दूसरे में 'ज' वर्ण बार-बार आए हैं।

अर्थात इन वर्णों की आवृत्ति हुई है। ये अनुप्रास अलंकार के सुंदर उदाहरण हैं।

अध्यापन संकेत : भाषा साहित्य में अलंकार क्या होता है, चर्चा करें। अलंकार और उनके भेद की जानकारी दें। ऊपर दिए गए उदाहरणों द्‌वारा अनुप्रास अलंकार क्या होता है, समझाएँ। अनुप्रासवाले वाक्य, कविता बोलने के लिए प्रेरित करें। 'नोबेल पुरस्कार' की जानकारी दें। राष्ट्रगान के रचनाकार के बारे में चर्चा करें। 'टेली मानस योजना' अभिभावकों एवं विद्‌यार्थियों को समझाएँ और आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें। हेल्पलाइन नंबर - १४४१६।

शब्द सौरभ : जुलाहा = कपड़ा बुनने वाला; रक्त = खून; युति = मिलन; बंग विभूति = बंगाल का महान व्यक्ति; निकेतन = घर, निवास स्थान।

मुहावरे : ज्यूँ की त्यूँ रखना = जैसी थी वैसी ही छोड़ना; रक्त उबलना = अत्यधिक क्रोध आना।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

परिवार के बड़े सदस्यों से उनके द्‌वारा उनकी बचपन की बूझी पहेलियों के बारे में सुनो, प्रश्न पूछो और उनकी चर्चा करो।

(२) पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

पहेलियों की विशेषता को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित पहेली रसास्वादन करते हुए पढ़ो और पहेली बुझाओ :

परम पराक्रमी छावा वह, शेरों के जबड़े खुलवाता
लड़ाई एक न हारा वह, ऐसी युक्ति लगाता।
बुधभूषण का लेखक वह, सोलह भाषा का ज्ञाता
बूझो-बूझो कौन वीर वह, जो दुश्मन पर था छा जाता?

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) पहली पहेली में आए संत के बारे में क्या जानते हो?

(ख) भारतीय वीर महिलाओं के नाम बताओ।

(ग) युद्‌ध से किस प्रकार की हानियाँ होती हैं?

(घ) इन पहेलियों में कौन-से संदेश छुपे हुए हैं, लिखो।

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

निम्न पंक्तियों के अर्थ पर चर्चा करो और अपनी भाषा में अर्थ लिखो :

(च) ना हिंदू ना मुसलमान था।

(छ) आजादी के लिए जिन्होंने, दिया खून का नारा।

(ज) नोबेल मिला निराला।

(५) **परखो स्वयं को : (पहेली बूझो)**

हरे रंग की उसकी काया, लाल मकान में काला शैतान समाया,
गर्मी में आता, सर्दी में गायब, उत्तर जल्दी बताओ नायब।

(६) **आओ, कौशल दिखाओ :**

विलोम पद (उल्टा-पुल्टा, पढ़ने-लिखने पर भी एक समान) वाले शब्द लिखो:

(ट) जहाज – जहाज (ठ) .... – ....

(ड) .... –............ (ढ) .... – ....

(७) **आओ, कुछ रचो :**

वस्तु/प्राणी/प्रकृति से किसी एक विषय का चुनाव करके उसपर २-३ पंक्तियों में पहेली तैयार करके लिखो।

(८) **इस पाठ से तुमने समझा :**

....

....

....

इस प्रकार की अन्य पहेलियाँ पढ़कर उनके आशय लिखो।

(९) **निपुण बनो :**

देशभक्ति के घोषवाक्य स्वयं तैयार करो और उन्हें पोस्टर के रूप में शिक्षक के मार्गदर्शन से कक्षा में चिपकाओ।

(१०) **खेल-खेल में भाषा :**

(त) अपने मित्र के अच्छे स्वभाव/गुणों का विचार करके पहेली बनाओ।

(थ) एक ही वर्ण की पुनरावृत्ति बार-बार हो, ऐसे वाक्य या पंक्तियाँ बनाकर सहपाठी को सुनाओ।

(११) **पाठ से आगे :**

(प) माँ, पिता जी से पुरानी पहेलियों की जानकारी लेकर उनका संकलन करो। उसे कक्षा की हस्तलिखित पत्रिका में संकलित करो।

(फ) अंतरजाल से अमीर खुसरो की एक पहेली ढूँढ़कर कक्षा में पूछो।

पढ़ो और समझो :

९. कच्चा घड़ा

– शकुंतला अग्रवाल

जन्म : १९६२ साँपला, हरियाणा।
प्रमुख रचनाएँ : 'याद बहुत आएँगे', 'गुनहगार कौन' आदि।

इस एकांकी में रचनाकार ने स्पष्ट किया है कि कुछ बनने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। साथ ही जीवन में हमें हर संघर्ष के लिए तैयार रहना चाहिए।

पात्र : पिता जी :– तन्मय के पिता
तन्मय :– छठी कक्षा का विद्‌यार्थी, आयु लगभग १२ वर्ष।
सुनार :– गहने बनाने में निपुण, ३५ वर्षीय व्यक्ति।
कुम्हार :– घड़े बनाने में निपुण, ४० वर्षीय व्यक्ति।
मूर्तिकार :– पत्थर को आकार देने में निपुण, ५० वर्षीय व्यक्ति।

(पर्दा उठता है)

पहला दृश्य : संध्या का समय

(विचारों में खोया तन्मय बैठक में सोफे पर बैठा है। उसकी माता जी खाना बनाने में व्यस्त हैं। कार्यालय से पिता जी जब घर आते हैं तो अपने बेटे तन्मय को उदास देखकर पूछते हैं।)

पिता जी : 'बेटा! उदास क्यों हो?'

तन्मय : 'कुछ नहीं, पिता जी!'

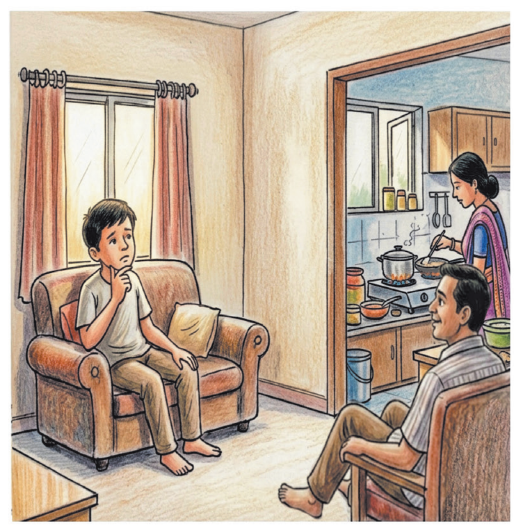

पिता जी : कुछ तो है, अपने पिता को नहीं बताओगे?

तन्मय : मैं कल विद्‌यालय नहीं जाऊँगा पिता जी!

पिता जी : यह तो गलत बात है, बेटा! विद्‌यालय क्यों नहीं जाओगे?

तन्मय : वह गणितवाले गुरु जी हैं ना, वे आज मुझपर गुस्सा हुए। हालाँकि उन्होंने मुझे प्यार से समझाया तो भी अब मैं विद्‌यालय नहीं जाऊँगा। आप मेरा दाखिला दूसरे विद्‌यालय में करवा दीजिए।

पिता जी : तन्मय बेटा! तुमने कोई गलती की होगी तभी गुरु जी तुम पर गुस्सा हुए होंगे। बिना कारण तो कोई गुस्सा नहीं होगा।

अध्यापन संकेत : एकांकी का आदर्श वाचन करें। विद्‌यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ। एकांकी विधा की विशेषता के बारे में उनको अवगत कराएँ। एकांकी का कक्षा/विद्‌यालय में नाट्यीकरण कराएँ। सर्वनाम के सभी प्रकारों को समझाएँ। सर्वनाम की पुनरावृत्ति कराएँ। सर्वनाम के वाक्यों का अभ्यास कराएँ। समय पर गृहकार्य करने की आवश्यकता पर चर्चा कराएँ।

तन्मय : (जोर से) मैं किसी का गुस्सा नहीं सहूँगा।

(पिता जी सोचने लगे कि इस तरह तो तन्मय के कदम गलत दिशा में पड़ जाएँगे। इसको समझाना आवश्यक है। कुछ विचार करके पिता जी तन्मय से आगे चर्चा करते हैं।)

पिता जी : तुम मेरी बात मानोगे?

तन्मय : जी पिता जी! अवश्य मानूँगा।

पिता जी : ठीक है बेटा! आज हम दोनों घूमने चलते हैं। तुम्हारी समस्या पर हम वापस आकर विचार करेंगे।

तन्मय : ठीक है, पिता जी!

दूसरा दृश्य

(पिता जी तन्मय को कुम्हार के यहाँ लेकर आते हैं। कुम्हार चाक पर काली मिट्टी के लोंदे को अपने हाथों से घड़े का आकार दे रहा है। जब घड़ा बन जाता है तो कुम्हार घड़े को उतारकर उसे थोड़ा सूखने देता है। फिर एक हाथ अंदर रखता है और दूसरे हाथ से घड़े को बाहर से पीटता है। उसके बाद एक सुंदर और मजबूत घड़ा बनकर तैयार हो जाता है। यह सब देखकर तन्मय उत्सुकता से पिता जी से प्रश्न करता है।)

तन्मय : पिता जी! यह कुम्हार मिट्टी से कितना सुंदर घड़ा बना देता है! लेकिन एक बात समझ नहीं आई कि यह घड़े को क्यों पीट रहा है?

पिता जी : बेटा! कुम्हार घड़े को मजबूत और दोषरहित बनाने के लिए उसको ऊपर से पीटता है लेकिन अंदर अपना हाथ रखे रहता है जिससे उसमें कोई छिद्र नहीं रहे, टूटे नहीं। एक पक्का घड़ा बनकर तैयार हो।

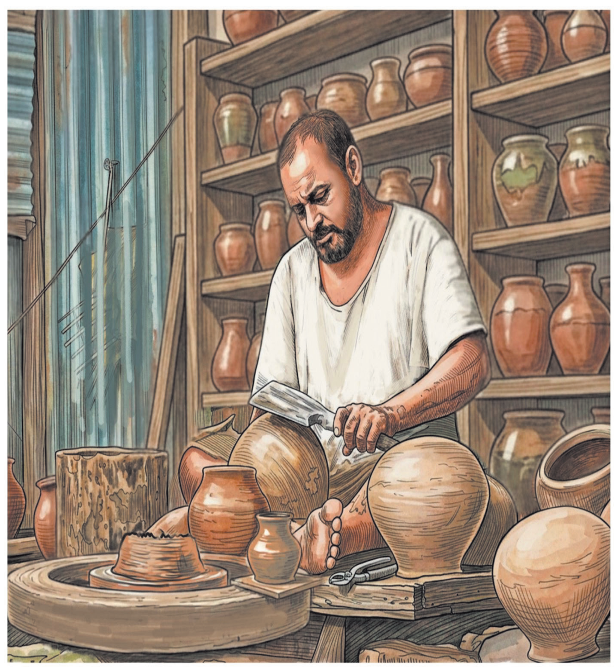

तन्मय : वह आग कैसी है? शायद कुछ जल रहा है?

पिता जी : वहाँ, आवाँ जल रहा है, उसमें घड़े पक रहे हैं। इसके बाद ही घड़े ठंडा पानी देने लायक बनेंगे।

तन्मय : ओह! इतना सब करना पड़ता है।

पिता जी : हाँ, बेटा! कुछ बनने के लिए कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ता है। आओ चलें।

तीसरा दृश्य

(पिता जी, तन्मय को लेकर एक सुनार की दुकान पर आ जाते हैं। वहाँ सुनार सोने को तपा रहा है।)

तन्मय : पिता जी! यहाँ क्यों आए हैं? माँ के लिए कुछ खरीदना है क्या?

पिता जी : नहीं, बेटा! तुमको यह दिखाने के लिए कि गहने कैसे बनाए जाते हैं।

तन्मय : (तनिक झल्लाते हुए) पिता जी! आप भी ना, मुझे गहने बनाना थोड़े ही सीखना है, मुझे तो इंजीनियर बनना है। चलिए, घर चलते हैं।

पिता जी : बेटा! तुम्हें क्या बनना है, यह अभी सोचने का उचित समय नहीं है। तुमने वचन दिया था कि तुम मेरी बात मानोगे। अपनी बात पर कायम रहो और चुपचाप देखो, सुनार क्या और कैसे कर रहा है। मैं तुमसे प्रश्न पूछूँगा तब जवाब देना है।

तन्मय : जी, पिता जी!

(पिता जी दुकान से बाहर आकर ...)

पिता जी : तन्मय! बताओ तो तुमने क्या देखा?

तन्मय : सुनार सोने को तपा रहा था। सोना आग में तपकर ही प्रखर हुआ है, पिता जी।

पिता जी : तन्मय! दुकान में जितने भी गहने हैं, वह सब सोने के तपने के बाद ही बने हैं।

तन्मय : अच्छा! सोना जब तक तपेगा नहीं, गहने बनेंगे नहीं?

पिता जी : हाँ, बेटा! कुछ बनने के लिए तपना पड़ता है। आओ अब चलते हैं।

चौथा दृश्य

(पिता जी तन्मय को लेकर एक मूर्तिकार के यहाँ पहुँच जाते हैं। वहाँ मूर्तिकार छेनी से पत्थर को कुछ आकार देने की कोशिश कर रहा होता है।)

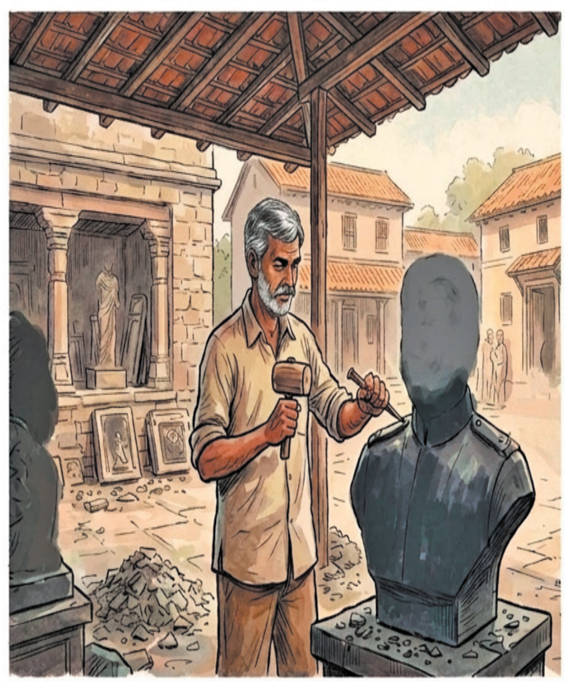

तन्मय : (उत्सुकता से पूछता है) पिता जी! यह आदमी पत्थर क्यों तोड़ रहा है, इससे इसे क्या मिलेगा?

पिता जी : यह पत्थर तोड़ नहीं रहा बल्कि छैनी और हथौड़े से पत्थर को तराशकर मूर्ति का निर्माण कर रहा है जिसको बेचकर यह अपनी आजीविका चलाता है।

तन्मय : (आश्चर्य से) ओ, हो! समझा।

पिता जी : (मूर्तिकार से) आप मुझे एक मूर्ति दिखा सकते हैं क्या?

मूर्तिकार : आइए, अंदर चलते हैं।

(पिता जी और तन्मय मूर्तिकार के साथ अंदर आ जाते हैं, जहाँ मनमोहक मूर्तियाँ रखी हुई हैं।)

तन्मय : वाह! इतनी सुंदर-सुंदर मूर्तियाँ, भगवान जी की भी है। पिता जी! लड्डू गोपाल की भी है लेकिन यह एक मूर्ति टूटी हुई क्यों है?

पिता जी : बेटा! यह पत्थर चोट सह नहीं पाया और टूट गया। जो चोट सह गया, वह मूर्ति बन गया। आओ, अब हम घर चलते हैं। काफी देर हो गई घूमते हुए। तुम भी थक गए होगे।

तन्मय : पिता जी! मेरे एक संशय को दूर कर दीजिए, बाद में हम चलेंगे घर।

पिता जी : कहो बेटा! क्या संशय है?

तन्मय : पिता जी! मुझको न मूर्तिकार बनना है, न ही सुनार की तरह गहने बनाने हैं और न ही घड़ा बनाना है। फिर भी आपने मुझे यह सब दिखाया अर्थात इसके पीछे कोई तो उद्देश्य है। मुझे वही जानना है।

पिता जी : चोटें सहकर एक पत्थर भगवान बन जाता है, बेटा! एक कच्चा घड़ा चोट सहकर पक्का घड़ा बन जाता है, सोना तपकर प्रखर हो जाता है। यह संभव इसलिए हो पाया क्योंकि इन सबमें अपार सहनशक्ति थी। ऐसे ही तुम, अभी कच्चा घड़ा हो जिसको गुरुजन अपने स्नेह की डाँट द्वारा एक पक्का घड़ा बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

तन्मय : जी पिता जी! मैं समझ गया, आपने मुझे इसीलिए यह सब दिखाया कि मुझे सीख मिल सके। बड़े एवं गुरुजन हमारी गलती पर ही गुस्सा करते हैं, समझाते हैं क्योंकि वह हमको योग्य व्यक्ति बनाना चाहते हैं। मुझे अपने गुरु जी से कोई शिकायत नहीं, मैंने कई दिनों से गृहकार्य नहीं किया था इसी कारण उन्होंने मुझपर गुस्सा किया था। उन्होंने तो मुझे अच्छी तरह समझाया भी था। अब मुझे समझ में आ गया है। मैं आज अपना गृहकार्य पूर्ण कर लूँगा। कल विद्यालय जाऊँगा और गुरु जी से क्षमा भी माँगूँगा।

पिता जी : शाबाश बेटा! आओ, अब घर चलें। (पर्दा गिरता है।)

समूह में : गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥

यह भी जानो : सर्वनाम

तुम जरा सुनो। आज मैं बहुत खुश हूँ। बहुत दिनों बाद तुम्हारा भाई मुझसे मिलने आ रहा है। कई वर्षों के बाद वह दिल्ली से लौट रहा है। तुम्हीं ने मेरी दोस्ती उससे कराई थी। उसने मुझे फोन करके बताया कि वह कुछ दिन मेरे और तुम्हारे साथ रहना चाहता है।

अध्यापन संकेत : ऊपर दिए गए परिच्छेद का मौन एवं सूक्ष्म वाचन कराएँ। इसमें आए सर्वनाम शब्दों की सूची बनवाएँ। ये सर्वनाम शब्द वाक्य में क्या काम कर रहे हैं; इस बारे में चर्चा करते हुए उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, अन्यपुरुष वाचक सर्वनाम के अनुसार वर्गीकरण समझाएँ। ऊपर परिच्छेद में तीन प्रकार के पुरुष आए हैं। बोलने वाला या वक्ता, सुनने वाला अर्थात श्रोता और जिसके बारे में बात की जा रही है अर्थात अन्य। ये सभी पुरुषवाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम की विधिवत जानकारी दें। विद्यार्थियों को इस तरह के वाक्य बनाने में सहयोग करें। विशेष विद्यार्थियों को चित्रों के माध्यम से संवाद लेखन हेतु सहायता करें।

शब्द सौरभ : लोंदा = गीली मिट्‌टी का गोला; कुम्हार = मिट्‌टी के बरतन बनाने वाला;आवाँ = मिट्‌टी के बर्तन पकाने वाली भट्‌ठी; आजीविका = रोजगार, व्यवसाय। उद्‌देश्य = हेतु। श्रेष्ठ = उत्तम।

मुहावरे : नजरें गड़ाना = ध्यान केंद्रित करना।

स्वाध्याय

(१) सुनो, सोचो और चर्चा करो।

(क) यदि अध्यापक ने समझाना बंद कर दिया तो....

(ख) अनुशासन की आवश्यकता।

(ग) वाहक अगर यातायात के नियमों का पालन नहीं करेंगे तो क्या होगा?

(घ) इस पाठ की विधा का प्रकार कौन-सा है? (कहानी, कविता, नाटक)।

(२) पढ़ो और समझकर बढ़ो :

पत्र-पत्रिकाओं में छपे किसी खिलाड़ी के जीवन प्रसंगों को पढ़कर अपना मत व्यक्त करो।

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

एकांकी और अपने अनुभवों से पाँच प्रश्न तैयार करो। (इनके उत्तर तीन से चार पंक्तियों में होने चाहिए।)

(च) .... (छ) ....

(ज) .... (झ) ....

(ञ) ....

(४) चित्र कुछ कहते हैं :

चित्र देखकर कहानी लिखो :

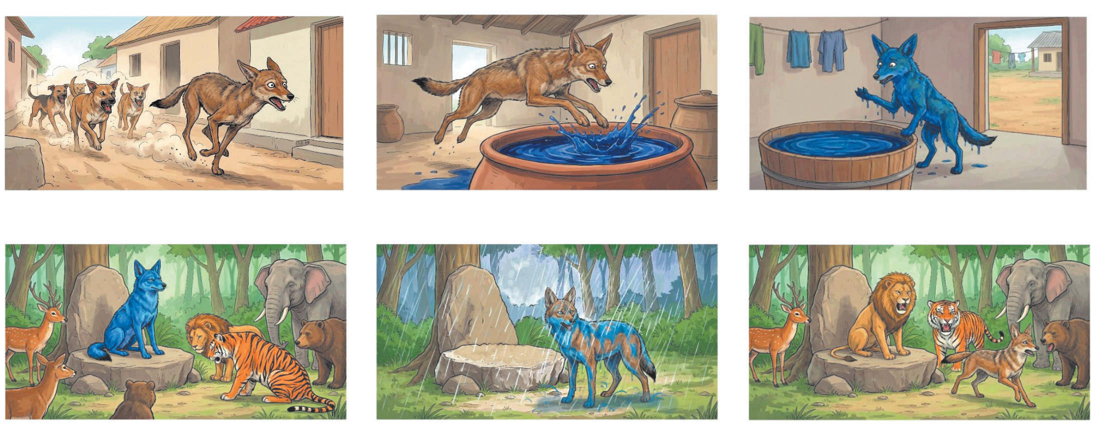

(५) परखो स्वयं को :

योग्य विकल्प चुनो :

(ट) तन्मय पाठशाला नहीं जाना चाहता था क्योंकि–

१. उसकी तबीयत खराब थी। २. उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता था।

३. वह आराम करना चाहता था। ४. गणितवाले गुरु जी उसपर गुस्सा हुए थे।

(ठ) पिता जी ने तन्मय को कैसे समझाया।

१. उसे सजा दी। २. उसे डाँटा।

३. उदाहरणों के आधार पर।

(ड) इस पाठ की विधा कौन-सी है? ....

(६) एक कदम भाषा की ओर :

नीचे दिए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को पहचानकर रेखांकित करो।

(त) आप भी थक गए होंगे। (थ) यह आदमी पत्थर क्यों तोड़ रहा है?

(द) शायद कुछ जल रहा है? (ध) मम्मी के लिए कुछ खरीदना है क्या?

(न) वह गन्ने का जूस पी रहा है। (प) जिससे उसमें कोई छिद्र नहीं रहे।

(७) आओ, कुछ रचो :

'दूरदर्शन से लाभ और हानि' विषय पर अपने शब्दों में संवाद लिखो।

(८) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

कोई अन्य एकांकी पढ़कर उसका सारांश लिखो।

(९) निपुण बनो :

अपने विद्‌यालय में आयोजित किसी एक कार्यक्रम का वृत्तांत लेखन करो।

(१०) खेल-खेल में भाषा :

नीचे दिए प्रत्येक सर्वनाम से एक वाक्य बनाकर अपनी स्वाध्याय पुस्तिका में लिखो।

शब्द - वह, अपना, किसने, यह, जो, कोई, कुछ, मैं, तुम, आप।

(११) पाठ से आगे :

कुम्हार द्‌वारा घड़ा बनाने की पूरी प्रक्रिया की जानकारी सुनो और चर्चा करो। दस से बारह वाक्यों का परिच्छेद लिखो।

नि:शुल्क वितरण के लिए

१०. गौरव के पल

समाचार १ – भारतीय थलसेना की अग्रिम पैदल टुकड़ी में महिलाओं की भरती संबंधी समाचार है।

समाचार २ – भारतीय महिला क्रिकेट टीम द्‌वारा एक दिवसीय क्रिकेट विश्वकप २०२५ जीतने का समाचार है।

समाचार ३ – भारत के पुरुष खिलाड़ियों द्‌वारा आय.सी.सी. टी ट्‌वेंटी विश्वकप २०२६ जीतने का समाचार है।

समाचार ४ – भारत के वैज्ञानिकों द्‌वारा चंद्रयान ३ चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतारने का समाचार।

समाचार ५ – भारत के राष्ट्रपति द्‌वारा 'राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' प्रदान करने का समाचार है।

समाचार ६ – भारत के दिव्यांग स्त्री-पुरुष खिलाड़ियों द्‌वारा पैरा ओलिंपिक में पदक जीतने का समाचार है।

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों से चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ। चित्र में कौन-से समाचार हैं, इस विषय पर उनसे प्रश्न पूछें। पाठ में दिए गए समाचारों के शीर्षकों का मौन वाचन कराएँ और अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करें। समाचार में क्या, कौन, कब, कहाँ से बनने वाले प्रश्नों की रचना करने के लिए कहें। चित्र संयोजन (कोलाज) की जानकारी देकर ऐसे 'चित्र संयोजन' बनवाएँ। ग्रंथालय से समाचारपत्र लाकर उनका सस्वर वाचन कराएँ। समाचारों का सारांश बताने के लिए कहें। क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले के कार्यों की जानकारी दें। ३ जनवरी को 'बालिका दिवस' मनाएँ।

शब्द सौरभ : विश्वकप = विभिन्न खेलों की वैश्विक प्रतियोगिता।

स्वाध्याय

(१) सुनो, सोचो और चर्चा करो :

पाठ में आए समाचार का मुखर वाचन करने और सुनने के बाद महिला खिलाड़ियों की क्षमता, साहस कौशल तथा धैर्य के बारे में चर्चा करो। पहले महिलाएँ खेल के क्षेत्र में कम संख्या में आती थीं। इसके कारणों पर चर्चा करो।

(२) पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

समाचारपत्र कक्षा में लाकर मुख्य समाचारों का मुखर वाचन करो।
(यह कार्य व्यक्तिगत तथा समूह में भी करो।)

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

पढ़े हुए समाचार पर आधारित चार प्रश्न बनाओ।

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

(च) 'एकदिवसीय महिला क्रिकेट विश्वकप २०२५ की जीत के बाद पूरे देश में उत्सव का माहौल है।' उपरोक्त पंक्ति को पढ़कर देश में उत्सव का माहौल अन्य कौन-से विशेष दिनों में होता है, यह बताओ।

(छ) "भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम ने 'टी ट्वेंटी क्रिकेट विश्वकप २०२६' जीतकर इतिहास रचा।" यह पंक्ति क्या सूचित करती है।

(५) चित्र कुछ कहते हैं :

* चित्र में आए विज्ञापन का मुखर वाचन करो।
* चित्र के आधार पर विद्यार्थियों का एक समूह प्रश्न बनाकर पूछता है, दूसरा समूह उत्तर देता है।

(६) **परखो स्वयं को :**

चित्र संयोजन में दिए गए चित्रों को देखकर तुम्हारे मन में इनमें से कौन-से भाव जगते हैं, उनपर गोल करो तथा सभी शब्दों के अनुकूल अभिनय करो :

(ट) प्रसन्नता	(ठ) गर्व	(ड) करुणा	(ढ) शौर्य	(ण) आश्चर्य
(त) हास्य	(थ) भय	(द) क्रोध	(ध) शांत	(न) झल्लाना

(७) **खेल-खेल में भाषा :**

यहाँ कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें से नदी की विशेषता बताने वाले शब्द चुनकर उनसे वाक्य बनाकर लिखो।

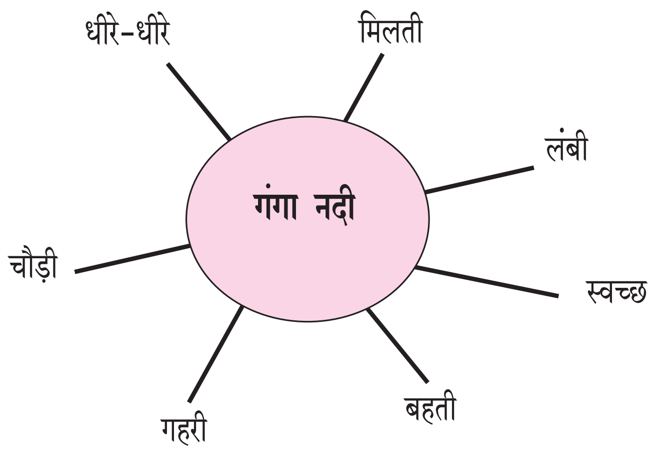

(८) **आओ, कुछ रचो :**

'मेरा प्रिय खेल' इसपर दस वाक्यों का निबंध लिखो।

(९) **निपुण बनो :**

समाचारपत्र में आए विज्ञापनों को काटकर चित्र संयोजन (कोलाज) करो।

(१०) **इस पाठ से तुमने समझा :**

....

....

....

....

(११) **पाठ से आगे :**

दी गई लिंक के आधार पर 'भारतीय पैरा ओलंपिक' के बारे में अंतरजाल से जानकारी प्राप्त करके सुनाओ और चर्चा करो।

१. paralympic.org/India-2024 २. olympics.com

११. जन-जन के गीत

-डॉ. मीरा सिंह

जन्म : १९५५ बलिया, उ.प्र.।
प्रमुख कृतियाँ : प्रेरणा, हृदय की झंकार, रिश्तों की मुस्कान, संकल्प की ज्योति, संस्कृति के विविध रंग आदि।
सम्मान/पुरस्कार : महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी से 'सोहनलाल द्विवेदी' पुरस्कार सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से देश-विदेश में सम्मानित।
प्रस्तुत पाठ में लोकगीतों का महत्त्व बताया गया है। लोकगीतों द्वारा लोग अपने अनुभव और भावनाओं को गाकर अभिव्यक्त करते हुए आनंद मनाते हैं। इन लोकगीतो में हमें अनेक नैतिक संदेश प्राप्त होते हैं।

भारत की संस्कृति बहुत समृद्ध है। यहाँ त्योहारों और खुशियों के अवसर पर गीत गाने की परंपरा बहुत पुरानी है। आंचलिक एवं देशीय परिवेश के लोगों द्वारा गाए जाने वाले परंपरागत गीत को लोकगीत कहते हैं। लोग अपने सुख-दुख, अनुभव और भावनाओं को गीतों के माध्यम से प्रकट करते हैं। इन गीतों में परिवार, समाज और रिश्तों के सुंदर चित्र दिखाई देते हैं।

लोकगीत बहुत सरल और मधुर होते हैं। इन्हें सुनकर हर व्यक्ति आनंदित होता है। ये गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते रहते हैं। बड़े लोग इन्हें गाते हैं और बच्चे सुनकर सीखते हैं। इस तरह हमारी परंपराएँ आगे बढ़ती रहती हैं। लोकगीत समाज को कई अच्छी बातें सिखाते हैं। इनमें प्रेम, सहयोग, दया और नैतिकता का संदेश मिलता है।

लोकगीतों के अनेक प्रकार होते हैं।

जन्म संबंधी लोकगीत-सोहर, खेलौना।

श्रम संबंधी लोकगीत-रोपनी, जाँत के गीत।

ऋतु संबंधित लोकगीत-चैता, बारहमासा, कजरी।

सांस्कृतिक उत्सव संबंधी लोकगीत-जनेऊ, तिलक, विवाह, मुंडन, लोरी।

वीरता संबंधी-आल्हा, पांडवानी।

लोकगीतों की ये सारी अलग-अलग श्रेणियाँ हैं। राजस्थान में किसी की मृत्यु होने पर 'रुदाली' गीत भी प्रचलन में है। इन लोकगीतों के कुछ उदाहरण यहाँ पठनीय हैं।

लोकगीत-सोहर

बच्चे के जन्म पर घर और गाँव के लोग मिलकर खुशी मनाते हैं। इस अवसर पर महिलाएँ मिलकर गीत गाती हैं। इन गीतों को 'सोहर' कहा जाता है। इन गीतों में कोई नेग

अध्यापन संकेत : विद्यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ। लोकगीत पर चर्चा करें। लोकगीत गाकर सुनाएँ। विद्यार्थियों से लोकगीतों का सामूहिक एवं व्यक्तिगत गायन कराएँ। आज के युग में लोकगीत समाज के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं, समझाएँ।

देता है, कोई काजल लगाता है। कोई मंगल गीत गाता हैं। इससे परिवार में प्रेम और अपनापन बढ़ता है। इन गीतों द्वारा मिल-जुलकर रहने और एक-दूसरे की खुशी में शामिल होने की भावना रहती है। जैसे-

हो नाच नाचे-गावे बहिनी, ललन के खेलवली हो,
ललन हँसि-हँसि टिहुकी चलावेली, कि रस बरसावेली हो...

(*अर्थ-सब मिलकर नाचते-गाते हैं। बच्चे को गोद में लेकर खेलाते-प्यार करते हैं। बच्चा हँसते हुए किलकारी मारता है। पूरे घर में खुशी का माहौल छा गया है।*)

इसी प्रकार रिश्तों को जोड़कर गीत गाया जाता है।

पेड़वा पर बोलेला सुगना, बोले सच बोली ना हो,
ललना दुवरे से उलटल भिखारी, ललन कैसे चाहेलू हो?

दूसरे गीत का भाव यह है कि किसी भी भिखारी को घर के दरवाजे से भूखा नहीं लौटाना चाहिए। इससे हमें दया और मदद करने की सीख मिलती है। 'सोहर' गीत पूरे हिंदी क्षेत्रों में प्रसिद्ध है।

खेलौना गीत

मुबारक हो ललना की जनम घड़ी हो,
बाबा लुटावें अन-धन सोनवा,
दादी लुटावें मोतियन के लड़ी हो,
मुबारक हो ललना की जनम घड़ी हो।

छत्तीसगढ़ी भाषा में सोहर

सोवे न चुप होवे न, पलने में रोवे मेरा लाल,
ओ साजन गोदी ले लो ना। सासु जो आवें चेरुआ चढ़ावें,
चेरुआ चढ़ावें नेग वो माँगे। दे दो ना हरवा दे दो ना,
रखना ना कोई उधार, हरवा दे दो ना।

मध्यप्रदेश की कजरी (बघेली बोली)

हरे रामा पहुँची जनक फुलवारी।
सिया सुकुमारी हे हरी,

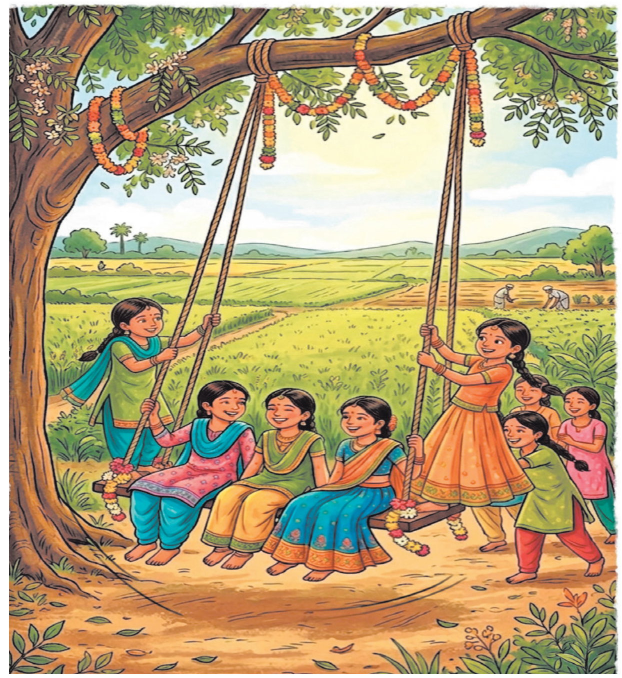

सखियाँ के संग जनक दुलारी, लेकर पूजन थाली,
हरे राम पूजन उमा महतारी, सिया सुकुमारी हे हरी।
बगिया देखन को चले दो भाई,
लखन-राम रघुराई, सिया सुकुमारी हे हरी।

उत्तरप्रदेश की कजरी

कइसे खेलन जइबू सावन में कजरिया,
बदरिया घिरि आइल ननदी।

(*अर्थ-भाभी अपनी ननद से चुहलबाजी करते हुई कहती है कि बादल घिर आए हैं। बरसात होने वाली है। अब कजरी कैसे खेलने जाओगी?*)

लोरी (निंदिया का गीत)

आ जा रे निंदिया, निनर बन से,
खटिया-गोनर पटना से
बबुआ अइले अपनी नानी के इहाँ से॥

श्रम संबंधी गीत (रोपनी, जातासर)

बाबा कुसुम लगईह अति दूर, कुसुम लोढ़े जाईब हरी।
बेटी, फूल लोढ़ी रंगही चुनरिया, चुनरिया चटकरा हरी।

अध्यापन संकेत : पाठ में आए लोकगीतों के कुछ अंश का लय-ताल के साथ गायन करें। अन्य प्रादेशिक भाषाओं के लोकगीतों की भी जानकारी दें। विद्यार्थियों से वाक्य में आई क्रियाओं पर चर्चा करें। 'क्रिया' के महत्त्व को बताते हुए पाठ के किसी परिच्छेद से क्रिया बताने के लिए प्रेरित करें। क्रिया के भेद समझाएँ। 'सोहर, कजरी, लोरी, गणगौर' गीतों की जानकारी दें।

गणगौर गीत – गणगौर राजस्थान और मध्य प्रदेश का एक प्रमुख सांस्कृतिक त्योहार है। जो चैत्र माह (मार्च-अप्रैल) में मनाया जाता है।

माथा न मैमंद ल्याय भँवर म्हारी रखड़ी जड़ाय
ओजी म्हारी सहेल्या जोव जी बाट,
भँवर म्हाने पूजन दो गणगौर।

*(**अर्थ**–पत्नी अपने पति से कहती है कि 'मेरे माथे के श्रृंगार के लिए मैमंद (एक आभूषण) ला दीजिए। मेरी रखड़ी (माथे का आभूषण) में रत्न जड़वा दीजिए। मेरी सहेलियाँ मेरा इंतजार कर रही हैं। स्वामी! मुझे 'मुझे गणगौर' की पूजा करने के लिए जाने दीजिए।)*

ये लोकगीत समाज से अनुभूति ग्रहण करके, समाज के स्वरूप को हास-परिहास के रूप में ज्यों के

त्यों उजागर करने में समर्थ होते हैं। इतना ही नहीं ये समाज के लिए शुभ संदेश देने के साथ-साथ प्रेरणात्मक भी होते हैं। इन लोकगीतों में समाज का जीता-जागता स्वरूप झलकता है। इनके माध्यम से सामाजिक चेतना पूर्ण रूप से उभरकर समाज के समक्ष उजागर होती है। ये लोकगीत, लोकवाणी में लोककल्याण की भावना से खुलकर सुरीली आवाज में, संवाद के रूप में बोले नहीं बल्कि गुनगुनाए भी जाते हैं।

यह भी जानो :

नीचे दिया हुआ अनुच्छेद पढ़ो।

सैनिकों ने सारी तैयारियाँ कर ली थीं। बस सेनापति राघवेंद्र के आदेश की देरी थी। दूसरे राज्य की सेना ने मालव राज्य के महत्त्वपूर्ण पहाड़ पर कब्जा कर लिया था। मालव राज्य के सैनिक क्रोध में तिलमिला रहे थे। उन्हें शांति की अपेक्षा थी लेकिन दमन राज्य का राजा भूपेंद्र लड़ाई पर तुला हुआ था। राजीव मालव राज्य का गुप्तचर था। वह अपनी बहादुरी के कारण प्रसिद्ध था। उसे भूपेंद्र राजा के बारे में एक गुप्त समाचार मिला था। वह कुएँ से पानी पीकर समाचार देने अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ राजमहल की ओर निकल पड़ा था।

इस परिच्छेद में आई हुई संज्ञाओ का वर्गीकरण निम्नलिखित तालिका के आधार पर करो।

व्यक्ति वाचक –
जाति वाचक –
स्थान वाचक –
भाव वाचक –
द्रव्य वाचक –
समूह वाचक –

अध्यापन संकेत : यहाँ दिए गए 'यह भी जानो' के वाक्य विद्यार्थियों से पढ़वाएँ । उन्हें संज्ञा और संज्ञा के भेदों की जानकारी देकर इनका अभ्यास कराएँ। विशेष विद्यार्थियोंकी सहायता करें।

शब्द सौरभ : चेरुआ = हाँडी में पकाया जाने वाला एक पारंपरिक व्यंजन; नेग = शुभ अवसरों पर दिया जाने वाला उपहार; बदरिया = बादल; कारी = काली; म्हाने = मुझे, हमें; मैंमंद = एक आभूषण।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

अपने परिजनों से लोकगीतों के बारे में प्रश्न पूछो और वह जानकारी अपने सहपाठियों को सुनाओ।

(२) पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

लोकोक्तियाँ/कहावतें पढ़ो और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

(क) नाच न जाने आँगन टेढ़ा = काम न जानना और झूठे बहाने बनाना।

(ख) नौ नगद न तेरह उधार = उधार के बड़े मुनाफे से नकद का छोटा मुनाफा बेहतर होता है।

(ग) बिन गुरु होई न ज्ञान = गुरु के बिना सच्चा ज्ञान नहीं मिलता।

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(च) लोकगीतों के कौन-कौन से प्रकार हैं?

(छ) लोकगीत किसे कहते हैं?

(ज) 'गणगौर' गीत किन राज्यों में गाया जाता है?

(झ) लोकगीत क्या करने में समर्थ होते हैं?

(४) ढूँढ़ो पंक्तियों का ठिकाना :

निम्नलिखित अर्थवाली पंक्तियाँ पाठ से ढूँढ़कर लिखो -

(ट) द्‌वार से कोई भिखारी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए।।

(ठ) न सो रहा है, न चुप हो रहा है। पालने में मेरा बच्चा रो रहा है।

(ड) मेरी सहेलियाँ मेरा इंतजार कर रही हैं।

(५) परखो स्वयं को :

उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

(त) रुदाली	छत्तीसगढ़
(थ) सोहर (सोवेन चुप होवे न)	मध्य प्रदेश
(द) कजरी (बघेली बोली)	उत्तर प्रदेश
(ध) खेलौना गीत	राजस्थान

(६) आओ, कुछ रचो :

किसी लोकगीत की रेकॉर्डिंग करके सुनाओ। तुमने रेकार्डिंग किस प्रकार किया इसके बारे में सहपाठियों से चर्चा करो।

(७) एक कदम भाषा की ओर।

(प) चित्र पर ध्यान दो, क्रिया पहचानो और उनपर आधारित वाक्य कॉपी में लिखो।

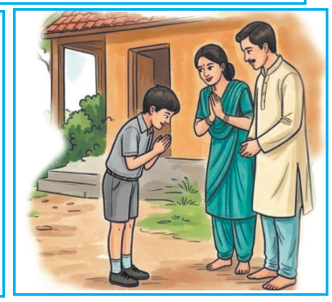

(फ) निम्नलिखित शब्दों के मानक/शुद्ध रूप लिखो :

१. जनम = ... २. महतारी = ... ३. खटिया = ...

(८) खेल-खेल में भाषा :

नीचे लिखे शब्दों के अक्षरों से अधिक-से-अधिक शब्द बनाओ-

जैसे महानगर = महा, महान, नग, नगर, नर, मन आदि।

संगीतकार- ....

पथप्रदर्शक- ....

(९) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

(१०) निपुण बनो :

संगीत अध्यापक अथवा संगीत के जानकार की सहायता से किसी लोकगीत को स्वरबद्ध करके परिपाठ में सामूहिक प्रस्तुति करो।

(११) पाठ से आगे :

मराठी भाषा के कुछ प्रचलित लोकगीत जैसे-पोवाड़ा, भारुड़, गोंधळ के बारे में जानकारी प्राप्त करके कक्षा में चर्चा करो। अपनी भाषा के लोकगीतों और उनकी समानता तथा भिन्नता के बारे में बताओ।

पुनरावर्तन – १

(१) सुनो और चर्चा करो :

(क) सुनी हुई कविता की चार पंक्तियाँ सुनाओ।

(ख) चूहों से होने वाले लाभ-हानि।

(२) रुचि से पढ़ो, सोचो और समझकर अपनी राय व्यक्त करो।

कृषक हमारे अन्नदाता हैं। चाहे गर्मी हो, ठंड या वर्षा, वे हमेशा अपने खेतों में परिश्रम करते हैं। उनकी अटूट प्रतिबद्धता, लगन और मेहनत से ही हमारे घरों में अन्न पहुँचता है। किसानों का श्रम राष्ट्र को न केवल आत्मनिर्भर बनाता है अपितु करोड़ों लोगों का पेट भी भरता है। उनका समर्पण हम सब के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

ऊपर दिया गया परिच्छेद पढ़ो । इसके आधार पर पाँच प्रश्न बनाकर उनके उत्तर लिखो। प्रश्न बनाते समय क्या, क्यों, कब, कौन, कहाँ आदि प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग करो।

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

(च) “चरणों पर अर्पित है, इसको चाहो तो स्वीकार करो। यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो।”

(छ) “पत्थर चोट सह नहीं पाया और टूट गया। चोटें सहकर एक पत्थर भगवान बन जाता है।”

ऊपर दी गईं पंक्तियों की व्याख्या अपने शब्दों में लिखो।

(५) परखो स्वयं को :

(ट) शब्द और संदर्भ की जोड़ियाँ मिलाओ :

नोक्ते	निर्णय क्षमता
श्यामा	रीमा परिहार
बूझो तो जानें	राजस्थान एवं मध्य प्रदेश
गणगौर	राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार
तन्वी	अरुणाचल प्रदेश

(ठ) घटना क्रम लगाओ :

१. मुझे एक नया अनुभव हुआ।
२. पर घर में खाना बनना शुरू नहीं हुआ।
३. मैं बहुत परेशान।
४. वह भूखा था।

(६) खेल-खेल में भाषा :

बेमेल शब्द ढूँढ़कर उनपर गोल करो।

(त)	१. मैं	२. तुम	३. अच्छा	४. इसने
(थ)	१. सुंदर	२. कंजूस	३. लाल	४. उसके
(द)	१. पुणे	२. संतरा	३. मेज	४. भला
(ध)	१. नगरीय	२. भारतीय	३. पुस्तकीय	४. बहुमूल्य

(७) एक कदम भाषा की ओर :

(प) अपने मित्र/सहेली को जन्मदिन की शुभकामना देते हुए पत्र लिखो।

(फ) दिए गए वाक्यों से संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, विशेषण, क्रिया पहचानकर लिखो।

कल मेले में हमने बहुत सारी वस्तुएँ देखीं। वहाँ मैंने और मेरे मित्र ने मीठे फल खाए।

(८) आओ, कौशल दिखाओ :

पुस्तकालय या अंतरजाल का उपयोग करके 'व्यसन समस्या' का हल करने के उपाय ढूँढ़ो।

(९) आओ, कुछ रचो :

(य) 'जल प्रदूषण' विषय पर दिए गए मुद्‌दों के आधार पर आठ से दस पंक्तियों में निबंध लिखो।

१. प्रदूषण के कारण   २. प्रभाव   ३. निवारण   ४. उपाय

(र) देशभक्ति पर आधारित पाँच घोषवाक्य तैयार करो।

(१०) 'ओला' कविता का आशय अपने शब्दों में लिखो :

(११) पाठ से आगे :

'मेरा प्रिय त्योहार' विषय पर दस पंक्तियों में निबंध लिखो।

पूर्वानुभव : देखो और बताओ :

दूसरी इकाई

* त्योहार

नये साल का नया हर्ष, मिलकर मनाएँ नववर्ष।
छाई बसंत बहार, लाई 'गुढ़ीपाड़वा' त्योहार।।

भांगड़े की धुन, ढोल की थाप,
'बैसाखी' लाई, खुशियों की सौगात।

त्योहार मनाएँ,खुशियाँ बढ़ाएँ।
गले मिलकर 'ईद' मनाएँ।

सांताक्लॉज से लें उपहार,
मनाएँ 'क्रिसमस' का त्योहार।

अध्यापन संकेत : चित्र में दिए गए त्योहारों और उनके मनाने के ढंग पर विद्यार्थियों से चर्चा करें। त्योहारों की विशेषताएँ बताएँ। सभी त्योहारों का मूल उद्‌देश्य बताएँ और मिलकर त्योहार मनाने हेतु उन्हें प्रेरित करें। उनसे अपने प्रिय त्योहार के अनुभव बताने के लिए कहें। त्योहार मनाने के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर विचार व्यक्त करने हेतु प्रत्येक विद्यार्थी को अवसर प्रदान करें। दिए गए घोषवाक्य पढ़वाकर छोटे-छोटे घोषवाक्य-संदेश लिखने के लिए प्रेरित करें। भारत के अन्य धर्मों जैसे – बौद्‌ध, जैन, पारसी आदि के त्योहारों के बारे में उनसे चर्चा करें। उन्हें अपने पसंदीदा त्योहार का चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें। 'राष्ट्रीय एकात्मता' दिवस मनाएँ। विशेष विद्यार्थियों को त्योहारों का महत्त्व बताएँ।

देखो और बताओ :

१. हमारे लोकनृत्य

‘कालबेलिया’ राजस्थान का एक पारंपरिक और ऊर्जावान लोकनृत्य है। यह अपने अनूठे ‘नागिन नृत्य’ के लिए विशेष रूप से प्रसिद्‌ध है।

‘राऊफ’ जम्मू-कश्मीर का एक प्रमुख पारंपरिक लोकनृत्य है। यह मुख्य रूप से कश्मीर घाटी में महिलाओं द्‌वारा ‘वसंत’ के आगमन, ‘रमजान ईद’ और फसलों की कटाई जैसे त्योहारों के अवसर पर किया जाता है।

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों से ऊपर दिए गए लोकनृत्यों पर चर्चा करें। हमारे देश के विविध राज्यों के लोकनृत्य, वेशभूषा, खान-पान, भाषा, त्योहार मनाने के अवसर आदि के बारे में चर्चा के माध्यम से उन्हें जानकारी प्रदान करें।

'कावड़ी अट्टम' तमिलनाडु का एक प्रमुख पारंपरिक और भक्तिमय लोकनृत्य है। यह मुख्य रूप से भगवान मुरुगन (कार्तिकेय) को समर्पित है। भक्त 'कावड़ी' (फूल और मोर पंखों से सजी लकड़ी पर बनी अर्ध वृत्ताकार संरचना) को कंधों पर उठाकर नृत्य करते हैं। यह उनके समर्पण का प्रतीक है।

'घुमुरा' नृत्य ओडिशा राज्य के विशेष रूप से कालाहांडी जिले का एक प्रमुख पारंपरिक लोकनृत्य है। इसमें 'घुमुरा' नामक ढोल बजाते हुए नृत्य करते हैं।

अध्यापन संकेत : भारत की 'विविधता में एकता' पर चर्चा करें। इन नृत्यों से संबंधित त्योहारों के संदर्भ में कहानी ढूँढ़ने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें। लोकनृत्यों के साथ गाए जाने वाले गीत, पत्र-पत्रिकाओं में लोकनृत्य संबंधी समाचार आदि पर बातचीत करके उन्हें अपना मत व्यक्त करने के अवसर प्रदान करें। आवश्यकतानुसार विशेष विद्‌यार्थियों की सहायता करें।

सुनो, पढ़ो और मिलकर गाओ :

२. आम मँजरायल

– विभा रानी

जन्म : २४ सितंबर १९५९ मधुबनी, बिहार।
प्रमुख रचनाएँ : 'चल खुसरो घर अपने', 'मिथिला की लोककथाएँ', 'गोनू झा के किस्से', 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' (नाटक), 'विल टेलर की डायरी' आदि।
सम्मान/पुरस्कार : मैथिली के तीन साहित्य पुरस्कार प्राप्त।
मैथिली भाषा के इस लोकगीत में ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का सजीव चित्रण किया गया है। आम, चना और सरसों के फूलों के माध्यम से प्रकृति की हरियाली, उल्लास और सौंदर्य का वर्णन किया गया है। कृषक का परिश्रम, खेतों से जुड़ा जीवन तथा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षाएँ इस लोकगीत में व्यक्त हुई हैं।

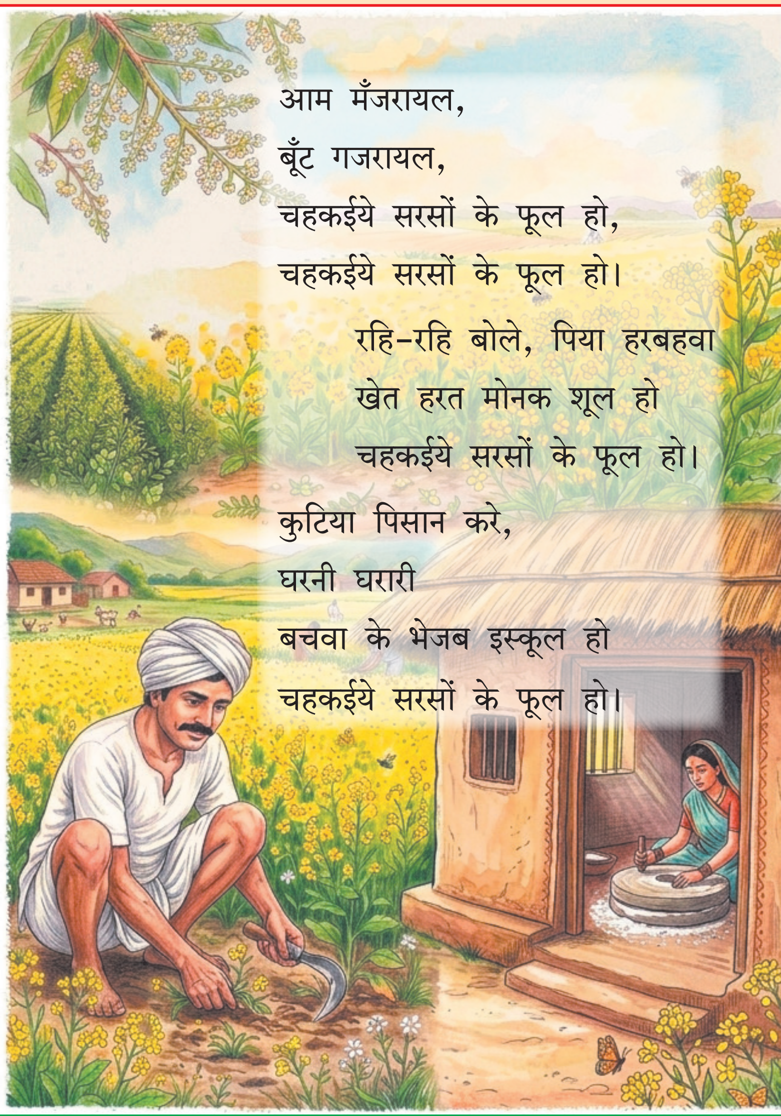

आम मँजरायल,
बूँट गजरायल,
चहकईये सरसों के फूल हो,
चहकईये सरसों के फूल हो।

रहि-रहि बोले, पिया हरबहवा
खेत हरत मोनक शूल हो
चहकईये सरसों के फूल हो।

कुटिया पिसान करे,
घरनी घरारी
बचवा के भेजब इस्कूल हो
चहकईये सरसों के फूल हो।

अध्यापन संकेत : काव्य पाठ से पूर्व, ग्रामीण जीवन व कृषि का संदर्भ स्पष्ट करें। इस विषय पर विद्‌यार्थियों के पूर्व ज्ञान को अभिव्यक्त करने का अवसर दें। गीत का सस्वर गायन करें। इस मैथिली लोकगीत का उनसे सस्वर गायन कराएँ। बोली के आए शब्दों के अर्थ सरल हिंदी में समझाएँ। भावार्थ पर संक्षिप्त चर्चा करें और वसंत ऋतु पर अपनी बोली/भाषा में तीन वाक्य लिखने के लिए कहें। प्रकृति, श्रम, शिक्षा, लोकगीत की भाषा एवं लय की विशेषताएँ स्पष्ट करें। पाठ में आए जीवन मूल्यों पर चर्चा करें।

बुचियो पढ़त,
जहाज उड़ाओत,
खेत, धिया, पूत हमर मूल हो,
चहकईये सरसों के फूल हो।

आम मँजरायल,
बूँट गजरायल
चहकईये सरसों के फूल हो,
चहकईये सरसों के फूल हो।

अर्थ – आम में मंजरी आ गई है, चने में भरपूर में फल आ गए हैं। खेत में सरसों के फूल महक रहे हैं। मेरा हल चलाने वाला पिया रह-रहकर बोल रहा है कि ऐ प्रिय! यह खेत हमारे मन के शूल यानी कष्ट को हर लेंगे। गृहिणी घर के काम निपटाते, अनाज कूटते और पीसते हुए कहती है कि हम अपने बच्चे को विद्यालय भेजेंगे। पिता कहता है कि वह अपनी बेटी को भी पढ़ाएगा। वह पायलट बनकर हवाई जहाज उड़ाएगी। ये खेत, बेटे और बेटी ही उसकी असली संपत्ति या जीवन के मूल हैं।

अध्यापन संकेत : विशेष विद्यार्थियों को लोकगीत का अर्थ समझाते समय ऊपर दिए गए चित्रों का उपयोग करें।

शब्द सौरभ : बूँट = चना; गजरायल = लदा हुआ; चहकईये = प्रसन्न होकर झूम रहे हैं; हरबहवा = हल चलाने वाला; हरत = दूर करना; मोनक शूल = मन का दुख; कुटिया = कूटना; घरनी = गृहिणी; बुचियो = बच्ची; धिया = बेटी; मूल = असली संपत्ति।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

नीचे दिया हुआ लोकगीत अपने सहपाठी से सुनो और इसके भावार्थ पर चर्चा करो।

हरिहर काशी रे हरिहर जवा के खेत,
हरिहर पगड़ी रे बाँधे, बीरन भैया चले हैं बहिनिया के देस।

(२) आनंद से पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

हम धरती के बेटे बड़े कमेरे हैं,
भरी थकन में सोते फिर भी, उठते बड़े सवेरे हैं।
कभी न मेहनत से डरते हैं...,
तूफानों के मुँह फेरे हैं। – शंभूनाथ सिंह

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) गीत में कौन-कौन-सी फसलों के नाम आए हैं?
(ख) इस गीत में कौन-से भाव उभरकर आए हैं?
(ग) किसान की क्या इच्छा है?
(घ) मँजरायल और गजरायल शब्द किन शब्दों के लिए आए हैं?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

निम्नलिखित काव्य पंक्तियाँ पढ़ो और भाव एवं जीवन मूल्यों की जोड़ियाँ मिलाओ–

काव्य पंक्तियाँ (अ)	भाव एवं जीवनमूल्य (ब)
(च) रहि-रहि बोले, पिया हरबहवा खेत हरत मोनक शूल हो।	(ट) बेटी पढ़ेगी, वह पायलट बनकर जहाज उड़ाएगी। खेत, बेटा, बेटी ही हमारी मुख्य संपत्ति हैं।
(छ) बुचियो पढ़त, जहाज उड़ाओत खेत, धिया, पूत हमर मूल हो।	(ठ) हलधर पति कहता है कि ये खेत हमारे मन के दुख और कष्टों को हर लेंगे।

(५) परखो स्वयं को :

किसान के जीवन के मूल/आधार लिखो :

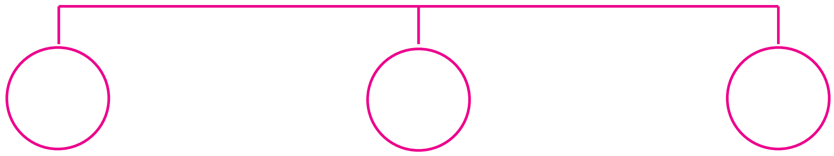

(६) आओ, कौशल दिखाओ :

त. आम के पेड़ पर बौर आने की ऋतु कौन-सी होती है? ग्रंथों/पुस्तकों से इस ऋतु की अन्य विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करो।

थ. आज के युग में लोकगीत का प्रचार-प्रसार करने के लिए तुम क्या कर सकते हो, चर्चा करो।

(७) निपुण बनो :

अपनी पसंद का कोई लोकगीत प्रस्तुत करो।

(८) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

इसी प्रकार हिंदी की अन्य बोली की कविता पढ़कर उसका आशय लिखो।

(९) खेल-खेल में भाषा :

दिए गए शब्द के वर्णों का उलट-फेर करके अन्य सार्थक शब्द बनाओ :

जैसे - महानदी = महा, महान, नदी, नम, नहा, मन ....

गजरायल ______ ______ ______ ______ ______

(१०) आओ, कुछ रचो :

'अपनी पसंदीदा ऋतु' विषय पर तुकबंदी के आधार पर चार पंक्तियों की कविता लिखो।

(११) पाठ से आगे :

किसी किसान/सैनिक/पुलिस से उनकी दिनचर्या की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली बनाओ।

पढ़ो और समझो :

३. बैलोंवाली कार

– डॉ. अरविंद दुबे

जन्म : २० अक्टूबर १९५७, भदकी (उ.प्र)
प्रमुख रचनाएँ : विज्ञान के शताधिक लेख, बीस विज्ञान कथाएँ एवं कई विज्ञान लेख प्रकाशित। दूरदर्शन हेतु कई आलेख, सोलह लघु फिल्में, दो धारावाहिक एवं पचास से अधिक विज्ञान आलेख। केंद्रीय निदेशालय आगरा, हिंदी संस्थान उत्तर प्रदेश का 'श्री जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान' (२०१७) प्राप्त।
इस पाठ में प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए इनके संरक्षण की ओर इशारा किया गया है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने आज से पचास वर्ष आगे के विश्व के बारे में कल्पना की है।

धरती पर दो पहिया और चार पहिया वाहन खरीदने और बेचने की होड़ इस कदर बढ़ी कि अंधाधुंध प्रयोग होने से पृथ्वी पर पेट्रोलियम के भंडार समाप्त हो गए। पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहन बनाने वाली कंपनियाँ बंद हो गईं। कारें बेकार होकर गैराजों में खड़ी हो गईं। इलेक्ट्रिक कारें आईं लेकिन अपनी पुरानी कारों से लोगों का मोह गया नहीं।

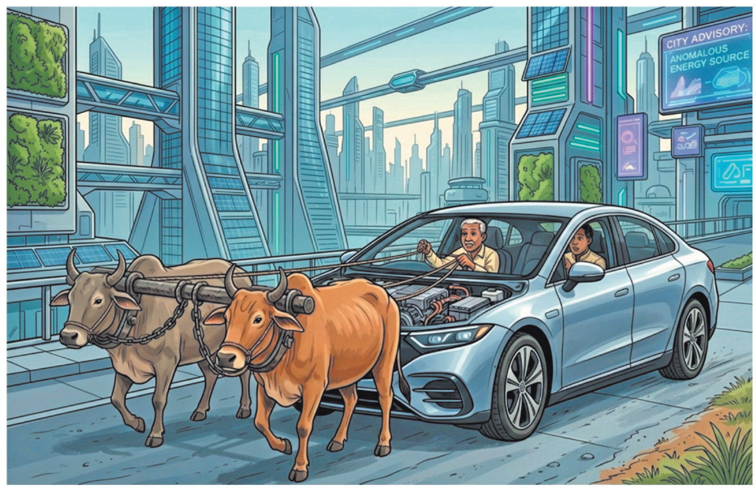

लोगों ने पेट्रोल या डीजल से चलने वाले वाहनों का प्रयोग करने का एक अनोखा तरीका ढूँढ़ निकाला। इन बेकार पड़े वाहनों और कारों में बैलों को जोता जाने लगा। कार का आगे का शीशा हटा दिया जाता था। अंदर बैठा चालक बैलों की रासें पकड़कर कार चलाता था। लोग इसे 'बुलक कार' या 'बैलोंवाली कार' कहते थे। बाद में कार बनाने वाली कुछ कंपनियाँ भी इस धंधे में उतर आईं। उन्होंने इसमें कुछ और बदलाव किए। अब वे कार के साथ-साथ बैलों को भी सप्लाई करते हैं। जिन्हें चारा नहीं सिर्फ एनर्जी की गोलियाँ खिलानी होती हैं। कार में कंप्यूटर लगा होता है और बैलों के मस्तिष्क में भी एक कंप्यूटर 'चिप' लगाई जाती है जिससे कार के अंदर बैठे-बैठे कंप्यूटर द्‌वारा बैलों को नियंत्रित किया जाता है।

राजू गर्मी की छुट्टियों में ऐसी ही 'बुलक कार' में बैठकर अपने पिता के साथ होस्टल से घर आ रहा था। न जाने क्या हुआ कि कार में जुते हुए बैल बेकाबू हो उठे। वे 'बैलोंवाली कार' लेकर सरपट दौड़ने लगे। राजू के पिता कार के कंप्यूटर से जितना उन्हें नियंत्रित करने के आदेश देते, वे उतना ही सरपट भागते। कार उलटने को हो जाती। राजू के पिता के माथे पर पसीना चुहचुहाने लगा।

राजू भी परेशान था। उसने घबराकर पूछा, ''पापा, यह सब क्या हो रहा है?''

अध्यापन संकेत : पाठ के किसी अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें। विद्यार्थियों से मौन वाचन करवाएँ। ऊर्जा संसाधनों का सीमित प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें। आधुनिक तकनीकी साधनों के अनावश्यक प्रयोग पर रोक-थाम के लिए प्रेरित करें। उन्हें हिंदी के किसी समाचारपत्र का मुखर वाचन के लिए कहें और मुख्य समाचारों पर आधारित चर्चा कराएँ। विज्ञान संबंधी घोषवाक्यों को दोहराएँ और ऐसे घोषवाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें।

''मैं खुद भी नहीं समझ पा रहा हूँ बेटे। कंप्यूटर से कोई भी आदेश दो, कोई सिग्नल दो, बस! बैल भड़ककर भागना शुरू कर देते हैं। लगता है बैलों के मस्तिष्क में फिट 'माइक्रोचिप' के आस-पासवाले हिस्से में सूजन आ गई है। जिससे माइक्रोचिप से सिग्नल लीक होने लगे हैं। सूजन के कारण चिप के चारों ओर का उनका मस्तिष्क अनावश्यक सिग्नलों को ग्रहण करने लगा है।''

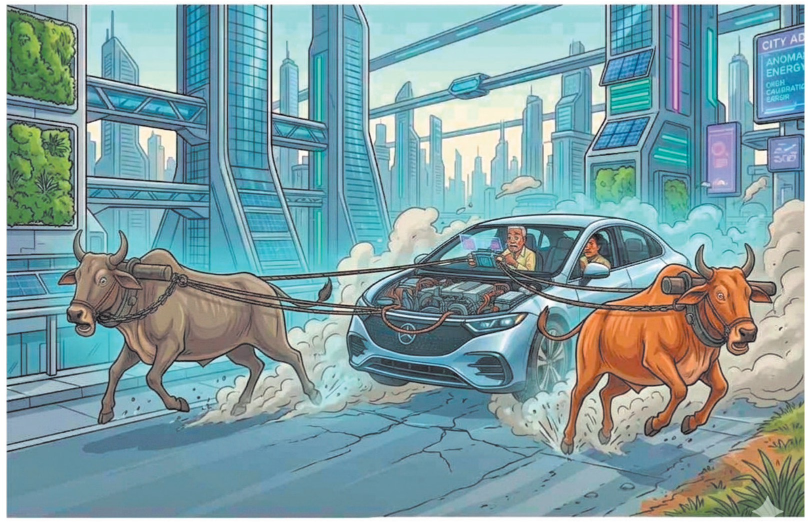

''अब क्या होगा पापा?''

''यही मैं भी सोच रहा हूँ बेटे। कार कंपनी वाले दोनों बैलों के मस्तिष्क में फिट इन 'माइक्रोचिप' को पूरी तरह मिलाते हैं पर लगता है कि एक बैल के माइक्रोचिप के आस-पास के मस्तिष्क में सूजन होने से वह मेल समाप्त हो रहा है।''

''इसका मतलब पापा?''

''इसका मतलब यह कि हमारे सिग्नल को एक स्वस्थ बैल एक तरह से समझ रहा है और सूजे मस्तिष्क वाला बैल दूसरी तरह से।''

''यह तो बहुत खतरनाक होगा पापा, एक बैल दौड़ना चाहेगा तो दूसरा धीमे चलेगा, एक दायें जाएगा तो दूसरा बायें, यानी कि हमारी कार कभी भी पलट सकती है?''

''हाँ।'' पापा ने चिंतित स्वर में कहा।

''पापा! अगर हम बैलों को कोई भी सिग्नल न दें तो?''

''राजू, मैं ऐसा कर रहा हूँ पर सूजनवाले बायें बैल की 'माइक्रोचिप' से सिग्नल लीक होना रुक ही नहीं रहा है।''

राजू के पापा ने उस तेज और धक्के खाती कार का दरवाजा खोला और खिसककर कार के बोनट की ओर बढ़े। तभी कार एक खड्ढे में जा गिरी और उलट गई।

राजू तेजी से चिल्लाया, ''पापा।''

''क्या हुआ बेटे?'' पापा! राजू के ऊपर झुके उसका सिर सहला रहे थे। राजू कुछ बोल नहीं रहा था।

''क्या हुआ, क्या कोई बुरा सपना देखा?'' पापा पूछ रहे थे।

राजू ने धीरे-धीरे आँखें खोली। सामने पापा थे। वह पापा से लिपट गया '' पापा! आप ठीक तो हैं न?''

''हाँ बेटे, मैं बिलकुल ठीक हूँ पर तुझे क्या हुआ है?"

''पर पापा, वह बैल... वह 'बैलोंवाली कार'...... , वह दुर्घटना ....।''

''ओहो! तो जनाब ने आज फिर कोई बुरा सपना देखा। कितनी बार तुमसे कहा है कि सोते समय उल्टे-सीधे कॉमिक्स मत पढ़ा करो। देर रात मोबाइल मत देखो। तो क्या देखा तुमने आज के अपने सपने में?''

राजू ने अपने पिता को अपने सपने में देखी पूरी कहानी सुनाई।

''पापा मुझे तो यकीन ही नहीं आ रहा है कि यह सब सिर्फ एक सपना था।'' राजू कह रहा था।

''सच कहते हो राजू बेटा! सचमुच ये सपना नहीं था। तुमने बंद आँखों से हमारा आने वाला कल देखा है। ऊर्जा के संसाधनों के साथ जो हम आज अति कर रहे हैं उसका कल देखा है। शायद प्रकृति तुम्हारे सपने के माध्यम से हमें चेता रही है।'' पापा कहीं दूर देख रहे थे।

शब्द सौरभ : होड़ = स्पर्धा; अंधाधुंध = बिना सोचे-समझे, बेशुमार; चेताना = सावधान करना।

मुहावरे : बेकाबू होना = नियंत्रण खो देना; पसीना चुहचुहाने लगना = अत्यधिक पसीना आना।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो : (सहपाठी की सहायता लो)

निम्नलिखित समाचार अपने सहपाठी से सुनो और उसपर कक्षा में चर्चा करो।

भारतीय उद्योग परिसंघ के शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए मंत्री जी ने कहा, "संसाधनों की बरबादी दुनिया को रहने के लिए बेहतर जगह नहीं बनने दे रही है।" इसलिए दुनिया को अपनी वर्तमान जीवनशैली और अर्थव्यवस्था पर विचार करना होगा।

(२) पढ़ो और हँसो :

पहला मित्र - तुम पाठशाला क्यों नहीं आए?

दूसरा मित्र - सपना देखा कि पाठशाला बंद है।

पहला - फिर ...।

दूसरा - मैं सपना सच होने का इंतजार कर रहा हूँ।

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) बेकार कारों को चलाने का कौन-सा तरीका ढूँढ़ लिया गया था?

(ख) 'माइक्रोचिप' से सिग्नल लीक होने का कारण क्या था?

(ग) पृथ्वी पर पेट्रोलियम के भंडार समाप्त क्यों हो गए?

(घ) राजू के मन में कार उलट जाने की शंका कब उठी?

(ङ) इस पुस्तक में आई अन्य कथाओं और इस कथा में तुम्हें कौन-सा अंतर दिखाई देता है?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

तुम्हारे अनुसार पिता जी के इस वाक्य का क्या अर्थ है?

"सच कहते हो राजू! सचमुच ये सपना नहीं था। तुमने बंद आँखों से हमारा आने वाला कल देखा है।''

(५) परखो स्वयं को :

वाक्यों को पढ़ो और योग्य सुधार करके पुनः अपनी कॉपी में लिखो :

(च) राजू के साथ सारी घटनाएँ सचमुच घट रही थीं।

(छ) कहानी में वर्तमानकाल का ही वर्णन है।

नि:शुल्क वितरण के लिए

(ज) पिता जी की कार बकरियाँ चलाती थीं।

(झ) कार बेचने वाले कार के साथ-साथ गाय बेचते थे।

(६) एक कदम भाषा की ओर :

क्रिया के काल को समझते हुए नीचे दिए गए वाक्य पूर्ण करो।

(ट) .... रहे हैं। (ठ) .... खेलती है।

(ड) .... गए। (ढ) .... गाओगी।

(७) खेल-खेल में भाषा :

वैज्ञानिकों के नाम बताओ :

(त) ....

(थ) ....

(द) ....

गी	भा	हाँ	र	भा	ज		
भा	वि	ई	क्र	सा	रा	म	
चं	बो	द्र	स	श	दी	ग	ज

(८) आओ, कुछ रचो :

कहानी पूर्ण करो:

मिथिला नगर के राजा - राज्य के प्रति सजग - युद्‌ध की घोषणा-दूसरे राज्य से संधि।

(९) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

इस प्रकार की कोई अन्य वैज्ञानिक कथा पढ़कर उसका सारांश अपने शब्दों में लिखो।

(१०) जुड़ो सबसे :

भविष्य में वाहनों में क्या बदलाव हो सकते हैं, उनका रेखाचित्र बनाओ।

(११) पाठ से आगे :

ऊर्जा संसाधानों के अंधाधुंध प्रयोग से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में वर्णनात्मक निबंध लिखो।

सुनो, पढ़ो और मिलकर गाओ :

४. अमृत वाणी

– वृंद और रहीम

१. वृंद – जन्म : १६४३ ई. जोधपुर, राजस्थान। *मृत्यु :* १७२३ ई.।
प्रमुख रचनाएँ : 'वृंद सतसई', 'पवन-पचीसी', 'श्रृंगार शिक्षा', 'अलंकार सतसई', 'भाव पंचाशिका' आदि।
२. रहीम : जन्म : १५५६ ई. (लाहौर) *मृत्यु : १६२७* ई. (आगरा)।
प्रमुख रचनाएँ : 'रहीम रत्नावली', 'दोहावली', 'बरवै', 'नायिका भेद'आदि।
ये दोहे नीति और जीवनमूल्यों पर प्रकाश डालने का कार्य करते हैं। हमारे लिए ये दोहे मार्गदर्शक का काम करते हैं।

वृंद के दोहे

मान होत है गुनन तें, गुन बिन मान न होइ।
सुक-सारी राखै सबै, काग न राखै कोइ।।

विद्याधन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाए ना मिले, ज्यों पंखे की पौन।।

भले-बुरे सब एक-से, जौ लौं बोलत नाहिं।
जान परत है काक-पिक, ऋतु बसंत के माहिं।।

सबै सहाय सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय।।

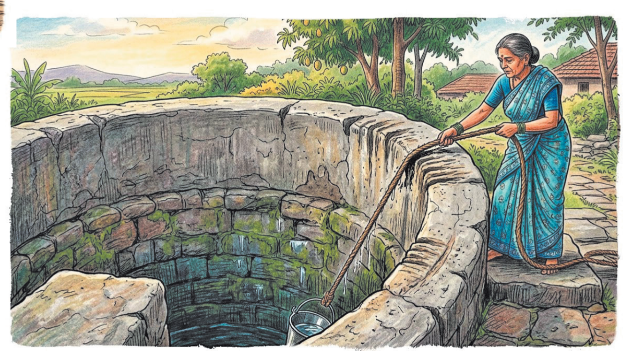

मधुर बचन तें जात मिट, उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सों मिटे, जैसे दूध उफान।।

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।।

अध्यापन संकेत : दोहों का मुखर वाचन करें और विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ। विधा का परिचय दें। दोहों के अर्थ आसान भाषा में स्पष्ट करें। दोहों में आए मुद्दों, मूल्यों पर चर्चा करें। रसास्वादन करते हुए सस्वर वाचन कराएँ। रहीम, वृंद और गिरिधर के रचनाकाल के बारे में जानकारी दें। विशेष विद्यार्थियों के वाचन-लेखन पर ध्यान दें। चित्रों का आधार लेकर उन्हें अर्थ समझने में सहायता करें।

रहीम के दोहे

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून ॥

कहु रहीम कैसे निभै, बेर-केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय ॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि ॥

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति सँचहिं सुजान ॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥

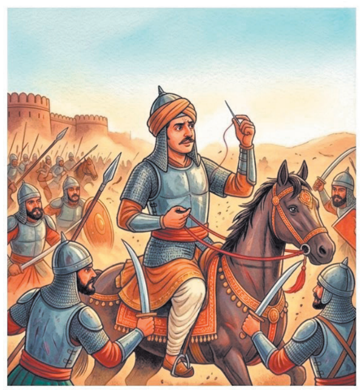

यह भी जानो : अलंकार :

ये वाक्य पढ़ो - काली **घटा** का घमंड **घटा**।

कल का सपना **कल** पूरा।

दोनों वाक्य ध्यान से पढ़ो और अपना निरीक्षण बताओ। इन वाक्यों में 'घटा' और 'कल' इन शब्दों के भिन्न अर्थ हैं। घटा का अर्थ बादलों की घटा और कम होना दोनों है। उसी तरह कल का अर्थ बीता कल और आने वाला कल दोनों होता है। इस प्रकार के भिन्न अर्थवाले शब्द ढूँढ़कर इनपर चर्चा करो। इस प्रकार के शब्द यमक के उदाहरण हैं।

तीन बेर खाती थी, वह तीन बेर खाती है।

अध्यापन संकेत : ऊपर के वाक्यों का ध्यानपूर्वक वाचन कराएँ। अलंकार पर चर्चा करें। साहित्य में अलंकार के महत्त्व को समझाएँ। शब्दों के भिन्नार्थ समझाएँ। विविध उदाहरणों द्‌वारा यमक अलंकार की जानकारी देकर उन्हें उदाहरण देने के लिए प्रेरित करें। दोहों में अनुप्रास अलंकार ढूँढ़ने के लिए कहें। दोहों की तुकबंदी पर चर्चा करें। विशेष विद्‌यार्थियों को अलंकार की एक-एक पंक्ति अच्छी तरह से समझाएँ।

शब्द सौरभ : उद्‌यम = मेहनत, परिश्रम; काग = कौआ; पौन = पवन; ज्यों लौं = जब-तक; सबल = शक्तिशाली; तरुवर = बड़ा पेड़; गुनन = गुणों से; सुक = तोता; सारी = मादा मैना; काक = कौआ; पिक = कोयल; जड़मति = मूर्ख; पानी = जल, सम्मान, चमक।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

'खरा तो एकचि धर्म' इस मराठी प्रार्थना गीत को रसास्वादन करते हुए सुनो और सस्वर गायन करके कविता के आशय पर चर्चा करो।

(२) पढ़ो, सोचो और बढ़ो :

निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को रसास्वादन के साथ पढ़ो, आशय को समझो। गिरिधर का रचनाकाल बताओ साथ ही उनकी लेखन शैली के बारे में चर्चा करो :

गुन के गाहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय,
जैसे कागा-कोकिला, शब्द सुनै सब कोय।
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन,
दोऊ को इक रंग, काग सब भये अपावन।
कह गिरिधर कविराय सुनो हे ठाकुर मन के,
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥ **कुंडलियाँ** – गिरिधर

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) मान-सम्मान कब मिलता है?
(ख) यह पाठ काव्य की किस विधा प्रकार-से है?
(ग) सतत प्रयास से किसकी प्राप्ति होती है?
(घ) 'पानी' शब्द किन-किन अर्थों में आया है?
(ङ) सुई की जगह तलवार क्यों काम नहीं आ सकती?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं, व्याख्या लिखो :

(च) "विद्‌या-धन, उद्‌यम बिना .... पंखे की पौन॥"
(छ) "रहिमन धागा प्रेम का .... गाँठ परि जाय॥"

(५) परखो स्वयं को :

सही या गलत लिखिए :

(ट) तरुवर अपना फल स्वयं खाते हैं। – ☐

(ठ) रहीम एक प्रसिद्ध दोहाकार है। –

(ड) दोहे में जीवन की सीख मिलती है। –

(ढ) बिना परिश्रम के सफलता मिलती है। –

(६) निपुण बनो :

'अपनी दिनचर्या' के आधार पर 'डायरी लेखन' की शुरुआत करो।

(७) एक कदम भाषा की ओर :

(त) निम्नलिखित शब्द पढ़कर शिक्षकों के मार्गदर्शन में शब्दकोश की सहायता से उनके विभिन्न अर्थ ढूँढ़कर लिखो :

माला, कोण, पट, मन, जगत, अनिल, अपेक्षा।

(थ) दोहों में आए तुकांत शब्दों की सूची बनाओ। जैसे– होइ–कोइ।

(८) आओ, कुछ रचो :

जीवन पर आधारित अपना एक सरल दोहा दो तुकांत पंक्तियों में लिखने का प्रयास करो।

(९) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

✻ संत कबीर के कुछ दोहे पढ़कर उनके आशय लिखो :

(१०) जुड़ो सबसे :

महाराष्ट्र के बड़े बाँधों की जानकारी प्राप्त करके उनकी आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त करो।

(११) पाठ से आगे :

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर महाराष्ट्र के संत नामदेव, संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर और संत एकनाथ की जानकारी पर चर्चा का आयोजन करो:

(प) संतों के नाम –

(फ) उनके ग्रंथ –

(ब) उनके सुवचन –

५. प्रेरक संस्कार

– श्रीकृष्ण

जन्म : १९३४
प्रमुख रचनाएँ : 'दुनिया रंग-बिरंगी', 'सोने के कंगन', 'प्रेरक कथाएँ' आदि।
जीवन में आत्मविश्वास, कृतज्ञता की भावना और स्वावलंबन के भाव यहाँ कथा एवं लघुकथाओं में प्रकट हुए हैं।

आत्मविश्वास की जड़ें

एक बार विधाता के मन में अपनी सृष्टि को देखने की इच्छा जगी। अभी वे धरती पर पहुँचे ही थे कि उन्होंने हाथ में कुदाली लिए एक किसान को एक विशाल पर्वत को खोदते देखा। उसके इस दुस्साहस पर विधाता को हँसी आई और अचरज भी हुआ। उन्होंने किसान से पूछा, "भाई, तुम यह क्या कर रहे हो?"

किसान ने उत्तर दिया, "मैं इस पहाड़ को यहाँ से हटा रहा हूँ। इसके कारण बादल इस पार आकर मेरे खेतों में पानी नहीं बरसा पाते। इससे टकराकर वे उस पार ही खाली हो जाते हैं।" "लेकिन क्या तुम इसे हटा सकोगे?" विधाता ने पूछा। "क्यों नहीं!" किसान ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "मैं इसे हटाकर ही दम लूँगा।"

विधाता मुस्कराकर आगे बढ़ गए। अभी वह कुछ ही कदम गए होंगे कि स्वयं पर्वतराज ने उनके आगे हाथ जोड़कर कहा, "प्रभु, मेरी रक्षा करें। मुझे और कहीं शरण दें।" विधाता ने कहा, "अरे, क्या तुम सचमुच किसान से डर गए?" "मेरा डर सच्चा है, प्रभु।" पर्वतराज ने कहा फिर वह बोला, "किसान के भीतर जो आत्मविश्वास है, वह मुझे उखाड़कर ही छोड़ेगा। अगर अपने जीवनकाल में वह मुझे नहीं भी उखाड़ सका तो उसके बेटे, पोते और पड़पोते मुझे जरूर उखाड़ देंगे। आत्मविश्वास की जड़ें बहुत लंबी और गहरी होती हैं, प्रभु।"

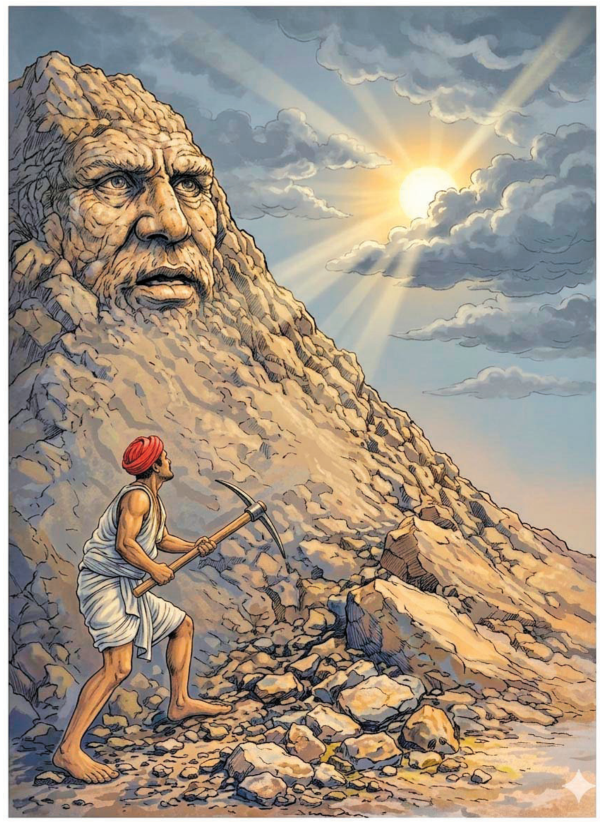

कृतज्ञता

हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र अपनी असीम उदारता के कारण कंगाल हो चुके थे। ऐसा समय भी आया जब उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वे पत्रों का उत्तर भेज सकते। जो पत्र आते थे, उनका उत्तर लिखकर लिफाफे में बंद करके भारतेंदु जी मेज पर रख देते थे। उनपर टिकट लगाने के लिए पैसे हों तो पत्र भेजे जाएँ। पत्रों का ढेर जमा हो गया उनकी मेज पर। भारतेंदु

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों से कथा/लघुकथाओं का मौन वाचन कराएँ। कहानियों के प्रमुख मुद्‌दों पर चर्चा करें। उनको कथा लेखन के बारे में बताएँ। कल्पना के आधार पर घटना का वर्णन लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। समूह बनाकर कथा के छोटे-छोटे भाग को उनसे संवाद के रूप में लिखवाएँ। संवाद लेखन में विशेष विद्‌यार्थियों की सहायता करें।

जी के किसी मित्र ने उन्हें पाँच रुपये के टिकट लाकर दिए और तब वे पत्र डाक में डाले गए।

धीरे-धीरे भारतेंदु बाबू की आर्थिक स्थिति कुछ सुधरी। जब भी वे मित्र मिलते तभी भारतेंदु जी जबरदस्ती पाँच रुपये उनकी जेब में डाल देते और कहते, "आपको याद नहीं, आपके पाँच रुपये का मुझपर ऋण है।" अंत में

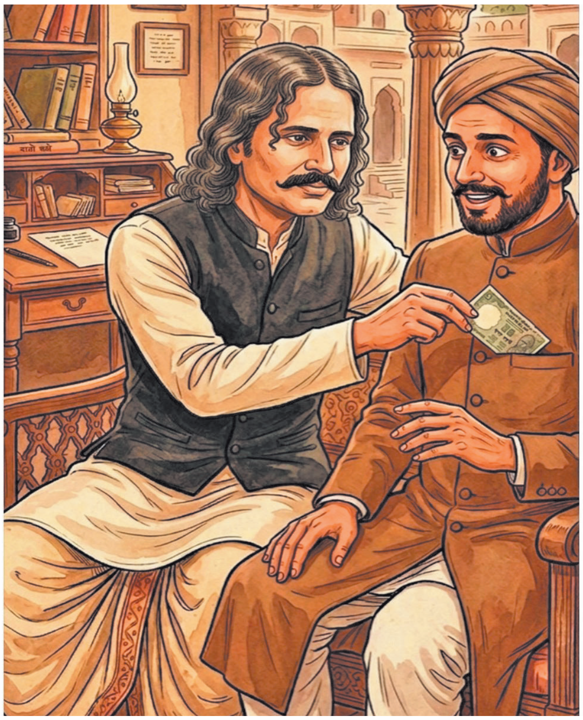

मित्र ने एक दिन कहा, "मुझे अब आपसे मिलना बंद कर देना पड़ेगा।"

भारतेंदु बाबू की आँखें भर आईं। बोले, "भाई, तुमने कठिन समय में मुझे पाँच रुपये की मदद की थी। यदि मैं जीवन भर प्रतिदिन तुम्हें पाँच रुपये देता रहूँ तो भी तुम्हारे ऋण से मुक्त नहीं हो सकता।"

स्वावलंबन

युवक ने निर्भीकतापूर्वक न्यायाधीश से कहा, "मैं बिलकुल निर्दोष हूँ। मुझपर पैसों की चोरी का झूठा आरोप लगाया गया है। मैं अपने पक्ष में दो गवाहियाँ पेश करना चाहता हूँ।"

गवाह बुलाए गए। पहला गवाह था एक माली। उसने कहा, "यह युवक प्रतिदिन मेरे बगीचे में आकर कुएँ से पानी खींचता है जिसके बदले में इसे कुछ पैसे मजदूरी दे देता हूँ।" दूसरी गवाही में एक बूढ़ी औरत ने कहा, "मैं बूढ़ी हूँ। घर में कोई नहीं है। यह युवक प्रतिदिन मेरे घर अनाज पीस जाता है और अपनी मजदूरी ले जाता है।"

इस प्रकार शारीरिक परिश्रम करके युवक कुछ पैसे प्रतिदिन कमाता और उसी से अपना निर्वाह करता तथा पढ़ाई की फीस भी चुकाता। उसकी इस नेक कमाई की बात सुनकर न्यायाधीश बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उसे आर्थिक सहायता देनी चाही ताकि फीस भरने के लिए उसे मजदूरी न करनी पड़े और वह पढ़ाई में अधिक समय दे सके। परंतु उस स्वावलंबी युवक ने सहायता लेना स्वीकार नहीं किया और कहा, "मैं स्वयं अपने परिश्रम की कमाई से पढ़ना चाहता हूँ।"

यह भी जानो :

मधु खेलती है। मोहिनी नहीं खेलती है। मोहिनी, तुम क्यों नहीं खेलती? मोहिनी, जाओ खेलो। वाह! मोहिनी खेलने लगी।

ऊपर के वाक्य पढ़ो। पहले वाक्य में मधु के खेलने की सामान्य जानकारी दी गई है। दूसरे वाक्य में नहीं खेलने अर्थात कार्य न होने का भाव है। तीसरा वाक्य प्रश्नसूचक है। अंत में प्रश्न चिह्न(?) है।

'मोहिनी, जाओ खेलो' में आज्ञा, आदेश है तो अंतिम वाक्य में उद्‌गार, खुशी दिखाई पड़ रही है।

यहाँ ऊपर आए वाक्य क्रमशः विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नसूचक, आज्ञासूचक और उद्‌गारसूचक वाक्य हैं। ये वाक्य, अर्थानुसार वाक्य के कुछ प्रमुख भेद हैं।

अध्यापन संकेत : विद्यार्थियों को 'वाक्य किसे कहते हैं' समझाएँ। ऊपर दिए गए 'यह भी जानो' में दिए गए वाक्यों का वाचन कराएँ। वाक्य में अर्थ के आधार पर विधानार्थक, निषेधार्थक, प्रश्नसूचक, आज्ञासूचक और उद्‌गारवाचक आदि वाक्य भेदों पर चर्चा करें। उनसे इन वाक्य भेदों का अभ्यास कराएँ।

शब्द सौरभ : विधाता = सृष्टिकर्ता; दुस्साहस = अनुचित साहस; असीम = सीमा रहित, अपार; कंगाल = निर्धन; ऋण = कर्ज; निर्दोष = दोष रहित, निरपराध; नेक = भला, सुयोग्य; हाकिम = न्यायाधीश।

मुहावरे : दम लेना = रुक कर, आराम करना; **निर्वाह करना** = गुजारा करना। **आँखें भर आना** = भावुक हो जाना, आँखों में आँसू आ जाना।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

'आत्मविश्वास की जड़ें बहुत लंबी और गहरी होती हैं।' इसपर अध्यापक के मार्गदर्शन में चर्चा करो।

(२) पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण करो :

– आत्मविश्वास	– कृतज्ञता	– स्वावलंबन
– दुस्साहस	– निर्भीकता	– आर्थिक

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) किसान क्या दुस्साहस कर रहा था?

(ख) भारतेंदु हरिश्चंद्र जी अपने दोस्त की जेब में पाँच रुपये क्यों डाल देते थे?

(ग) न्यायाधीश ने युवक को किस प्रकार की सहायता देने की बात की?

(घ) 'आत्मविश्वास की जड़ें' किस विधा में लिखी गई रचना है?

(ङ) कथा के माध्यम से भारतेंदु जी का कौन-सा गुण हमारे सामने आता है?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती है :

पंक्तियों की व्याख्या अपने शब्दों में स्पष्ट करो :

(च) "........... प्रतिदिन तुम्हें पाँच रुपये देता रहूँ, फिर भी तुम्हारे ऋण से मुक्त नहीं हो सकता।"

(छ) "मैं स्वयं अपने परिश्रम की कमाई से पढ़ना चाहता हूँ।"

(५) परखो स्वयं को :

*** अर्थ के अनुसार वाक्य भेद पहचानकर उनके नाम लिखो :**

(ट) आज वर्षा नहीं होगी। – ______

(ठ) क्या तुम कल विद्‌यालय जाओगे? – ______

(ड) तुम बैठकर पढ़ाई करो। – ______

(ढ) वाह! कितना सुंदर बाग है। – ______

(ण) मुंबई, देश की आर्थिक राजधानी है। – ______

(६) आओ, कौशल दिखाओ :

राघव को यदि कक्षा के सामने आकर कविता या कहानी सुनाने के लिए कहा जाए

तो उसका गला सूख जाता था।
यहाँ राघव की क्या समस्या हो सकती है? उसे इस समस्या के समाधान के तुम क्या उपाय बताओगे? राघव को क्या समझाओगे? उसे समझाने के लिए तुम क्या संदेश लिखोगे?

(७) एक कदम भाषा की ओर : **उचित जोड़ी मिलाओ**

समानार्थी शब्द		विलोम शब्द	
पर्वत	हररोज	हँसी	सच्चा
विधाता	पहाड़	इच्छा	लघु
निर्भीकता	ईश्वर	विशाल	रुलाई
प्रतिदिन	निडरता	झूठा	अनिच्छा

(८) खेल-खेल में भाषा :

इन शब्दों में मात्रा लगाकर नये सार्थक शब्द बनाओ। ऐसे पाँच शब्दों की सूची बनाओ। जैसे- * कल - काल, काला, कला, काली, कील।

जल -　　　　चर-　　　　पल-

(९) आओ, कुछ रचो :

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर एक लघुकथा लिखो -
- एक लड़का है जो हमेशा नई वस्तुओं के लिए जिद करता है।
- परिवार के लोगों से और करीबी लोगों से हमेशा वस्तुओं की माँग करता है।
- यह लड़का कभी किसी बात के लिए कृतज्ञ नहीं है।
- उस लड़के को कृतज्ञता का महत्त्व सिखाने वाली एक घटना घटती है। (अपनी कल्पना से यह घटना लिखो।)
- साथ ही कथा से मिलने वाली सीख भी लिखो।

(१०) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

पिछली कक्षाओं में पढ़ी तुम्हारी किसी प्रिय कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखो।

(११) पाठ से आगे :

किसी बड़े की सहायता से 'डाकघर' के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने किसी रिश्तेदार को डाकघर में होने वाले कार्यों के बारे में जानकारी देने वाला पत्र लिखो।

सुनो, पढ़ो और मिलकर गाओ :

६. सोना-माटी

– कीर्ति चौधरी

जन्म : १ जनवरी, १९३४ उन्नाव, उ.प्र, *मृत्यु :* १३ जून २००८, लंदन।
प्रमुख रचनाएँ : 'खुले आसमान के नीचे वह', 'कविताएँ-कीर्ति चौधरी' आदि।
इस कविता में मातृभूमि का सुंदर वर्णन करते हुए चरवाहों के निश्चिंत, पवित्र एवं कर्मप्रधान जीवन की सुंदरता का वर्णन किया गया है।

वाचक

रात भागती चली जा रही, ओढ़े चादर काली,
उधर विहँसता सूरज निकला, फैल गई उजियाली।
कमलों ने अँगड़ाई लेकर सुंदर आँखें खोलीं,
कलरव करती उड़ती निकली पखेरुओं की टोली।
(दूर से आती हुई सहगान की ध्वनि),
हम चरवाहे, हम चरवाहे,
निकले वन की ओर।

एक स्वर

आसमान से सोना बरसा,
धरती का माटी-तन हरसा,
झरने के मृदु कल-कल स्वर से
भरी खुशी से भोर।

अध्यापन संकेत : कविता का सस्वर गायन करके विद्यार्थियों को सुनाएँ। उनको दो समूह में विभाजित करके कविता का रसास्वादन करते हुए सस्वर गायन करवाएँ। कविता में आए कर्म प्रधान जीवन की सुंदरता का वर्णन अपने शब्दों में करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। कविता, नाटक और कहानी विधा के अन्य रचनाकारों की जानकारी दें। कविता में आए मानवीकरण, रूपक और उपमा अलंकारों की जानकारी दें। इस गीतिनाट्य का नाट्यीकरण कराएँ और पात्र के रूप में विशेष विद्यार्थी को भाग लेने के लिए प्रेरित करें। प्रत्येक पंक्ति में आए भाव को प्रश्न पूछते हुए उन्हें समझाएँ। कविता की पंक्तियों से गद्य विधा में वाक्य रचना कराएँ।

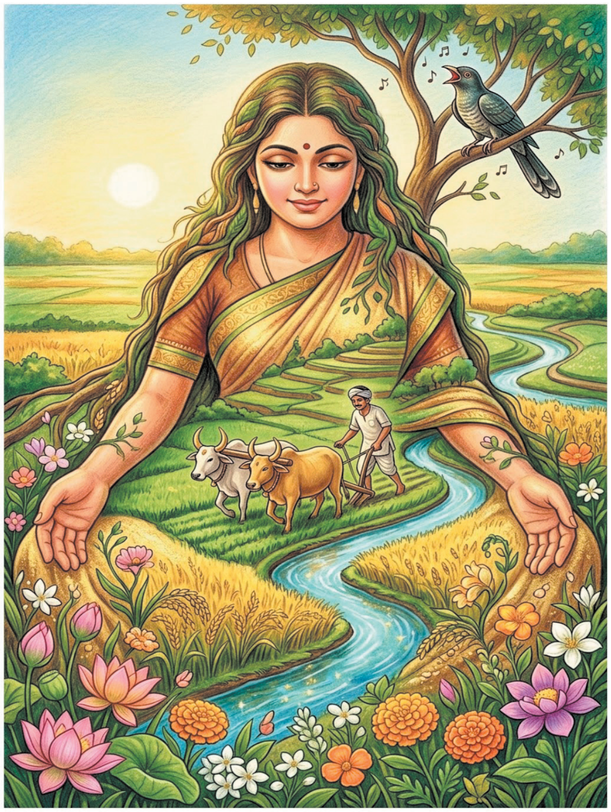

दूसरा स्वर

बिखरी खेतों में चमकीली,
लहराती बालें महकीली,
सारी कलियाँ हुई छबीली,
इनका ओर न छोर।

पहला स्वर

यह धरती की माटी, इससे
प्यार बड़ा है हमको।
बचपन के दिन यहाँ बिताए
राह-घाट पर ढोर चराए,
अपनी माँ की गोदी पर
अधिकार बड़ा है हमको।

दूसरा स्वर

यह सोनमहल, यह सोनमहल,
सरसों फूले, भौंरा झूले,
कोयल चहके, कलियाँ महकें,
बन जाता छन में रंगमहल।
यह रंगमहल, यह रंगमहल।

पहला स्वर

हम गंगा के जल-से पावन,
हम राग-द्वेष से दूर हैं,
हर पंछी से प्यार हमें,
जड़-चेतन पर अधिकार हमें,
हम चरवाहों के खिले हृदय,
मधुरस से भरपूर हैं।

दूसरा स्वर

यह जीवन बंधनहीन बहुत ही प्यारा।
जैसे खुशबू के घन स्वतंत्र,
जैसे माटी के कण स्वतंत्र,
जैसे बादल के मन स्वतंत्र,
जैसे पंछी के तन स्वतंत्र,
यह जीवन कल्मषहीन बहुत ही प्यारा।

सम्मिलित स्वर

सोना-माटी है भारत के देश की,
सोना-माटी धरती का वेश भी।
सोना-माटी के कण-कण में प्यार है,
सोना-माटी ही जीवन आधार है।
सोना-माटी है अमृत से सींची,
सोना-माटी ने दुनिया है सींची,
सोना-माटी है माथे का चंदन,
आओ सब मिलकर करें उसी का वंदन।

वाचक

(गंभीर स्वर में)
दिन बीता किसानों का, सोना लगा क्षितिज को छूने,
आधी रात, अँधेरा तन पर बिखराया है भू! तूने
दिन के थके, पखेरू उड़ते चले नीड़ की ओर,
दीप जल गए, चरवाहे भी चले समेटे ढोर।
(पृष्ठभूमि में लुप्त होती हुई वाद्य ध्वनि के साथ-साथ धीमा स्वर)

हम चरवाहे, हम चरवाहे,
चले घरों की ओर।

शब्द सौरभ : विहँसना = हँसना; उजियाली = प्रकाश; कलरव = पक्षियों का मधुर स्वर; सहगान = मिलकर गाया गया गीत; भोर = सबेरा; घाट = नदी का किनारा; ढोर = गाय, भैंस, बैल; पावन = पवित्र; जड़-चेतन = निर्जीव और सजीव; मधुरस = मीठा रस; बंधनहीन = बिना बंधन के; घन = बादल। कल्मष = मैल, गंदगी; क्षितिज = आकाश और पृथ्वी के मिलने की आभासी रेखा।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

(क) प्रकृति मनुष्य को अनेक उपहार देती है।

(ख) चलो! गाँव की ओर।

(२) रसास्वादन करते हुए पढ़ो, सोचो और बढ़ो :

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?

– रामनरेश त्रिपाठी

* पुस्तक में अब तक तुमने कौन-कौन-सी विधाओं की रचनाएँ पढ़ी हैं, बताओ।

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

कविता की 'सोना लगा क्षितिज को छूने', 'अपनी माँ की गोदी पर अधिकार बड़ा है हमको', 'सोनमहल और रंगमहल', 'चरवाहों के हृदय मधुरस से भरपूर हैं' इन पंक्तियों पर अलग-अलग प्रश्न बनाकर उनके उत्तर लिखो।

(च) .... (छ) ....

(ज) .... (झ) ....

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

उधर विहँसता सूरज निकला............. पखेरुओं की टोली।

इन पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखो। इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री कौन-सी भावनाएँ व्यक्त करना चाहती हैं?

(५) परखो स्वयं को :

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तरों के लिए सही विकल्पों का चयन करो :

(ट) 'ओढ़े चादर काली' पंक्ति किसके लिए आई है?

१. बादलों २. धरती
३. रात ४. किसान

(ठ) कवयित्री ने धरती की माटी में किस अवस्था के दिन बिताए?

१. युवावस्था २. बचपन
३. प्रौढ़ावस्था ४. बुढ़ापा

(ड) 'हम चरवाहे...' पंक्ति से क्या भाव प्रकट होता है?

१. आलस्य २. श्रम और प्रकृति से जुड़ा जीवन
३. भय ४. आराम

(ढ) कविता में धरती को किस रूप में दिखाया गया है?

१. व्यापार की वस्तु २. माँ
३. शत्रु ४. निर्जीव वस्तु

(ण) 'सोना-माटी' शब्द किसका प्रतीक है?

१. केवल सोने का २. भारत की उपजाऊ मिट्टी
३. चरवाहे ४. धन-संपत्ति

(त) कविता में किस जीवन को सबसे प्रिय बताया गया है?

१. बंधनयुक्त २. कल्पनाहीन
३. स्वतंत्र और प्राकृतिक ४. ऐशो-आराम

(६) खेल-खेल में भाषा :

(प) शब्दकोश की सहायता से दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

क्र.	मुहावरे	अर्थ	वाक्य में प्रयोग
१.	माथे का चंदन होना		
२.	निर्वाह करना		
३.	तंग करना		
४.	दम लेना		
५.	होश उड़ना		

(फ) विलोम पदवाला वाक्य अपनी कॉपी में लिखो। जैसे - गाना गा = गाना गा।

.... = ...

(७) आओ, कुछ रचो :

(य) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को अपने शब्दों में पूर्ण करो।

नदियाँ कल-कल गीत सुनाएँ
जीवन का विस्तार ....

(र) फूलों के नामों का आधार लेते हुए एक सरल शब्द पहेली बनाओ।

(८) निपुण बनो :

प्रस्तुत कविता के किन्हीं दो क्रमिक छंदों का संवाद के रूप में लेखन करके प्रस्तुत करो।

(९) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

....

(१०) एक कदम भाषा की ओर :

नीचे कुछ वाक्य दिए हैं। उनमें से कोई एक शब्द बदलने पर उसके अर्थ में कौन-सा परिवर्तन होगा, समझो और शब्द बदलकर वाक्य लिखो :

इ. सूरज ने खेतों में अँधेरा बिखेरा। ....

ई. किसान हल चला रहा है थकान से। ....

उ. खेतों में पक्षी चुप हैं। ....

ऊ. किसान बंधन में रहकर जीवन जीता है। ....

(११) जुड़ो सबसे : प्रकल्प

* गमले में पौधा लगाने के लिए आवश्यक चीजें जुटाओ। गमले में मिट्टी भरो। उसके बाद बीज बोकर पानी छिड़को। आवश्यकता के अनुसार पानी छिड़कते जाओ। बीज के अंकुरित होने पर पंद्रह दिनों तक पौधे की वृद्धि का निरीक्षण करो।
* तुमने जो पौधा लगाया है, उसकी संपूर्ण प्रक्रिया पर वृत्तांत तैयार करो।

पढ़ो और समझो :

७. मिसाइल मैन

अनुवाद – डॉ. ओ. पी. झा

जन्म : १ फरवरी, १९७१ दरभंगा, बिहार।
प्रमुख रचनाएँ : 'मैनेजमेंट गुरु लॉर्ड कृष्णा', 'अदम्य साहस' (अनुवाद) इसके अतिरिक्त 'जीवनवृक्ष', 'हम होंगे कामयाब', 'मेरे सपनों का भारत', 'हमारे पथप्रदर्शक' आदि।
यह साक्षात्कार भारतरत्न एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम की मूल पुस्तक 'Indomitable spirit' के अनुवाद 'अदम्य साहस' से लिया गया है। यहाँ डॉ. कलाम एवं भारत के युवाओं ने एक-दूसरे से संवाद किया है। इस साक्षात्कार में डॉ. अब्दुल कलाम जी के प्रेरक विचारों से हम परिचित होते हैं।

'भारतरत्न' 'मिसाइल मैन' के नाम से प्रसिद्ध भूतपूर्व राष्ट्रपति सम्माननीय डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का दृढ़ विश्वास था कि विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र का भविष्य होते हैं। जीवन भर वे विद्यार्थियों और युवाओं से प्रत्यक्ष या ऑनलाइन संवाद करते रहे। उनका कहना था, "जीवन में तीन बातें बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं-ज्ञान, परिश्रम और प्रयास।" हमें विकसित भारत का स्वप्न साकार करने का सफर युवा वर्ग के बल पर ही तय करना होगा। 'ऑनलाइन' साक्षात्कार का कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत है।

(सम्माननीय कलाम साहब प्रश्न करते हैं-)

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : भारत को विकसित देश बनाने के लिए आप क्या करेंगे?

मेघालय का छात्र : मैं एक शिक्षक बनूँगा (इंजीनियर या प्रोफेसर बनने के बजाय), मेरा इस काम में मन भी लगता है। मैं मानता हूँ कि देशसेवा का सबसे अच्छा रास्ता अन्य व्यवसाय अपनाने की तुलना में एक शिक्षक या एक सैनिक बनना है।

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : हम अपने देश की गौरवगाथा कब गाएँ?

केरल की बालिका : "एक अकेले फूल से माला नहीं गूँथी जा सकती। मैं अपने देशवासियों को अपने राष्ट्र से प्रेम करना सिखाऊँगी और विकसित भारत की माला गूँथने के काम में आगे बढ़ूँगी।''

गोवा का युवक : मैं एक इलेक्ट्रॉन बन जाऊँगा और जिस प्रकार इलेक्ट्रॉन अपनी कक्षा में चक्कर काटता है, उसी प्रकार आज से मैं अपने देश के लिए काम करूँगा।

अटलांटा से भारतीय नवयुवक : जब भारत इस स्थिति में होगा कि आवश्यकता पड़ने पर किसी देश के विरुद्ध प्रतिबंध लगा सकता हो तब मैं भारत की गौरवगाथा गाऊँगा। (इस युवक के कहने का भाव भारत की आर्थिक महाशक्ति बनने से है)।

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : भारत में ५४ करोड़ से अधिक युवक रहते हैं। यह एक विशाल जनशक्ति है। सशक्त

अध्यापन संकेत : साक्षात्कार का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन कराएँ। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के कार्यों की जानकारी दें। देश के विकास में युवाओं का महत्त्व बताएँ। परिच्छेद में आए वाक्यों से संज्ञा शब्द खोजने के लिए कहें। उन्हें साक्षात्कार विधा की जानकारी दें। साक्षात्कार योजना और उपयोजन के बारे में जानकारी देकर नियमित संपर्क में रहने वाले व्यक्तियों के साक्षात्कार लेने के लिए प्रेरित करें। पाठ का नाट्यीकरण कराएँ। उन्हें उनकी पसंदवाली पुस्तकों के नाम बताने के लिए प्रेरित करें। 'वाचन प्रेरणा दिवस' मनाएँ। विशेष विद्यार्थियों की वाचन के लिए सहायता करें।

ध्येय संपन्न युवकों के बल पर, उनकी ऊर्जा को सक्रिय करके भारत एक आर्थिक महाशक्ति बन सकता है।

एक विद्‌यार्थी : युद्‌ध की तैयारी को शांति के लिए और सुरक्षा के रूप में कैसे उचित ठहराया जा सकता है?

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : जब विश्व के कई देशों के पास परमाणु हथियार हैं तो भारत हाथ-पर-हाथ धरे बैठा नहीं रह सकता। एक शक्तिशाली दूसरे शक्तिशाली का सम्मान करता है। हमने रक्षा क्षेत्र में जो भी किया है, सिर्फ अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए किया है।

एक विद्‌यार्थी : भारत की परमाणु नीति का मूलमंत्र क्या है?

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : भारत ने न तो पहले किसी पर आक्रमण किया है और न ही भविष्य में किसी पर आक्रमण करेगा। हमारी परमाणु नीति का मूलमंत्र है परमाणु हथियार का पहला प्रयोग हमारी ओर से नहीं। इसका मतलब यह है कि देश की सुरक्षा हमारा सबसे बड़ा मिशन है।

एक लड़की : राष्ट्रपति डॉ. कलाम और 'मिसाइल मैन' डॉ. कलाम में क्या अंतर है?

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : 'मिसाइल मैन' का संबंध देश को शक्ति और सुरक्षा देने से है जबकि राष्ट्रपति कलाम चाहते हैं कि इस देश की जनता के चेहरे पर मुस्कराहट बनी रहे।

एक अन्य विद्‌यार्थी : विज्ञान और अध्यात्म का जीवन में क्या महत्त्व है?

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : विज्ञान की कोशिश है कि लोगों का भौतिक जीवन बेहतर हो जबकि अध्यात्म का प्रयास है कि प्रार्थना इत्यादि उपायों से इन्सान सच्ची राह पर चले। विज्ञान और अध्यात्म के मिलन से तेजस्वी नागरिक का निर्माण होता है। तर्क और विज्ञान अध्यात्म के मूल तत्व हैं।

यह भी जानो :

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो हमें संज्ञा के बारे में विशेष जानकारी देते हैं। ऐसे शब्द विशेषण होते हैं। शब्द जिसकी विशेषता बताते हैं; वे विशेष्य शब्द होते हैं। इस अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ो और संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्दों की सूची बनाओ।

विशाल घाटी में ठंडे पानी का एक झरना गहरे तालाब में गिर रहा है। ऊँचे पहाड़ों पर घना जंगल फैला हुआ है। उस जंगल में रंग-बिरंगे, सुगंधित फूल खिले हैं। कुछ पक्षी मधुर स्वर में गा रहे हैं। तीन विशाल सफेद बादल आकाश में तैर रहे हैं। सूर्य की बहुत सारी सुनहरी किरणें सब कुछ आनंदमय बना रही हैं। वातावरण में थोड़ी गर्मी और थोड़ी ठंडक भी है। यह वसंत ॠतु के आगमन की सूचना है।

ऊपर परिच्छेद में आए विशेषण और विशेष्य शब्दों का वर्गीकरण निर्देशानुसार करो।

गुण बताने वाले		संख्या बताने वाले		नाप तौल बताने वाले		सार्वनामिक/निर्देश करने वाले	
विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों को दिए हुए अनुच्छेद का वाचन करने के लिए कहें। उन्हें विशेषण-विशेष्य की जानकारी दें और विशेषण के प्राथमिक चार भेद- गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण और सार्वनामिक विशेषणों के बारे में जानकारी दें। इन चारों भेदों के अन्य उदाहरण भी दें। उदाहरण देकर ऊपर दी गई सूची के अनुसार वर्गीकरण कराएँ।

शब्द सौरभ : गौरवगाथा = महानता की कहानी; सशक्त = बलवान; संरचना = बनावट, रचना; मकसद = उद्देश्य; जटिल = कठिन; पनपना = विकसित होना।

मुहावरे : हाथ-पर-हाथ धरे बैठना = निष्क्रिय रहना, समय बर्बाद करना।

स्वाध्याय

(१) अपने बड़ों से सुनो और चर्चा करो :

(क) एक अकेले फूल से माला नहीं गूँथी जा सकती।

(ख) देश की गौरव गाथा।

(२) पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

पाठ में आए भविष्यकाल के वाक्यों का मुखर वाचन करो।

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

पाठ पर आधारित पाँच प्रश्न बनाकर उनके उत्तर लिखो। (प्रश्न बनाते समय क्या, कब, कहाँ, क्यों, किसने शब्दों का प्रयोग करो।)

(च) ....

(छ) ....

(ज) ....

(झ) ....

(ञ) ....

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

"भारत ने न तो पहले किसी पर आक्रमण किया है और न ही भविष्य में किसी पर आक्रमण करेगा।" इस पंक्ति से भारत के बारे में कौन-से विचार आते हैं, व्याख्या करते हुए अपने विचार लिखो।

(५) परखो स्वयं को :

अनुच्छेद पढ़कर उचित स्थानों पर उचित विरामचिह्न लगाओ। (? , " " ! - ।)

एक विद्‌यार्थी : आपकी प्रिय पुस्तक कौन-सी है

डॉ.ए.पी.जे कलाम : तीसरी पुस्तक है डॉ. एलेक्सिस करेल की लिखी हुई मैन द अननोन नोबेल पुरस्कार से सम्मानित डॉ. एलेक्सिस ने इस पुस्तक में प्रकाश डाला है

कि बीमारी के दौरान मन और शरीर दोनों के इलाज की जरूरत होती है क्योंकि दोनों में अभिन्न संबंध है आप एक का इलाज करें और दूसरे पर ध्यान न दें ऐसा हो नहीं सकता जो बच्चे डॉक्टर बनने का सपना देख रहे हैं उन्हें यह किताब विशेष रूप से पढ़नी चाहिए वे समझ पाएँगे कि मानव शरीर महज एक यांत्रिक प्रणाली नहीं है यह एक बुद्धिमत्तापूर्ण और सुनियोजित संरचना है जो मानसिक और शारीरिक अवयवों के मेल से बनी है

(६) आओ, कौशल दिखाओ :

समाज में फैले अंधविश्वास को दूर करने के लिए तुम क्या-क्या करोगे, लिखो।

(७) एक कदम भाषा की ओर :

नीचे दिए गए शब्द समूह पढ़ो। इनमें आए गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, और सार्वनामिक/निर्देश या संकेतवाचक विशेषण पहचानकर लिखो :

सुंदर पौधा, चार पेड़, दो किलो चीनी, वह चिड़िया, लाल कमीज, पुराना मकान, दो लीटर दूध, यह किताब।

(८) आओ, कुछ रचो :

अध्यापक की सहायता और संदर्भ पुस्तकों से भारत की 'मिसाइल महिला वैज्ञानिक' के बारे में जानकारी प्राप्त करके लिखो।

(९) निपुण बनो :

प्रस्तुत पाठ के संवादों को आपस में बाँटकर नाटक के रूप में प्रस्तुत करो।

(१०) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

....

(११) पाठ से आगे :

विद्यालय के विज्ञान अध्यापक/अध्यापिका का साक्षात्कार लेने के लिए छह-सात प्रश्न बनाकर साक्षात्कार लो।

पढ़ो और समझो :

८. साप्ताहिक धमाका

– डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

जन्म : ३ मार्च, १९४० नागोद (म.प्र) *मृत्यु :* १४ नवंबर, २०१३।
मुख्य रचनाएँ : 'खेल बच्चे का', 'चंदा के देश चलें', 'मंगल ग्रह में राजू' आदि।
सम्मान/पुरस्कार : 'बाल साहित्य भारती पुरस्कार', 'कीर्ति सम्मान', 'वात्सल्य बाल साहित्य समीक्षा पुरस्कार' आदि।
प्रस्तुत पाठ द्वारा समाज में फैली बुराइयों का बच्चों द्वारा पर्दाफाश किया जाना, दर्शाया गया है। इस पाठ में समाज में फैली बुराइयों को सबके सामने प्रकट करने की प्रेरणा मिलती है।

रविवार की सुबह पूरे मुहल्ले में 'साप्ताहिक धमाका' की ही चर्चा थी। फुलस्केप कागजों पर कार्बन लगाकर हाथ से लिखा गया 'साप्ताहिक धमाका' का पहला अंक सभी ने सुबह-सुबह अपने घर के दरवाजे पर पड़ा पाया था। उस अंक की मुख्य खबर बड़े-बड़े अक्षरों में थी– 'लाला धनीराम के मसालों में मिलावट।' फिर छोटे अक्षरों में मसाले, चीनी, अनाज आदि में लाला ने जो मिलावट की थी, उसके प्रति सबको आगाह किया गया था। कम तौलने की कला में माहिर लाला को पुरस्कृत करने का प्रस्ताव भी था।

'साप्ताहिक धमाका' में कुछ खबरें चटपटी थीं, कुछ तिलमिलाने वाली। कुछ खबरों के शीर्षक थे– 'गुटकू भटनागर बैंगन की सब्जी से चिढ़ते हैं,' 'ठेकेदार हजारासिंह ने लड़की की शादी में दिया पचास लाख नकद दहेज', 'शिक्षक सोहनलाल साइबर फ्रॉड के शिकार।'साप्ताहिक के दूसरे पृष्ठ पर कुछ शैतान बच्चों के बारे में खबरें दी गईं थीं– 'वीरू ने पिता की घड़ी चुराकर पचास रुपयों में बेची', 'राजेश का सफेद कुत्ता चोरी हो गया', 'दीनू और रमेश ने स्कूल से भागकर पिक्चर देखी।'

अखबार के अंत में अगले अंक के मुख्य आकर्षण दिए गए थे– 'रिश्वतखोर मुंशी शादीलाल के काले कारनामे', 'मंदिर ट्रस्ट के हिसाब में घोटाला', 'सीक्रेट एजेंट डेविड की विशेष रिपोर्ट', 'मुहल्ले के शराबियों का भंडाफोड़!'

अध्यापन संकेत : पाठ के प्रथम परिच्छेद का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें। अन्य परिच्छेदों का विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ। पाठ में आईं प्रमुख घटनाओं और आज की स्थिति पर चर्चा कराएँ। पाठ के समाचारों के सारांश बताने के लिए कहें। बच्चों को बाल समाचारपत्र तैयार करने हेतु मार्गदर्शन करें। उनसे सर्वनाम के भेद के अंतर्गत 'पुरुषवाचक' सर्वनामों के भेद पर चर्चा करें। उदाहरण देकर उत्तम, मध्यम एवं अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम की जानकारी दें। सर्वनाम पहचानकर उदाहरण देने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। विशेष विद्यार्थियों की सुविधा के लिए चित्रकार्ड बनाकर मुहावरे समझाएँ।

'साप्ताहिक धमाका' की ऐसी सनसनीखेज खबरें पढ़कर सभी हैरान थे। खबरें न केवल सच्ची थीं बल्कि कान खड़े करने वाली थीं। संपादक के नाम के आगे 'हम बच्चे' लिखा देखकर यह समझने में मुश्किल नहीं हुई कि यह काम कुछ बच्चों का है। कुछ लोग बच्चों के इस साहस भरे काम से खुश थे। कुछ अपनी पोल खुलने से बेहद खिसियाए हुए थे।

लाला धनीराम की दुकान में तो सुबह-सुबह ही हंगामा हो गया था। टंडन साहब ने एक किलो चीनी तुलवाई। फिर किलो का बाट उठाकर देखा तो नीचे से खोखला पाया। हर तौल में कम-से-कम सौ ग्राम का घोटाला! लोग इकट्ठे हो गए। खूब चखचख हुई। सब यही पूछते- "यह किसने किया है? कौन हैं ये बच्चे?" लेकिन जवाब कोई न दे पाता।

इतवार को जब 'साप्ताहिक धमाका' का दूसरा अंक बँटा तो मुहल्ले के कई सम्मानित कहे जाने वाले लोगों की पोल खुल गई थी। चंदा खाने वाले, बच्चों को ऊधमी और पापी कह रहे थे। चोरी-छिपे शराब पीने वाले अपनी सफाई दे रहे थे। मुंशी शादीलाल चिल्लाकर कह रहे थे- "मैं एक-एक की खबर लूँगा। जेल की हवा खिलवा दूँगा।"

कई दिनों तक यही कोशिश चलती रही कि 'साप्ताहिक धमाका' के बच्चों का पता लगाया जाए। कौन लिखता है इसे? कब बाँटा जाता है? मुहल्ले के लगभग सभी बच्चों की लिखावट के नमूने इकट्ठे किए गए लेकिन सफलता न मिलनी थी, न मिली। हारकर मुहल्ले के बड़े लोगों की एक मीटिंग बुलाई गई। मुंशी शादीलाल ने कहा- "ऐसे सनसनीखेज काम आजादी की लड़ाई के जमाने में क्रांतिकारी किया करते थे। उनका भी पता अंग्रेजों को लग ही जाता था। हैरानी है कि हम अपने ही दुश्मनों को नहीं पहचान पा रहे हैं।" इसपर प्रोफेसर माथुर ने कहा- "यह काम भी आजादी की लड़ाई के दिनों जैसा ही है। आज इस बात की बहुत जरूरत है कि जो लोग समाज और देशवासियों के दुश्मन हैं; उनका भंडाफोड़ किया जाए। मैं उन बच्चों को बधाई देता हूँ।" फिर तो मीटिंग में बहुत हंगामा हुआ।

इतवार की सुबह 'साप्ताहिक धमाका' में अन्य खबरों के साथ मीटिंग की रिपोर्ट भी थी। सबसे मजेदार खबर थी- ''लाला धनीराम द्वारा 'साप्ताहिक धमाका' बाँटने वाले को पकड़ने की कोशिश नाकाम।'' दरअसल लाला धनीराम सुबह चार बजे उठकर घर के बाहर अँधेरे में बैठ गए थे लेकिन जब उजाला हुआ तो देखा कि 'साप्ताहिक धमाका' तो पहले ही बँट चुका था।

'साप्ताहिक धमाका' के ताजा अंक में उन घरों के नंबर दिए गए थे जहाँ रेडियो बहुत जोर से बजता है। अपील की गई थी कि इससे मुहल्ले के बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ती है। कृपया रेडियो धीमा बजाइए। मंदिर और मस्जिद में रोज होने वाले कीर्तन और अजान को लाउडस्पीकर पर न बजाने की अपील भी की गई थी। अगर 'साप्ताहिक धमाका' कुछ लोगों पर चोट करता तो दूसरी ओर वह लोकप्रिय भी हो रहा था। 'साप्ताहिक धमाका' का महत्त्व तब और बढ़ गया जब कई डॉक्टरों के यहाँ नकली दवाइयाँ पकड़ी गईं।

धीरे-धीरे मुहल्ले में काफी सफाई हो गई। एक दिन अचानक ही घोषणा हुई कि 'साप्ताहिक धमाका' के संपादक बच्चों को पुरस्कार देने के लिए शाम को सभा होगी। सभी लोग उन बच्चों को देखने के लिए उत्सुक थे। मुहल्ले के पार्क में दोपहर में ही पंडाल खचाखच भर गया। मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष चिरंजीलाल, मुंशी

शादीलाल, लाला धनीराम, डॉक्टर चेलाराम आदि मंच पर बैठे थे। सभा की कार्यवाही शुरू करते हुए अध्यक्ष चिरंजीलाल ने अपने भाषण में कहा, "हमने तय किया है कि हर बच्चे को इस काम के लिए पाँच-पाँच सौ रुपये का इनाम दिया जाए लेकिन हम नहीं जानते कि वे बहादुर बच्चे कौन हैं। हम उनसे निवेदन करते हैं कि वे सब मंच पर आएँ। अपना परिचय दें और पुरस्कार लें।''

एक भी बालक मंच की ओर नहीं बढ़ा। दो मिनट, पाँच मिनट और फिर दस मिनट बीत गए। धीरे-धीरे शोर होने लगा। लोग मंच पर बैठे 'नेताओं' की खिल्ली उड़ाने लगे। सभा समाप्त हो गई।

'साप्ताहिक धमाका' के अगले अंक में मुख्य खबर छपी- 'संपादक बच्चों को ब्लैकमेल करने की चाल नाकाम।' फिर खुलासा किया गया कि 'साप्ताहिक धमाका' के संपादक बच्चों को पहचानने के लिए यह कितना बड़ा षड़यंत्र था। इसके बाद से 'साप्ताहिक धमाका' और भी जोर से धमाका करने लगा। परिणाम यह हुआ कि लोग अपने को धीरे-धीरे बदलने लगे। रेडियो और लाउडस्पीकरों का स्वर धीमा हो गया। मुंशी शादीलाल भी कहने लगे- "अरे भाई! इस वानरसेना से कौन दुश्मनी ले? जो भगवान दे, उसी में खुश हूँ।" डॉक्टरों के यहाँ भी ठीक दवाएँ मिलने लगीं।

बच्चों ने यह नहीं बताया कि वे अपना काम कब और कहाँ करते हैं? उन्हें अपनी सफलता पर खुशी है। उनका कहना है कि जैसे ही उनके मुहल्ले की समस्याएँ हल हो जाएँगी, 'धमाका' बंद हो जाएगा। जरूरत पड़ने पर वे उसे दुबारा शुरू कर देंगे। इसीलिए उन्होंने अपनी सभी बातों को गुप्त रखा है।

'साप्ताहिक धमाका' अभी बंद नहीं हुआ। हर इतवार की सुबह उसके अंक बँट जाते हैं। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि ये संपादक बच्चे उसी मुहल्ले के हैं। उनकी तेज निगाह से कोई बात छिप नहीं पाती। पहले अखबार की एक प्रति तैयार की जाती है। इसके बाद बच्चे मिलकर उसकी ढेर सारी प्रतियाँ बनाते हैं। जानते हो इनकी लिखावट क्यों नहीं पकड़ में आती? इसलिए कि उन्होंने बायें हाथ से लिखने का भी अच्छा अभ्यास किया है।

यह भी जानो :

राधिका ने दूसरे शहर में रहने वाले अपने चचेरे भाई को एक पत्र लिखा है। चलो, मिलकर पढ़ते हैं।

दिनांक: १२ जनवरी २०२६
प्रिय राघव,

तुम कैसे हो? मैं यहाँ अच्छी हूँ। मैं सहेली के साथ रोज सुबह पाठशाला जाती हूँ। पाठशाला में हम मिलकर पढ़ते हैं। तुम पाठशाला कब जाते हो? तुम वहाँ क्या पढ़ते हो? तुम्हारे दोस्त कैसे हैं? चाचा-चाची जी कैसे हैं? आप सभी को एक दिन हमारी पाठशाला में आना चाहिए। हम सब विद्यार्थी तुम्हारा स्वागत करेंगे। उन्हें खेलना पसंद है। वे सभी प्रकार के खेल जानते हैं। हमारी पाठशाला में खेल का नायक भी है। वह हमें नई-नई बातें सिखाता है। मैं तुम्हारी राह देख रही हूँ। जल्दी आना।
तुम्हारी बहन,
राधिका

* राधिका के पत्र से निम्नलिखित प्रकार के शब्दों को ढूँढ़कर लिखो :
* अपने बारे में आए हुए शब्द -
* दूसरे व्यक्ति (भाई) के बारे में आए हुए शब्द-
* अन्य व्यक्तियों के बारे में आए हुए शब्द -

अध्यापन संकेत : विद्यार्थियों से ऊपर दिए गए 'यह भी जानो' के परिच्छेद का वाचन कराएँ। उसमें आए मुद्दों पर चर्चा करें। प्रश्न तैयार करें और उत्तर पर चर्चा करें। औपचारिक और अनौपचारिक पत्र की जानकारी देकर प्रश्न निर्मिति कराएँ। उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष सर्वनाम भी समझाएँ। उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम के वाक्य बनाने हेतु प्रेरित करें।

मुहावरे : भंडाफोड़ करना = भेद प्रकट करना; खबर लेना = कड़ाई करना, डाँट लगाना; कान खड़े होना = सावधान होना, सतर्क हो जाना; पोल खुलना = छिपा हुआ सच सामने आना, रहस्य खुलना; खिल्ली उड़ाना = मजाक उड़ाना।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

कक्षा में अपने सहपाठी से अखबार एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित खेल समाचार सुनो और उसपर चर्चा करके अपना मत व्यक्त करो।

(२) रुचि से पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

(क) 'अच्छाई और सच्चाई अगर खुद में नहीं है तो कहीं नहीं पाओगे।

(ख) कड़वी सच्चाई बोलने वाले झूठी प्रशंसा करने वाले लोगों से सौ गुना बेहतर हैं।

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(च) चिरंजीलाल ने अपने भाषण में क्या कहा?

(छ) 'साप्ताहिक धमाका' क्यों निकाला गया?

(ज) 'साप्ताहिक धमाका' को निकालने वाले कौन थे?

(झ) 'साप्ताहिक धमाका' के कारण कौन-से परिवर्तन हुए?

(ञ) इस कहानी की विशेषताएँ कौन-सी हैं?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं : (विवेचन करो)

* ''हैरानी है कि हम अपने ही दुश्मनों को नहीं पहचान पा रहे हैं।''
  इस पंक्ति से क्या अर्थ निकलता है?
* 'जो भगवान दे उसी में खुश हूँ।' विवेचन करो।

(५) परखो स्वयं को :

मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे इन शब्दों का वर्गीकरण करके तालिका में लिखो :

प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष

(६) आओ, कौशल दिखाओ :

अपने विद्यालय में अध्यापक के मार्गदर्शन में सभी विद्यार्थियों की एक बैठक का आयोजन करो। विद्यार्थियों के दो समूह बनाओ, जिनमें से एक समूह विद्यालय से संबंधित समस्याओं के बारे में प्रश्न पूछेगा। दूसरा समूह उसका समाधान प्रस्तुत करेगा।

(७) एक कदम भाषा की ओर :

नीचे दिए गए वाक्य पढ़कर पुरुषवाचक सर्वनामों के भेद ढूँढ़कर लिखो -

* मैं गीत गाता हूँ। तुम सुनो। मेरा गीत सुनकर वह भी आ जाएगा।

(८) आओ, कुछ रचो :

नीचे दिए खबरों के वाक्यांश पढ़ो और इनपर आधारित शीर्षक बनाकर लिखो।

(ट) गौरवान्वित हुए -

(ठ) त्रस्त किया -

(ड) जबरदस्त बाढ़ -

(ढ) क्रिकेट प्रतियोगिता जीती -

(९) निपुण बनो :

आपके विद्यालय में हुए 'हिंदी दिवस' कार्यक्रम का दिए गए मुद्दों के आधार पर वृत्तांत लेखन करो।

मुद्दे - स्थान, दिनांक, समय, मुख्य अतिथि, संचालन, कार्यक्रम, विवरण, आभार।

(१०) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

*** किसी बालपत्रिका से कोई कहानी पढ़कर उसका आरंभ-मध्य और अंत लिखो।**

(११) खेल-खेल में भाषा :

'विशेष' में 'अंक' जोड़कर 'विशेषांक' शब्द बनाया गया है। इसी प्रकार इन शब्दों में 'अंक' जोड़कर शब्द बनाओ :

क्रम, प्रवेश, जन्म, दिन, शत, गत।

(१२) पाठ से आगे :

समाचारपत्र प्रायः दैनिक, साप्ताहिक अथवा पाक्षिक होते हैं। पत्रिकाएँ साप्ताहिक पाक्षिक, मासिक, वार्षिक आदि होती हैं। रुचिपूर्ण पूर्ववाचन के आधार पर निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर एक पत्र और एक पत्रिका का नाम लिखो :

(त) दैनिक - १. .... २. ....

(थ) साप्ताहिक - १. .... २. ....

(द) पाक्षिक - १. .... २. ....

(ध) मासिक - १. .... २. ....

(न) वार्षिक - १. .... २. ....

(आवश्यकता के अनुसार संदर्भ पुस्तकों और बड़ों का सहयोग लो।)

सुनो, पढ़ो और मिलकर गाओ :

९. हमको आना है...

– *किशन तिवारी*

जन्म : १४ अक्टूबर, १९४९ भोपाल, (म.प्र)।
प्रमुख रचनाएँ : 'भूख से घबराकर', 'आपकी जेब में' 'सोचिए तो सही', 'मैं तुम हो जाऊँ', 'सारथी मैं हूँ' आदि।
सम्मान/पुरस्कार : 'निराला सम्मान', 'गजल गौरव सम्मान', 'गणतंत्र सम्मान' आदि।
पहली गजल में स्वाभिमान से जीने, सच्चाई कहने, सरल भाषा में बात करने और हमेशा प्रसन्न रहने की सीख मिलती है। दूसरी गजल द्वारा जीवन में अच्छा कर गुजरने और समाज की बुराइयों को दूर कर, हिलमिलकर प्यार से रहने की प्रेरणा मिलती है।

गजल १

यूँ न नजरें झुकाकर कहें,
सत्य को सर उठाकर कहें।
आप सीधी सरल बात को,
व्यर्थ ही क्यूँ घुमाकर कहें।
तौलना है अगर बात को,
आईनों को सुनाकर कहें।
आप क्यूँ इतने नाराज हैं,
जो कहें मुस्कराकर कहें।
हम जमाने के दुख-दर्द को,
गीत में गुनगुनाकर कहें।

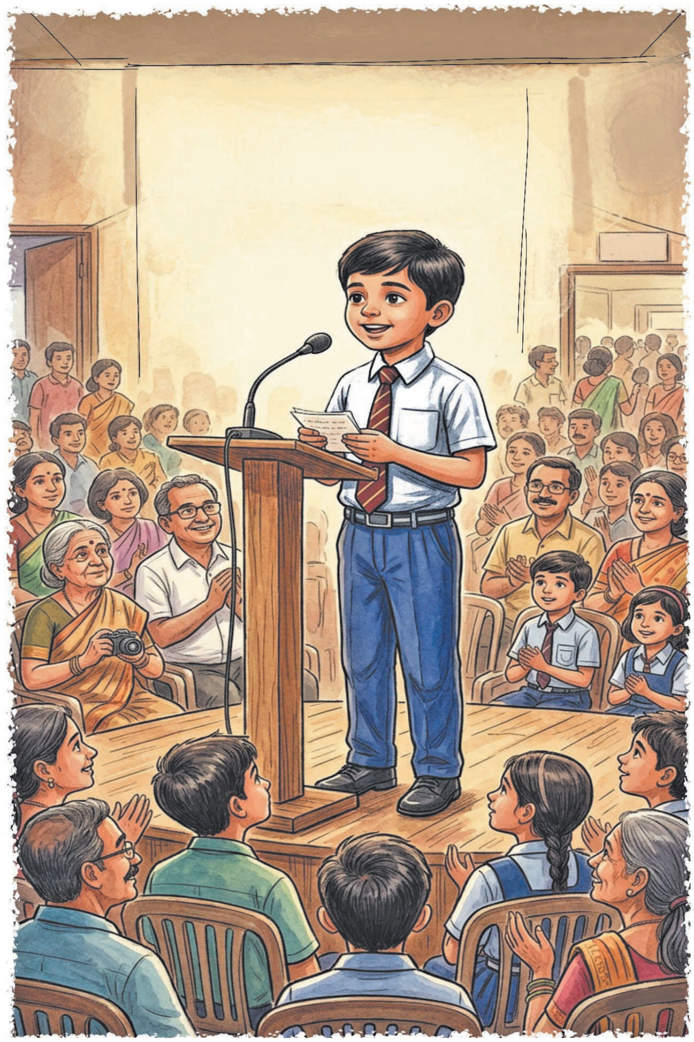

अध्यापन संकेत : गजल का सस्वर-मुखर गायन, सही उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ कराएँ। विद्यार्थियों को गजल की पंक्तियाँ पढ़ने के लिए देकर उससे संबंधित अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहें। गजल के भाव को सरल भाषा में स्पष्ट करें। समाज में होने वाली विभिन्न अप्रिय घटनाओं की जानकारी देकर उनके परिणाम और उन्हें दूर करने के उपाय पर विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करें। सरल कविता लिखने के लिए मार्गदर्शन करें। गजल विधा की विशेषताओं पर चर्चा करके प्रश्नों के उत्तर हल कराएँ।

गजल २

हमको आना है, आएँगे,
धूप बनकर बिखर जाएँगे।
एक दिन बादलों की तरह,
गीत सावन के बरसाएँगे।
फिर अँधेरे पे लिख रोशनी,
बन के सूरज उतर आएँगे।
ये घृणा-द्‌वेष ये नफरतें,
इस जहाँ से मिटा जाएँगे।
प्यार बस प्यार ही प्यार है,
ये सभी को बता जाएँगे।

यह भी जानो

कुछ शब्दों के दो या दो से अधिक अर्थ होते हैं अर्थात एक शब्द में दूसरे शब्द चिपके रहते हैं। जैसे पत्र का एक अर्थ चिट्‌ठी और दूसरा अर्थ वृक्ष का पत्ता भी होता है। अतः पत्र शब्द 'श्लेष' शब्द हुआ। इसी तरह काव्य में भी श्लेष अलंकार होता है। उदाहरण के लिए –

पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।

यहाँ 'पानी' शब्द के तीन अलग-अलग अर्थ हैं:

* मोती के संदर्भ में चमक आभा
* मानुष (मनुष्य) के संदर्भ में सम्मान/प्रतिष्ठा
* चून (आटा) के संदर्भ में सामान्य जल

अतः यहाँ श्लेष अलंकार हुआ।

यह भी समझो **: मंगन को देखि पट देत बार-बार।**

यहाँ पट शब्द के दो अर्थ हैं :

* वस्त्र : माँगने वाले को देखकर बार-बार कपड़े देना।
* किवाड़ (दरवाजा) माँगने वाले को देखकर बार-बार दरवाजा बंद करना।

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों से ऊपर दिया गया परिच्छेद पढ़वाएँ। दोहों के अर्थ समझाएँ। श्लेष अलंकार के बारे में जानकारी दें। श्लेष अलंकार के अन्य उदाहरण देकर इनका दृढ़ीकरण कराएँ। भिन्नार्थक/श्लेष शब्दों पर चर्चा करें। विशेष विद्‌यार्थियों को सांकेतिक चिह्नों द्‌वारा समझाएँ।

शब्द सौरभ : सर उठाकर = गर्व से; तोलना = वजन करना; आईना = दर्पण; घृणा = नफरत; द्वेष = बैर, वैमनस्य; मिटाना = नष्ट करना, समाप्त करना; मंगन = माँगने वाला।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

परिसर में या दूरदर्शन पर कवि सम्मेलन में कविता/गजल सुनकर उसके बारे में कक्षा में समूह चर्चा करो।

(२) रुचि से पढ़ो, सोचो और समझकर आशय बताओ :

हैं पूजाघर का आँगन बेटियाँ, हैं ऋचाओं जैसी पावन बेटियाँ।
अब तो सारी दुनिया ही कहने लगी, जग की दौलत से बड़ा धन बेटियाँ॥

– डॉ. कुँअर 'बेचैन'

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) कवि किस तरह सत्य कहने के लिए प्रेरित कर रहा है?

(ख) कवि क्या बनकर बिखरना चाहता है?

(ग) तुम्हें इन गजलों की कौन-सी पंक्तियाँ अच्छी लगीं, क्यों?

(घ) यदि कोई तुमसे बहुत चिढ़ता है तो तुम क्या करोगे?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

"ये घृणा-द्वेष ये नफरतें, इस जहाँ से मिटा जाएँगे।" इस पंक्ति की व्याख्या करो।

(५) परखो स्वयं को :

निम्न अर्थवाली पंक्तियाँ गजल से ढूँढ़कर लिखो :

(च) जहाँ अंधकार है, वहाँ प्रकाश फैला देंगे।

(छ) हम तकलीफों के गीत गाएँगे।

(ज) हम लोगों से सच्चाई की बात बिना डरे कहेंगे।

(६) आओ, कौशल दिखाओ :

✲ मराठी के गजलकार सुरेश भट जी की गजलें अंतरजाल से रसास्वादन करते हुए सुनो और सुनाओ।

(७) आओ, कुछ रचो :

दी गई पंक्तियों को गजल विधा की तरह अपनी भाषा में पूर्ण करने का प्रयास करो:

ट. सपनों को आँखों में तुम सजाकर रखना,
हर मुश्किल में हँसकर, ...।

ठ. छोटी-छोटी कोशिश ....।
हर दिन कुछ अच्छा ....।

(८) निपुण बनो :

गजल विधा को पहचानते हुए इस गजल को लय-ताल-सुर के साथ प्रस्तुत करो।

(९) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

....

(१०) खेल-खेल में भाषा :

*** शब्द पहेली सुलझाओ :**

१		२		■	३
	■	स	■	४	
■	५		७		■
६		■		■	■

आड़े शब्द	*खड़े शब्द*
१- आदिम	*१- एक फल*
४- प्रतिज्ञा	*२- दिन, दिवस*
५- खाली समय	*३- अधिक*
६- किसान का एक औजार	*४- वायु, पवन*
	७- योग्य
	५- अंग्रेजी में पूरा

(११) पाठ से आगे : प्रकल्प

प्रति सप्ताह हिंदी साहित्य के किसी एक गजलकार की एक रचना अंतरजाल से पढ़कर गजल संग्रह बनाओ।

*(उत्तर) **आड़े शब्द** – (आदिवासी), (वादा), (फुरसत), (हल)*   *(उत्तर) **खड़े शब्द** – (आम), (वासर), (ज्यादा), (वात), (सही), (फुल)*

देखो, पढ़ो और समझो :

१०. युवा दिवस

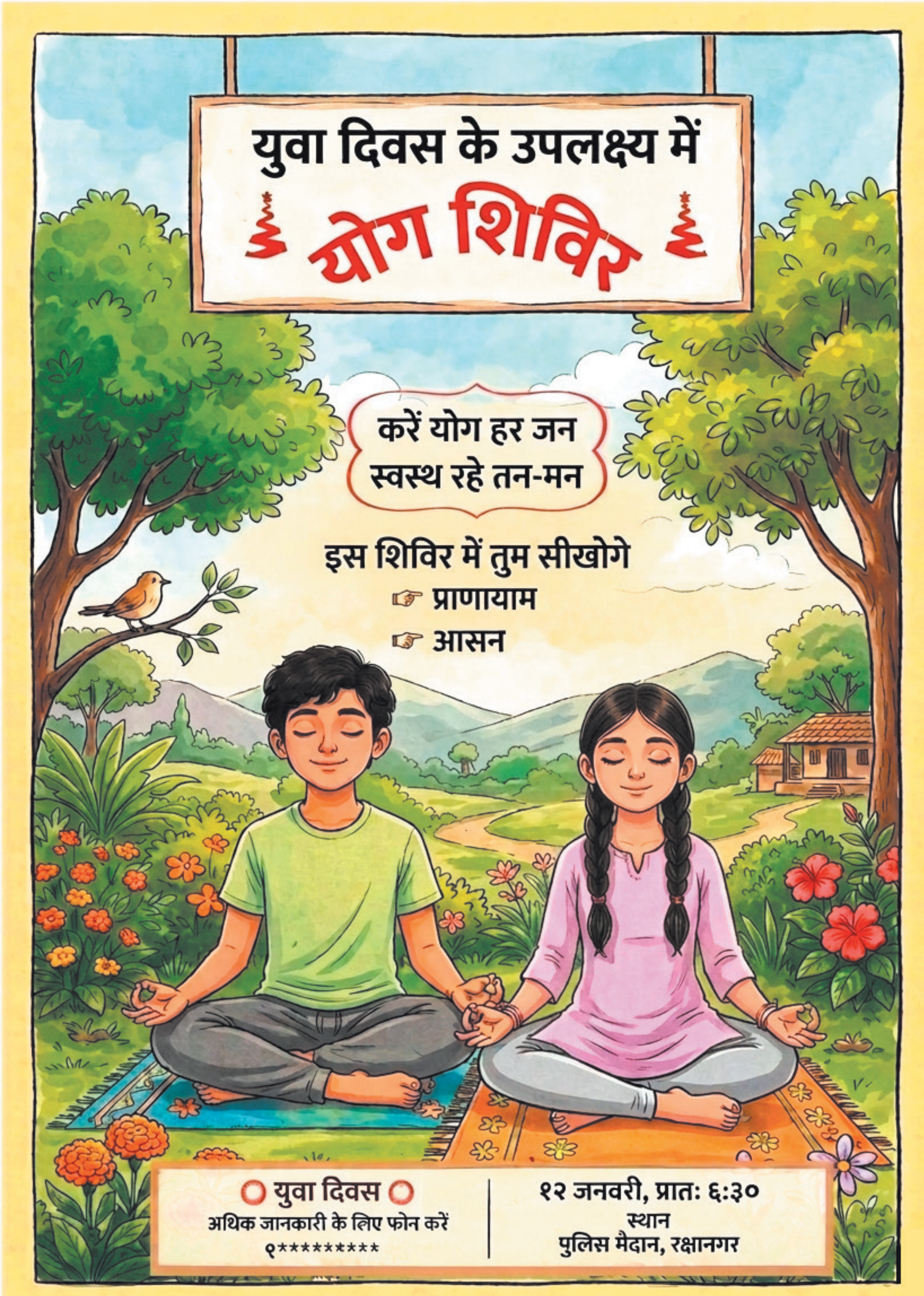

अध्यापन संकेत : विद्‍यार्थियों से विज्ञापन का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ। प्रस्तुत विज्ञापन के आधार पर उनसे प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करें। विज्ञापन क्यों दिए जाते हैं, उनके महत्त्व पर चर्चा करें। समाचारपत्रों में आए विज्ञापनों का भी सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ और उनकी विशेषताओं पर चर्चा करें। उनसे मुद्रित विज्ञापन तथा दृक-श्रव्य विज्ञापनों के लिए संदेश/घोषवाक्य तैयार करवाएँ। विशेष विद्‍यार्थियों का आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

(क) स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है।

(ख) प्राणायाम करो, जीवन सँवारो।

(२) पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

– पत्र-पत्रिकाओं से योग, कुश्ती से संबंधित विज्ञापन पढ़ो।

– करो योग, रहो नीरोग।

(३) तुम्हारे प्रश्न, तुम्हारे उत्तर :

पाठ में दिए विज्ञापन पर आधारित पाँच ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनमें दो प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में और तीन प्रश्नों के उत्तर दो या तीन पंक्तियों में दिए जा सकें।

(च) ....

(छ) ....

(ज) ....

(झ) ....

(ञ) ....

(४) परखो स्वयं को :

दिए हुए विज्ञापन का निरीक्षण करो और संबंधित संदेश अपने शब्दों में लिखो।

(५) चित्र कुछ कहते हैं :

दिए गए चित्र को देखकर पाँच से छह पंक्तियाँ लिखो :

....

....

....

....

....

(६) आओ, कुछ रचो :

ट. फलों की दुकान के लिए विज्ञापन तैयार करके पाँच प्रश्न तैयार करो और उनके उत्तर अपने सहपाठी से पूछो।

ठ. 'विज्ञापन कितने सच/झूठ' इसपर अपने विचार आठ-दस पंक्तियों में लिखो।

(७) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

....

(८) चित्रों और स्वरों की उचित जोड़ियाँ मिलाते हुए 'प' से बनने वाले शब्द अपनी कॉपी में लिखो।

अ   आ   इ   ई   उ   ऊ   ऋ

ए   ऐ   ओ   औ   अं   अः   अँ   ऑ

(९) पाठ से आगे :

पत्रिका, समाचारपत्र, दूरदर्शन, बैनर के विज्ञापन ध्यानपूर्वक पढ़कर उनकी सूची बनाओ।

नि:शुल्क वितरण के लिए

११. पूर्वोत्तर भारत के त्योहार

– अरविंद

जन्म : ८ दिसंबर १९७४, जौनपुर (उ.प्र)
प्रमुख रचनाएँ : 'परोपकार का फल' एवं अन्य रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ।
सम्मान/पुरस्कार : 'नसीम खान शिक्षक गौरव' पुरस्कार से सम्मानित।
प्रस्तुत पाठ में उत्तरपूर्वी भारत के कुछ त्योहारों की जानकारियाँ दी गई हैं। इस पाठ द्वारा हमें उत्तरपूर्वी प्रदेशों को जानने और उनसे जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

पूर्वोत्तर भारत की प्राकृतिक सुंदरता और इसकी समृद्ध स्वदेशी संस्कृति दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती है। पूर्वोत्तर भारत के राज्य कृषि, नव वर्ष की शुरुआत और अपने धर्म से संबंधित विभिन्न त्योहार मनाते हैं। इन त्योहारों में दिखाई देने वाले रीति-रिवाज, परोसे जाने वाले स्वादिष्ट भोजन और स्थानीय लोगों द्‌वारा उत्साह से किया जाने वाला आतिथ्य ही वह कारण है कि बड़ी संख्या में संस्कृति प्रेमी पूर्वोत्तर भारत आते हैं। वे यहाँ की संस्कृति के बारे में अधिक जानने और उत्सवों का हिस्सा बनने के लिए उत्सुक रहते हैं।

यहाँ उत्तरपूर्वी भारत के कुछ ऐसे त्योहार हैं जिनके बारे में हम सब को अवश्य जानना चाहिए।

बिहू, असम

मौसम के परिवर्तन का उत्सव मनाने वाला बिहू पूर्वोत्तर भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। बिहू तीन प्रकार के होते हैं – बोहाग बिहू जिसे रंगाली बिहू भी कहते हैं अप्रैल के मध्य में, माघ बिहू (भोगाली) जनवरी के मध्य में और बिहू कोंगाली या काति अक्टूबर के मध्य में मनाते हैं। असम का नववर्ष अप्रैल में बोहाग बिहू से शुरू होता है।

बिहू सात दिनों का उत्सव है जिसमें स्थानीय लोग बिहू नृत्य करते हैं। बैलों को नहलाते और खिलाते हैं। विशेष व्यंजन बनाते हैं और एक-दूसरे को गमोसा भेंट करते हैं।

हॉर्नबिल महोत्सव, नागालैंड

नागालैंड का सबसे बड़ा आकर्षण हॉर्नबिल का वार्षिक महोत्सव होता है। इसे 'त्योहारों का त्योहार' भी कहते हैं। यह नागालैंड के स्थापना दिवस एक दिसंबर पर

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों से निबंध का मुखर वाचन कराएँ। निबंध के प्रकारों पर चर्चा करके प्रस्तुत निबंध के प्रकार के बारे में प्रश्न पूछें। उन्हें पूर्वोत्तर भारत के सातों राज्यों से अवगत कराएँ। इन राज्यों के प्रमुख त्योहारों की जानकारी दें। पाठ में आए त्योहारों पर चर्चा करें। उनको पत्र-पत्रिकाएँ, संदर्भ पुस्तिकाएँ उपलब्ध कराकर भारतीय जनजातियों की जानकारी दें। शब्द पहेली किस प्रकार बनाई जाती है, इससे अवगत कराएँ। पूर्वी भारत और अपने प्रांत के त्योहारों की तुलना करवाकर इनकी समानता-अंतर पर बातचीत करें। वृत्तांत लेखन के मुद्दों पर चर्चा करें। विशेष विद्‌यार्थियों की सहायता करें।

शुरू होता है और दस दिसंबर तक मनाया जाता है। यह नागालैंड की राजधानी कोहिमा के पास 'किसामा हेरिटेज विलेज' में आयोजित होता है।

आदिवासी रंगारंग प्रस्तुतियाँ देने, खेल खेलने, धार्मिक अनुष्ठान करने और स्थानीय व्यंजनों का आनंद लेने के लिए एकत्रित होते हैं।

लोसूंग, सिक्किम

'लोसूंग' फसल कटाई के मौसम की समाप्ति का प्रतीक त्योहार है। यह साल का वह समय होता है जब राज्य के किसान खेतों में साल भर की कड़ी मेहनत के बाद आराम करते हैं और अच्छी फसल का जश्न मनाते हैं। 'लोसूंग' त्योहार का सबसे बड़ा आकर्षण 'चाम' नृत्य है।

बौद्ध भिक्षुओं द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य एक रंगारंग उत्सव है जिसमें भिक्षु चमकीले वस्त्र पहनकर सिक्किम के लोकसंगीत की मधुर धुनों पर नृत्य करते हैं। संगीत, नृत्य और स्वादिष्ट भोजन इसे उत्तरपूर्वी भारत के सबसे अद्भुत त्योहारों में से एक बनाते हैं।

वांगला महोत्सव, मेघालय

वांगला महोत्सव, जिसे 'सौ ढोल महोत्सव' भी कहा जाता है, मेघालय के गारो जनजाति द्वारा मनाया जाता है। यह फसल उत्सव नवंबर के दूसरे सप्ताह के आस-पास मनाया जाता है। इसमें वे सूर्य देवता सालजोंग की पूजा करते हैं। यह वह समय है जब ग्रामीण अपने खेतों में मेहनत करने और अच्छी फसल प्राप्त करने के बाद आराम करते हैं और आनंद लेते हैं। पहले दिन गाँव के मुखिया के घर पर 'रागुला' समारोह आयोजित किया जाता है। दूसरे दिन को 'कक्कट' कहा जाता है, जब लोग रंग-बिरंगे परिधान और पंखों से सजे सिर के आभूषण पहनकर ढोल की थाप पर नृत्य करते हैं।

यह महोत्सव मेघालय की गारो जनजाति के जीवन की गहरी झलक देता है और वर्षों से उनकी समृद्ध संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने में सहायक होता है।

अरुणाचल प्रदेश ड्री महोत्सव,

ड्री महोत्सव 'अपतानी' जनजाति द्वारा मनाया जाता है और यह पूर्वोत्तर भारत के सबसे लोकप्रिय त्योहारों में से एक है। इस त्योहार में भरपूर फसल के

हमारा पूर्वोत्तर भारत न केवल खूबसूरत नजारों से भरा है बल्कि यह समृद्‌ध सांस्कृतिक विरासतवाले प्यारे लोगों से भी परिपूर्ण है। हमें जीवन में एक बार पूर्वोत्तर भारत की यात्रा करके वहाँ के त्योहारों का प्रत्यक्ष अनुभव अवश्य प्राप्त करना चाहिए। इससे भारत के अन्य प्रदेशों के लोग पूर्वोत्तर भारत के लोगों से विशेष रूप से जुड़ सकेंगे।

लिए चार देवताओं तामु, हरनियांग, मेती और दानयी को प्रार्थनाएँ अर्पित की जाती हैं। यह त्योहार अरुणाचल प्रदेश की जीरो घाटी में मनाया जाता है। उत्सव में खट्टे चावल और बाजरे का पेय जैसे स्थानीय व्यंजन परोसे जाते हैं। आदिवासी लोग गीत गाते हैं। नृत्य करते हैं। मेहमानों में खीरा बाँटा जाता है ताकि अच्छी फसल हो सके। पर्यटक इस खूबसूरत त्योहार के माध्यम से अरुणाचल प्रदेश की संस्कृति का आनंद लेते हैं।

यह भी जानो :

शुद्‌ध लेखन के कुछ नियम हैं। उन्हें भी जानना बहुत आवश्यक है। जैसे - ऐ, औ का प्रयोग। हिंदी में ऐ (ै), औ (ौ) का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियों के लिए होता है। जैसे-है,और दूसरा रूप गवैया, कौवा आदि में। इन्हें व्यक्त करने के लिए, इन्हीं स्वरों का प्रयोग करना अपेक्षित है। इन्हें गवय्या, 'कव्वा' के रूप में नहीं लिखना है। लेकिन यदि यह द्‌वित्व किसी नाम का भाग हो तो उसे पारंपरिक रूप में ही लिखना चाहिए। जैसे - अय्यर आदि।

अध्यापन संकेत : यहाँ दिए गए 'यह भी जानो' के वाक्य विद्‌यार्थियों से पढ़वाएँ। ऐ, औ के प्रयोगों को समझाकर अपेक्षित अभ्यास कराएँ। विशेष विद्‌यार्थियों को भी शुद्‌ध लेखन के नियमों से अवगत कराएँ।

शब्द सौरभ : आतिथ्य = अतिथि का स्वागत-सत्कार; गमोसा = गमछा, एक वस्त्र; अनुष्ठान = विधिपूर्वक काम करना; विरासत = जो अपने पूर्वजों से मिलता/मिलती है।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

अपने बड़ों से नवरात्र, मकर संक्रांति त्योहारों के बारे में जानकारी सुनो। उनके बारे में चर्चा करो।

(२) रसास्वादन करते हुए पढ़ो, सोचो और समझकर बढ़ो :

भारत की धरती रंगों से सजी, त्योहारों की है शान,
हर पर्व में छुपा हुआ है, संस्कृति का सम्मान।
दीपों से जगमग दीवाली, अँधियारा हर लेती,
होली हँसी औ रंग बिखेरे, दूरी सारी दूर कर देती।
ईद सिखाए प्रेम बाँटना, मिलकर खुशी मनाना,
क्रिसमस देता शांति संदेशा, सेवाभाव जगाना।

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(क) यदि तुम भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में गए तो किस उत्सव में शामिल होना चाहोगे? क्यों?

(ख) पाठ में पठित उत्सवों और तुम्हारे प्रदेश में मनाए जाने वाले उत्सवों में यदि कोई समानता दिखाई देती है तो उसके बारे में लिखो।

(ग) पाठ पढ़ने के उपरांत पूर्वोत्तर राज्यों की कौन-सी विशेषताएँ तुम्हें ज्ञात हुईं?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

'हमारा उत्तरपूर्वी भारत न केवल खूबसूरत नजारों से भरा है बल्कि यह समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाले प्यारे लोगों से भी परिपूर्ण है।' पाठ के आधार पर इन पंक्तियों के बारे में अपने विचार बताओ।

(५) परखो स्वयं को :

अ और ब की उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	ब
(च) मौसम से संबंधित त्योहार	- हॉर्नबिल महोत्सव
(छ) त्योहारों का त्योहार	- लोसूंग त्योहार
(ज) बौद्ध भिक्षुओं का नृत्य	- ड्री महोत्सव
(झ) सौ ढोल महोत्सव	- बिहू त्योहार
(ञ) जीरो घाटी में मनाया जाता है	- वांगला महोत्सव

(६) **आओ, कौशल दिखाओ :**

तुम्हारे अनुसार आज के सावर्जनिक त्योहारों का स्वरूप क्या होना चाहिए? इस विषय पर कक्षा में चर्चा करके सर्वमान्य सुझावों की सूची बनाओ।

(७) **एक कदम भाषा की ओर :**

विशेषण के प्रकारों के एक-एक वाक्य बनाकर लिखो :

गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, संकेतवाचक या सार्वनामिक।

(८) **आओ, कुछ रचो :**

हमारे महाराष्ट्र में मनाए जाने वाले 'आषाढ़ी वारी' पर्व पर आठ-दस पंक्तियों का वर्णनात्मक निबंध लिखो।

(९) **इस पाठ से तुमने समझा :**

....

....

....

(१०) **खेल-खेल में भाषा :**

(ट) नीचे कुछ अक्षर दिए गए हैं। इन्हें मिलाकर सार्थक शब्द बनाओ। अक्षरों को आगे-पीछे किया जा सकता है अर्थात उनका क्रम बदला जा सकता है। तुम अपने मन से किसी भी अक्षर में कोई भी मात्रा लगा सकते हो।

अक्षर	शब्द पहेली
ह प ल	....
ह म य ल	....

(ठ) त्योहारों में बनने वाले कुछ व्यंजनों के नाम उलट-पुलटकर यहाँ दिए हैं, उन्हें योग्य तरीके से लिखो -

ड्डूल, कके, रमाखुरशी, लेबीज, तलीकजूका

(११) **जुड़ो सबसे :**

भारत का मानचित्र सामने रखकर पूर्वोत्तर भारत की 'सात बहनों और एक भाई वाले' राज्यों के बारे में औपचारिक-अनौपचारिक प्रश्न पूछो।

(१२) **पाठ से आगे :**

मनाए गए किसी त्योहार का वृत्तांत लेखन निम्न मुद्दों के आधार पर करो।
त्योहार का नाम, दिनांक/तिथि-दिन, मनाने का तरीका, खान-पान, सहभागी लोग, अध्यक्ष, आभार।

सुनो, पढ़ो और मिलकर गाओ :

१२. कदम-कदम बढ़ाए जा

- वंशीधर शुक्ल

जन्म : २३ जनवरी १९०४, लखीमपुर, उत्तर प्रदेश, ***मृत्यु :*** २६ अप्रैल १९८०।
प्रमुख रचनाएँ : 'उठो सोनेवालों', 'सवेरा हुआ है', 'उठ जाग मुसाफिर', 'कदम-कदम बढ़ाए जा' आदि।
सम्मान/पुरस्कार : 'मुहम्मद जायसी पुरस्कार'।
प्रस्तुत गीत 'आजाद हिंद सेना' के प्रेरणा गीत के रूप में प्रसिद्ध है। इस गीत से मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने, हर स्थिति में निडर होकर आगे बढ़ने और अपने देश के लिए हर कष्ट सहकर भी स्वतंत्रता की खुशी के गीत गाने की प्रेरणा मिलती है।

कदम-कदम बढ़ाए जा
खुशी के गीत गाए जा
ये जिंदगी है कौम की
तू कौम पे लुटाए जा।

तू शेर-ए-हिंद आगे बढ़
मरने से तू कभी न डर
उड़ा के दुश्मनों का सर
जोश-ए-वतन बढ़ाए जा।

कदम-कदम बढ़ाए जा
खुशी के गीत गाए जा
ये जिंदगी है कौम की
तू कौम पे लुटाए जा।

हिम्मत तेरी बढ़ती रहे
खुदा तेरी सुनता रहे
जो सामने तेरे अड़े
तू खाक में मिलाए जा।

अध्यापन संकेत : विद्‌यार्थियों से आरोह-अवरोह, लय-ताल के साथ गीत का आदर्श गायन कराएँ। कविता में आए भावों पर चर्चा करें। कविता का सरल भावार्थ समझाएँ। कविता की विशेषताओं पर प्रश्नोत्तर करें। देश की सुरक्षा के संदर्भ में चर्चा कराएँ। इस कविता के ऐतिहासिक संदर्भों पर विस्तृत चर्चा करते हुए संयुक्ताक्षर शब्दों के नियमों पर बातचीत करें। श्लेष और यमक अलंकार के भेद के बारे में उनको जानकारी दें। नेताजी सुभाषचंद्र बोस और उनकी 'आजाद हिंद सेना' के संबंध में जानकारी दें। विशेष विद्‌यार्थियों को खुशी, डर, गायन की स्थिति आदि के भाव स्पष्ट करने के लिए दृश्य चित्र (मूड बोर्ड) का उपयोग करें।

कदम-कदम बढ़ाए जा
खुशी के गीत गाए जा
ये जिंदगी है कौम की
तू कौम पे लुटाए जा।

'चलो दिल्ली' पुकार के
कौमी निशाँ सँभाल के
लाल किले पे गाड़ के
लहराए जा, लहराए जा।

कदम-कदम बढ़ाए जा
खुशी के गीत गाए जा
ये जिंदगी है कौम की
तू कौम पे लुटाए जा।।

यह भी जानो :

योजक चिह्न (-) एक विराम चिह्न है। इसका उपयोग द्वंद्व समास, पुनरुक्ति, तुलनात्मक शब्दयुग्म, दो क्रियाओं और दो संख्यावाचक शब्दों के बीच करते हैं।

जैसे -

(क) द्वंद्व समास : जब दो शब्द परस्पर विपरीत या समान अर्थ वाले हों। उदा : रात-दिन, सुख-दुःख।

(ख) पुनरुक्ति : एक ही शब्द के दोबारा प्रयोग होने पर, उदा : धीरे-धीरे, कभी-कभी।

(ग) तुलनात्मक : 'सा', 'सी', से पहले, उदा : फूल-सी बच्ची, चाँद-सा मुँह आदि।

(घ) शब्दयुग्म : जैसे : खाना-वाना, पानी-वानी आदि।

(ङ) दो क्रियाओं के एक साथ प्रयोग : जैसे : पढ़ना - लिखना, सोना-जागना आदि।

(च) संख्यावाचक शब्दों के बीच : जैसे : दस-दस, दो-चार आदि।

अध्यापन संकेत : 'यह भी जानो', में दिए गए विरामचिह्न पर चर्चा करें। नियमों की उचित जानकारी देकर इनका अभ्यास कराएँ। 'टेली मानस योजना' अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को समझाएँ और आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें। हेल्पलाइन नंबर - १४४१६।

शब्द सौरभ : कौम = जाति, वंश, नस्ल, राष्ट्र; दुश्मन = शत्रु; जिंदगी = जीवन; शेर-ए-हिंद = भारत का सिंह पुरुष; हिम्मत = साहस, धैर्य; खाक = राख, मिट्‌टी; निशाँ = पहचान, निशान।

स्वाध्याय

(१) सुनो और चर्चा करो :

(क) 'भारत देश की सुरक्षा में सैनिकों की भूमिका,' विषय पर दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले साक्षात्कार सुनो।

(ख) 'देश के गौरव में विद्‌यार्थियों का योगदान' इस विषय पर जानकारी प्राप्त करके कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत करो।

(२) रुचिपूर्वक पढ़ो, सोचो और मुद्‌दे समझकर बढ़ो :

निम्नलिखित कविता का मुखर वाचन करो :

प्रात हो कि रात हो, संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो, चंद्र से बढ़े चलो,
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो!

– कवि द्‌वारिका प्रसाद माहेश्वरी

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(च) कवि ने जिंदगी को किसपर लुटाने के लिए कहा है?

(छ) इस गीत में कवि किसे आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है?

(ज) यह गीत किस सेना के प्रेरणा गीत के रूप में प्रसिद्‌ध है?

(झ) कवि कहाँ जाने की बात करता हैं।

(ञ) देशभक्ति संबंधी किसी अन्य कविता की चार पंक्तियाँ लिखो।

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ, विशेषताओं का विवरण अपने शब्दों में बताओ।

हिम्मत तेरी बढ़ती रहे, खुदा तेरी सुनता रहे
जो सामने तेरे अड़े, तू खाक में मिलाए जा।

(५) परखो स्वयं को :

निम्नलिखित प्रश्नों के योग्य उत्तर चुनो :

(ट) कवि सैनिकों से किस प्रकार के गीत गाने के लिए कह रहा है?

१. दर्द के गीत   २. शोक के गीत   ३. खुशी के गीत

(ठ) प्रस्तुत कविता किस भाव को उजागर करती है?

१. भयानकता   २. वीरता   ३. हास्य

(६) खेल-खेल में भाषा :

त) शब्द पहेली से प्रश्नों के उत्तर खोजो :

(१) जल को धारण करने वाला   (२) आकाश के लिए एक शब्द

(३) वाद्य का नाम   (४) सम्मान का पर्यायवाची शब्द

(५) एक शस्त्र का नाम   (६) राजा का समानार्थी शब्द

त	ल	वा	र
ब	मा	न	अं
ला	नृ	प	ब
ज	ल	ध	र

थ) इस प्रकार की अन्य छोटी शब्द पहेली स्वयं तैयार करो।

(७) आओ, कौशल दिखाओ :

'आजाद हिंद फौज' और इससे संबंधित महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के बारे में संदर्भ पुस्तक एवं अंतरजाल से जानकारी प्राप्त करके कक्षा में उनसे संबंधित चार्ट बनाकर लगाओ।

(८) एक कदम भाषा की ओर :

प. नीचे दिए गए शब्दों में स्वर एवं व्यंजन का विच्छेद करो :

१. चक्का = - + - + - + - + -

२. अच्छा = - + - + - + -

३. विश्वास = - + - + - + - + - + - + -

४. धन्य = - + - + - + - + -

फ. दोनों दोहे पढ़ो और बड़ों की सहायता से तालिका पूर्ण करो :

१. श्लेष अलंकार – जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करै, **बढ़ै** अँधेरो होय॥

२. यमक अलंकार – माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर

शब्द	कितनी बार आया है?	भिन्न अर्थ
प्रथम दोहे में श्लेष वाला शब्द **बारे, बढ़ै**		
दूसरे दोहे में यमक वाला शब्द मनका, मन का		

(९) आओ, कुछ रचो :

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर चार पंक्तियों की कविता लिखो।

भारत देश, माँ, पिता जी, जीवन

(१०) इस पाठ से तुमने समझा :

....

....

....

(११) निपुण बनो :

(य) इस कविता के मुद्दों को समझकर लय-ताल-सुर के साथ परिपाठ में प्रस्तुत करो।

(र) 'मल' शब्द में 'निर्' उपसर्ग लगाकर निर्मल शब्द बना उसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग लगाकर अर्थपूर्ण शब्द बनाओ। पुत्र, जय, ज्ञान, पके, डर।

(१२) पाठ से आगे :

'भारतीय सेना' में अवकाश ग्रहण किए हुए सैनिक का साक्षात्कार लेने के लिए उपयुक्त प्रश्न सूची तैयार करो।

पुनरावर्तन - २

(१) सुनो और चर्चा करो :

परिवार के किसी सदस्य से कोई लोकगीत सुनकर कक्षा में उसपर चर्चा करो।

(२) रुचि से पढ़ो, सोचो-समझो और अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

(क) जहाँ चाह वहाँ राह (ख) आँखें भर आना

(ग) माथे का चंदन होना (घ) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

(३) प्रश्न मेरे, उत्तर तुम्हारे :

(च) 'आम मँजरायल' गीत में किसान की क्या इच्छा है?

(छ) 'साप्ताहिक धमाका' के कारण कौन-से परिवर्तन हुए?

(ज) यदि कोई तुमसे बहुत चिढ़ता है तो तुम क्या करोगे?

(झ) 'कदम-कदम बढ़ाए जा' गीत में कवि किसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है?

(४) पंक्तियाँ कुछ कहती हैं :

(ट) "तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।"

(ठ) "मैं स्वयं अपने परिश्रम की कमाई से पढ़ना चाहता हूँ।"

उपरोक्त पंक्तियों के अर्थ अपने शब्दों में लिखो।

(५) आओ, कौशल दिखाओ :

(त) 'अपनी पसंदीदा ऋतु' पर तुकबंदी के आधार पर चार पंक्तियों की कविता लिखो।

(थ) अंतरजाल से कोई मराठी कविता ढूँढ़कर लिखो।

(६) परखो स्वयं को :

(प) श्लेष और यमक अलंकार के एक-एक उदाहरण लिखो।

(फ) "हम चरवाहे" पंक्ति से क्या भाव प्रकट होता है?

(१) आलस्य (२) श्रम (३) भय (४) आराम

(ब) मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे सर्वनामों का तालिका में वर्गीकरण करो :

प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष

(७) एक कदम भाषा की ओर :

(य) चीता दौड़ पड़ा। वाक्य में आए क्रिया और कर्ता शब्दों को गोल करो।

(र) नीचे दिए गए शब्दसमूह पढ़ो और उनमें आए विशेषणों के भेद पहचानकर लिखो।

सुंदर पौधा, चार पेड़, दो किलो चीनी, वह चिड़िया, लाल कमीज, पुराना मकान, दो लीटर दूध, यह पुस्तक।

(८) खेल-खेल में भाषा :

(अ) दिए गए वर्णों का उलट-फेर करके अन्य सार्थक शब्द बनाओ।

सुधाकर = ...

(आ) दिए गए शब्दों से स्वर और व्यंजन वर्णों का विच्छेद करो।

शांति = ...+.......+.......+.......+......

सम्मान = ...+.......+.......+.......+......+.......+.......

(इ) दिए गए शब्द में विभिन्न मात्राएँ लगाकर नये सार्थक शब्द बनाकर लिखो।

चर = ...

(ई) मान शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाकर लिखो।

उपसर्गयुक्त शब्द =................., प्रत्यययुक्त शब्द = ...

(९) 'आम मँजरायल' गीत का आशय लिखो :

(१०) आओ रचो :

(क्ष) दिए गए मुद्दों के आधार पर कहानी लिखो :

एक आदमी - मुर्गी - प्रतिदिन सोने का अंडा- लालच - मुर्गी को काटना - पछताना-सीख।

(त्र) 'गणतंत्र दिवस' कार्यक्रम का वृत्तांत लिखो।

(११) निपुण बनो :

किसी छोटे संवाद को कहानी के रूप में लिखो।

(१२) पाठ से आगे :

किसी किसान का साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्नावली तैयार करो।

प्रिय विद्यार्थी मित्रो और सहेलियो,

यदि तुम्हें कोई अयोग्य ढंग से स्पर्श करता है और तुम असमंजस या असहज अनुभव करते हो तो तुम कदापि चुप मत रहो। ऐसी घटना होने पर तुम्हें निम्न बातें करना आवश्यक है।

१) स्वयं को दोष मत दो।

२) जिन लोगों पर तुम्हें विश्वास है; उनसे घटित घटना के बारे में बताओ।

३) तुम पॉक्सो ई-बॉक्स के माध्यम से तुम्हारे अधिकारों की रक्षा हेतु स्थापित राष्ट्रीय आयोग को भी सूचित कर सकते हो।

जब कोई तुम्हें अनुचित/अयोग्य ढंग से छूता है/स्पर्श करता है तब तुम्हें बुरा लग सकता है। तुम परेशान और भ्रमित हो सकते हो। तुम स्वयं को असहाय महसूस कर सकते हो परंतु तुम्हें 'बुरा' लगने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी घटना में तुम्हारा कोई दोष नहीं होता है।

इस बटन को दबाओ।

POCSO यह e-box ncpcr@gov.in इस वेबसाईट पर उपलब्ध है।

यदि तुम्हारी आयु १८ वर्ष से कम है और तुम्हें किसी ने सताया है/ तंग किया है और तुम कुछ समझ नहीं पा रहे हो, चिंतित अथवा तनावग्रस्त महसूस कर रहे हो अथवा इस प्रकार की परेशानी अनुभव करने वाले किसी लड़का/लड़की को जानते हो तो तुम १०९८ (दस नौ आठ) पर संपर्क करो। ऐसा करने से तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों/सहेलियों का जीवन बदल सकता है।

चाइल्ड लाईन १०९८ (दस नौ आठ) : यह २४ घंटे टोल फ्री राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है। महिला एवं बालविकास आपातकालीन मंत्रालय द्वारा पीड़ित लड़कों/लड़कियों के लिए यह उपक्रम चाइल्ड लाईन फाउंडेशन ने प्रारंभ किया है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

- विद्यार्थियों को उनके आयुगुट के अनुसार अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श पहचानने के लिए शारीरिक एवं भावनिक दृष्टि से मार्गदर्शन करें।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।धृ।।

भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।१।।

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ।।२।।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.
हिंदी बालभारती इयत्ता सहावी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

(नि:शुल्क वितरण के लिए)